हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

जनवरी, 2002 | वर्ष 1 | अंक 11

–: सम्पादक :–
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

– सहायक –
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 787250
फैक्स : 787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिस सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिस सहाफत व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित किया।

हमारा लक्ष्य

अल्लाह तआ़ला ने ईमान वालों के लिए प्रतिष्ठा सम्मान तथा प्रभुत्व का वचन दिया है परन्तु इस प्रतिबन्ध के साथ कि उनमें ईमान के गुण हों। उन का लक्ष्य केवल अल्लाह को राज़ी करना हो। सम्मान तथा सत्ता प्राप्त करना न हो ना ही उस के लिए प्रयास हो। सम्मान तथा सत्ता परिणाम है लक्ष्य नहीं पुरस्कार है उद्देश्य नहीं।

(अबुल हसन अ़ली हसनी नदवी)

विषय एक नज़र में

• सब ठाठ पड़ा रह जायेगा	सम्पादकीय.....3
• कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०) 5
• प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना सय्यद अ़ब्दुल ह़यी अ़ली ह़सनी 6
• ज़मीन पर फ़साद न फैलाओ	मौलाना अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी (रह०)..... 7
• परमाणु हथ्यार	सईद ताबिश 10
• पश्चिमी सभ्यता	मुहम्मदुल हसनी 11
• आदर्श शासक	डा० मु० इज्तिबा नदवी 13
• फ़त्हे मक्का	माहिसल क़ादिरी 17
• सरवरे काइनात	मु० सासी ह़सनी 19
• जिन्नात का परिचय	अबू मर्गूब 20
• उर्दू साहित्य के कुछ शिष्टाचारिक शब्दों का परिचय	इदारा 21
• आपकी समस्याएं और उनका हल	मु० सरवर फ़ारूक़ी 23
• इस्लाम में ह़लाल कमाई	मौ० अब्दुल्लाह अब्बास नदवी 24
• प्रेम सन्देशा	इदारा 25
• औलाद के लिए दुआ़	ख़ैरुन्निसा बेहतर 25
• कुर्आन में सौ़र्य जगत	मौ० अब्दुल करीम पारीख 25
• स्वतंत्रता आन्दोलन में भारतीय मुसलमनों की भूमिका	माखूज़ 32
• आओ उर्दू सीखें	इदारा 38
• स्वास्थ्य सलाह	डॉ०आरिफीन 39
• अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	मुईद अशरफ़ नदवी..... 40

□□□

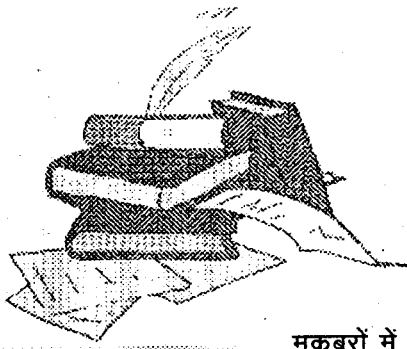

सब ठाठ पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा।

डा० हारून रशीद सिद्दीकी

मक़बरों में देखते हैं अपनी इन आंखों से रोज़। यह ब्रादर यह पिदर यह ख़्वेश यह फ़रज़न्द हैं।
फिर भी रअनाई से ठोकर मार कर चलते हैं यार। सूझता इतना नहीं सब ख़ाक के पैवन्द हैं।।

मौत का बाज़ार गर्म है। इस मिट जाने वाले शरीर को त्याग कर लोग क़बरिस्तानों में बसते जा रहे हैं। आज भाई नहीं रहा, कल बाप चल बसा, प्रिय सम्बन्धी का निधन हो गया। यह सब देखकर चाहिए तो यह था कि अपना जाना याद आता, अपने आचरण सुधरते, पर ऐसा नहीं हुआ, यह सब देखने के पश्चात् भी आंखें नहीं खुलीं, इतराना नहीं गया, लोगों को सताना नहीं छूटा।

आप याद कीजिए कितने जनाज़ों में आप शरीक हुए? अगर आप की आयु ४० से ऊपर है तो शायद गिन भी न पाएं। ध्यान दीजिए जब आप छोटे थे तो आप के घर में पड़ोस के घर में, महल्ले में, गांव में कितने लोग थे और अब उनमें से कितने नहीं है? आप कह सकते हैं कि उनमें से ३० प्रतिशत नहीं हैं परन्तु ६० प्रतिशत बढ़े भी तो हैं। आप ने सत्य कहा लेकिन मैं तो आप का ध्यान इस ओर लाना चाहता हूं कि जो आया है वह जाने के लिए ही तो आया है अतः यह चार दिन का जीवन अगर सुख का भी मिला तो किस काम का अन्ततः इसको समाप्त होना है । फिर यह शरीर मिट्टी में गाड़ा जाएगा, या नदी में बहाया जायगा, या आग में जलाया जाएगा या इस को पशु पक्षी खा जाएंगे।

यह सुन्दर तथा स्वस्थ बच्चे बच्चियां, पोते, पोतियां, कितने अच्छे लगते हैं। यह जवान भाई बहन, बेटे बेटियां, आज्ञाकारी पत्नी इन सब को देखकर कितना आनन्द मिलता है। यह माता पिता बूढ़े आजा, आजी को देखकर कितना सुख मिलता है? परन्तु एक दिन यह सब छूट जाएंगे और नहीं मालूम कि इन का साथ कब और किस परिस्थिति में छूटेगा हम जवानी में चल देंगे और इन का शोक हरना हमारे वश में न होगा। या फिर बूढ़े हो कर इन को छोड़ना होगा। या हम बूढ़े होंगे और हमारे बच्चे जवानी या बचपन ही में हम को छोड़ कर चल देंगे।

दंगों में लोग किस प्रकार गये, बीमारियों में लोग किस हाल में मरे, लड़ाइयों में लोग किस प्रकार जूझे, अक्सी डन्टों में लोग कैसे अचानक चल दिये। फिर दंगे हों या न हों, लड़ाइयां हों या न हों, अक्सीडन्ट हों या न हों, सांप काटे या छोड़ दे। जाना हर दशा में है जो आया है उसको जाना है। मरना एक मान्यता प्राप्त सत्य है, लेकिन मर कर कहां जाना है यह एक भेद है, जिसको सांसारिक बुद्धि न जान सकी न जान सकेगी। साइंस ने बड़ी उन्नति की और निरंतर उन्नति शील है । मनुष्य समुद्र की छाती पर दौड़ रहा है। समुद्र की गहराई में चल रहा है, चन्द्रमा पर उतर चुका है। नलकी द्वारा मां की कोख में बच्चे का बीज पहुंचा लेता है। क्लोनिंग में सफलता प्राप्त कर ली है। जटिल से जटिल रोगों का समाधान कर लेता है। मस्तिष्क का आप्रेशन कर लेतो है, हृदय तथा गुर्दे बदल लेता है, परन्तु न मौत को समझ सका न उसे रोक सका न यह बता सका कि मरने के पश्चात् प्राणों का क्या हुआ।

कुछ लोगों ने समझा कि जब तक मनुष्य जीवित है, मर गया समाप्त हो गया । शरीर मिट्टी में मिल गया और प्राण हवा में, उसके पश्चात् कुछ नहीं । ऐसे ही लोगों ने कहा :–

बाबर ब ऐश कोश कि आलम दुबारा नेस्त
(बाबर : आनन्द प्राप्ति में प्रयास कर कि यह दुन्या दोबारा न मिलेगी)

यक़ीन से नहीं कह सकता कि यह कथन बाबर का है या किसी और का लेकिन प्रसिद्ध इसी प्रकार है। अब जिसको बाबरसे इस कथन का सम्बन्ध अच्छा न लगे वह बाबर के स्थानपर ब्रादर पढ़ ले परन्तु पश्चिमी देश और उनके अन्ध अनुगामी यही कह रहे हैं और इसी पर चल रहे हैं। सबसे अच्छे खान पान, और सब से ऊंचे आवास, तथा सुन्दरियों से भोग विलास की प्राप्ति के पीछे पागल हो रहे हैं। आज

यूरोप अमरीका तथा रूस में जो मानसिक उपद्रव मचा हुआ है उस से उकता कर कितने नव युवक और नवयुवतियां हिप्पी इज़्म की ओर भाग रही हैं। हृदय शान्ति का अभाव हो चुका है। हर व्यक्ति चाहे अपनी श्वेत चमड़ी या क्रीम पाउडर से सुन्दर लग रहा हो, अच्छे से अच्छा खा कर स्वस्थ डकारें लेरहा हो, गगन चुम्बी एयर कन्डीशन भवनों में रह रहा हो, मस्त म्यूज़िक के बीच सुन्दरियों के नृत्य गान से आनन्द ले रहा हो तथा उनकी संगत के मज़े उड़ा रहा हो परन्तु यदि वह कुछ भी बुद्धि रखता है तो भीतर से वह अवश्य अशान्ति है, और इसी अशान्ति को भुलाने के लिए वह मदिरा या दूसरी मादक पदार्थों का सहारा ढूंढता है।

यह बात आज से नहीं आदि से चली आ रही है। कुछ लोगों ने सोचा और फिर सोचा, बारम्बार सोचा अन्ततः उन्होंने संसार त्याग का निर्णय लिया। खान पान छोड़ दिया। शरीर को कष्ट दिया। जंगलों में जा बसे, गुफाओं में जा बैठे, कांटों पर सोए, पत्थरों पर विश्राम किया उनमें से कुछ संसार से ऐसे ऊबे थे कि उनको उसी त्याग तथा तपस्या में शान्ति मिली, उन्होंने जंगल के फल फलारी पर जीवन बिता दिया उनका सम्मान करने वाले तो उनको मिले परन्तु उनका अनुसरण करने वाले आटे में नमक के बराबर भी न मिल सके। कुछ लोगों ने बड़ी तपस्याओं के पश्चात् यह निष्कर्ष निकाला कि प्राकृति के विरुद्ध शरीर को कष्ट देना कोई लाभ नहीं रखता फिर वह नियमित खान पान करने लगे। कुछ लोगों की सोच अच्छी थी उनका यह मत बना कि यह संसार, यह सूर्य चन्द्रमा, यह नक्षत्र, यह पहाड़, नदियां तथा वन, यह धर्ती और उसके अंतरिक कोष तथा उसके ऊपर रहने वाले, मानव तथा करोड़ों प्रकार के जीव जन्तु इन सब का कोई पैदा करनेवाला अवश्य है। इनका कोई शक्तिवान प्रबन्धक अवश्य है। फिर उन्होंने उस सर्वशक्तिमान तथा प्रबन्धक के विषय में अटकलें लगाई इन्हीं अटकलों को लोगों ने ईशदर्शन का नाम दे दिया। जब कि वह ईश्वर तक पहुंच न सके।

इसी जगत में कुछ लोगों ने आवाज लगाई कि लोगो सुनो इस ब्रह्माण्ड का एक ब्रह्मा है वही तुम्हारा पूज्य है। मैं उसका प्रेषक तथा उसका सन्देष्टा हूं। मुझे उसका सन्देष्टा स्वीकार करो मैं उस ब्रह्मा (खालिक़) के विषय में जो ज्ञान दे रहा हूं उसे मान लो । मुझ से उसका सन्देश लेकर उसका अनुसरण करो तो मोक्ष प्राप्त करोगो। शुद्ध आत्मा वाले लोग उनकी ओर दौड़ पड़े उन पर विश्वास लाए। उनके पैदा करने वाले पर विश्वास लाए और ईश्वर का सन्देश (अल्लाह का पैग़ाम) लिया, उस का अध्यापन किया तो उनकी आंखें खुल गईं। उनको उसमें सम्पूर्ण शानित मिली। फिर उन्होंने उस सन्देश के अनुकूल जीवन बिताया और सफल हो गये। परन्तु जिन लोगों का मन संसार के मोह में फंस गया था, जो भौतिक जीवन में खो गये थे, जिन्होंने परिणाम से आंखें मूंद ली थीं। उन्होंने यही नहीं कि उन सन्देष्टाओं की सुनी अनसुनी कर दी अपितु खुल कर उनका विरोध भी किया परन्तु न तो उनको सत्यमार्ग से डिगा सके न सत्य कार्य से रोक सके बल्कि उन्होंने अपना ही सब कुछ बिगाड़ लिया।

धार्मिक इतिहास के अध्यापन से पता चलता है कि सन्देष्टाओं का यह क्रम हर काल में और हर देश में रहा। निःसन्देह भारत में भी इन सन्देष्टाओं (ईश दूतों) का आगमन हुआ और ऐसा लगता है कि हिन्दू धर्म में जो अवतारों का वर्णन है यह सन्देष्टा ही थे। जब उनके पश्चात् लम्बा काल बीता तो उनके अनुयाइयों ने उनको अवतार कह दिया तथा उनकी शिक्षाओं को भुला दिया या बदल डाला।

हम को यह जान कर आत्मसन्तोष मिला कि सन्देष्टाओं के लाए हुए ईश सन्देश (इलाही पैग़ाम) में ईश सन्देश को बदल डालने वालों का भी वर्णन है और सत्य विरोधियों का भी।

अल्लाह के रसूल (सन्देष्टा) हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के पश्चात् एक लम्बे काल के बाद सातवीं शताब्दी के आरम्भ में अरब देश के मक्का नगर से एक आवाज़ फिर उठी : लोगों मैं अल्लाह का रसूल (सन्देष्टा) हूं। मैं समस्त संसार के लिए भेजा गया हूं। मैं परमात्मा का अन्तिम सन्देष्टा हूं। अब इस संसार के अन्त तक कोई अन्य सन्देष्टा न आएगा। अब मोक्ष प्राप्ति के लिए मेरा अनुसरण अनिवार्य है। मुझे अल्लाह का रसूल मानो और मैं अल्लाह ही के आदेश से बताता हूं कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई अन्य पूज्य नहीं है। उस अल्लाह (परमात्मा) पर ईमान लाओ और सफलता प्राप्त करो।

यह आवाज़ मुहम्म बिन अ़ब्दुल्लाह की थी उनपर अल्लाह की रहमतें हों, उन पर अल्लाह की सलामतियां उतरें। बहुत से लोग इस आवाज़ पर उनकी ओर झुक पड़े उनको अल्लाह का रसूल (परमात्मा का सन्देश वाहक) मान लिया। उनके निर्देशानुसार अल्लाह पर ईमान लाए। उनसे अल्लाह (ईश्वर) के विषय में सत्य ज्ञान प्राप्त किया। उनसे अल्लाह का सन्देश पाकर सन्तुष्ट हो गये। उनका अनुसरण कर के अपना जीवन सुधार लिया।

अल्लाह के अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पिछले सभी सन्देष्टाओं की बात दुहराई कि यह जीवन अस्थाई है। परलोक का जीवन स्थाई है। परलोक के जीवन के दो प्रकार हैं। या सदैव का सुख, बड़ा सूख और यह सुख जन्नत में होगा। या सदैव का दुख, महा दुख, और यह दुख जहन्नम में होगा। परलोक का सुख या दुख निर्भर है सांसारिक जीवन के कर्मों पर जिसका जीवन अपने समय के सन्देष्टा की शिक्षाओं के अनुकूल होगा उसके लिए वहां न समाप्त होने वाला उत्तम कोटि का सुख होगा और जिस का जीवन अपने सन्देष्टा के विरुद्ध बीता होगा उसको जहन्नम की आग में जलना होगा जिस व्यक्ति तक किसी सन्देष्टा की बात नहीं पहुंची आशा है कि परलोक में सका हिसाब व किताब उसकी बुद्धि के अनुसार होगा।

हमने तो हज़रत मुहम्मद को अल्लाह का अन्तिम सन्देष्टा (रसूल) मान लिया और उन ही के अनुसरण में जीवन बिताने का निर्णय लिया और उन तमाम लोगों को जो उनको अल्लाह का अन्तिम सन्देष्टा नहीं मानते निमंत्रण देता हूं कि वह यदि परलोक के स्थायी दुख से बच कर वहां का स्थायी सुख चाहते हैं तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अल्लाह का रसूल मानने पर शीघ्र चिन्तन करें। क्या मालूम कि कब समय समाप्त हो जाए और मां, बाप, भाई, बहन, बीवी, बच्चे, माल व दौलत, घर, ज़मीन छोड़ कर चल देना पड़े।

"सब ठाठ पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा।"

क़ुर्आन की शिक्षा

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी

मां बाप के साथ बर्ताव

व बिल्वालिदैनि इहसाना० (४:३६) और मां बाप के साथ नेकी करो।

अल्लाह का आदेश है कि मां बाप का सम्मान उनकी सेवा तथा उनका आज्ञापालन किया जाए। उनकी जिस बात के मानने में अल्लाह की ना खुशी हो उसको छोड़कर उनकी हर बात मानना आवश्यक है। मां और बाप में मां का पद ऊंचा है। एक आदमी ने अल्लाह के रसूल सल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि सबसे अच्छे व्यवहार का अधिकारी कौन है? उत्तर मिला तेरी मां। पूछा फिर कौन ? फ़रमाया तेरी मां । उसने कहा फिर कौन ? फ़रमाया तेरी मां। चौथी बार पूछने पर फ़रमाया तेरा बाप।

क़ुर्आन में है कि मां बाप के साथ भलाई करो। उनमें से एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो (किसी बात पर) उनको उंह भी न कहो। न उनपर ख़फ़ा हो। उनसे अदब से बोलो। उनका आज्ञापालन करो और (उनके लिए दुआ में) कहो कि ऐ पालन हार। तू उन पर कृपा कर जिस प्रकार बचपन में उन्होंने मुझे पाला। (१७:२३,२४)

एक व्यक्ति ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि औलाद पर मां बाप का क्या हक़ है? फ़रमाया वह दोनों तेरे जन्नत और जहन्नम हैं अर्थात उनकी सेवा में जन्नत और उनकी अवज्ञा में जहन्नम है।

फ़रमाया कि जो आदमी अपने मां, बाप को पाए और उनकी सेवा से जन्नत न प्राप्त कर सके वह अल्लाह की रहमत (कृपा) से दूर है।

मां बाप अगर दीन पर चलते हैं तो उनका अनुसरण करो। यदि ग़लती पर हैं तो उनका सम्मान करते हुए अदब से उनको सत्य मार्ग की ओर बुलाओ। अल्लाह से मां बाप के लिए क्षमा मांगते रहना चाहिए।

औलाद (सन्तान) के साथ बर्ताव

या ऐयुहल्लजीन आमनू क़ू अन्फ़ुसकुम व अहलीकुम नारा ० (६६:६) ऐ ईमान वालो अपने को और अपने घर वालों को आग से बचाओ।

जिस प्रकार औलाद (सन्तान) पर मां बाप का हक़ है उसी प्रकार मां बाप का औलाद पर भी हक़ है। इस आयत में अल्लाह ने आदेश दिया है कि अपने घर वालों को जहन्नम की आग से बचाओ। अर्थात मां बाप का कर्तव्य है कि वह उनको ऐसे तमाम कामों से रोकें जिस से दीन और दुन्या बरबाद हो। सन्तान की अच्छी शिक्षा दीक्षा का प्रबन्ध करना चाहिए। उनसे सच्चा प्रेम उन के लिए धन, उच्च खान पान, कपड़े, आभूषण तथा बड़े–बड़े भवन प्रस्तुत करने में नहीं है। (अपितु उनसे सच्ची महब्बत यह है कि उनकी अच्छी शिक्षा दीक्षा की जाए।) सच्चा प्रेम तो इसी में है कि हम अपने घर वालों अर्थात बीवी बच्चों को अल्लाह के प्रकोप से बचाएं और उनको जहन्नम का ईधन न बनने दें।

अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन में फ़रमाया कि नेक बन्दे जिस प्रकार अपने माता पिता के लिए अल्लाह से बख़्शिश (क्षमा) मांगते हैं उसी प्रकार वह अपनी औलाद के लिए भी (भलाई की) दुआ करते हैं व अस्लिह ली फ़ी जर्रीयाती० (४६:१५) और (ऐ अल्लाह) मेरे लिए मेरी औलाद को नेक कर दो।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि एक बाप का अपने बेटे पर अदब (शिष्टाचार) सिखाने से बढ़कर कोई इहसान (उपकार) नहीं।

वत्तबिअ़ सबील मन अनाब इलय्य० (लुक़मान १५)

भले आदमियों की संगत आदमी को भला बना देती है। इसी कारण अल्लाह ने आदेश दिया कि जो लोग मेरी ओर झुके हुए हैं, तुम भी उनके पीछे चलो और उनका मार्ग अपनाओ।

भले लोगों से मिलना भी उपकार है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उपदेश में कहा कि जो व्यक्ति किसी भले आदमी से मिलने जाता है तो एक फ़रिश्ता पुकारता है कि तू भला है, तेरा चलना शुभ है, तूने अपना घर जन्नत में बना लिया।

हज़रत उमर (रज़ि०) मदीना मुनव्वरा से कुछ दूर रहते थे, इसलिए प्रतिदिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित न हो सकते थे। अतः यह करते थे कि एक दिन स्वयं आते थे और दूसरे दिन अपने इस्लामी भाई हज़रत अ़त्बान (रज़ि०) को भेजते थे ताकि उनके द्वारा हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व. सल्लम की बातें ज्ञात हो जाएं।

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौलाना अब्दुलहयी हसनी

२०– हज़रत अनस बिन मलिक रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सलम ने फ़रमाया जो शख्स केवल अल्ला की उपासना किसी को साझी बनाए बिना करता रहा, पाबन्दी से नमाज़ अदा करता रहा है माल की ज़कात देता रहा उसका देहांत इस हाल में होगा कि अल्लाह उस से राज़ी होगा। (इब्ने माजा)

२१– हज़रत अबु हरैरा रज़ि० से रिवायात है (अर्थात बयान किया गया है) कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो व्यक्ति वह इल्म (विद्या) जिस से अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त की जाती है उसको दुन्या के किसी फाइदे के लिए सीखता है वह क़ियामत के दिन जन्नत की बास भी न पाएगा।

(अबू दाऊद)

नोट : अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने वाला इल्म, दीन का इल्म है। दीन का इल्म सिर्फ अल्लाह को राज़ी करने के लिए प्राप्त करना चाहिए दुन्या कमाने के लिए नहीं।

२२. हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि अल्लाह तआला का ईर्शाद है कि मुझे अपने साथ साझी दार या साझीदरी की आवश्यकता नहीं। जो व्यक्ति कोई उपासना आदि का कार्य करे जिस में मेरे साथ किसी अन्य को भी साझी करले (अर्थात उस उपासना से उसका यह भी उद्देश्य हो कि लोग उसका सम्मान करें आदि) तो मैं उसको और उस के शिर्क दोनों को छोड़ देता हूं। (मुस्लिम)

२३. हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अन्तिम काल में कुछ ऐसे (मक्कार) लोग पैदा होंगे जो दीन की आड़ में दुन्या का शिकार करेंगे। वह लोगों पर अपनी दरवेशी तथा भक्त प्रकट करने के लिए बनावटी वस्त्र पहनेगें। उनकी बोली मधु से अधिक मीठी होगी परन्तु दिल भेड़ियों जैसे होंगे (उनके विषय में) अल्लाह ने बताया कि यह लोग (मेरे ढील देने और तत्काल पकड़ न करने से धोखा खा रहे हैं) या (मुझ से निडर हो कर) मेरे मुकाबले में (दिखावे का साहस कर रहे हैं) मुझे अपनी क़सम है कि मैं इन मक्कारों पर इन ही में से एक ऐसा फितना खड़ा करूंगा जो इन में के बुद्धिमानों को भी हैरान व परेशान बना कर छोड़ देगा।

(तिर्मिज़ी)

२४. हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमया कि अल्लाह तआ़ला उस बन्दे पर रहम फ़रमाए जिसने मेरी बात सुनी और उसे (बिना घटाए बढ़ाए) दूसरों तक पहुंचा दिया। तीन बातें ऐसी है कि (उन के होते हुए) मुसलमानों का दिल धोखा नहीं खाता। हर काम केवल अल्लाह को प्रसन्न करने के लिए किया जाए। धर्म नेताओं के साथ भलाई का व्योहार किया जाए। ईमान वालों की संस्था से अलग न हो। कारण यह कि उनकी दुआयें उन लोगों को भी अपने दामन में लेती हैं जो उनके पीछे चलने वाले होते हैं (अर्थात उनके साथ होते हैं)

जिस व्यक्ति का उद्देश्य (केवल) दुन्या चाहना हो अल्लाह तआ़ला उस पर निर्धनता तथा भुखमरी का भय नियुक्त कर देगा और उस की सम्पत्ति को बिखेर देगा परन्तु मिलेगा उसे उतना ही। जितना मुक़द्दर हो चुका है और जिस का उद्देश्य और नियत आख़िरत (परलोक) का भला चाहना होगा अल्लाह उसके दिल को ग़नी (सन्तुष्ट) कर देगा और उसकी सम्पत्ति का संरक्षण करेगा और दुन्या झुक कर उसके कदमों पर गिरेगी। (मुसनदे अहमद)

२५. हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु, से रिवायत है कि अल्लाह कु रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : अल्लाह न जिस्मों (शरीरों) को देख़ता है न रूपों को बल्कि उस की दृष्टि तुम्हारे दिलों पर रहती है। (मुस्लिम) (अतः दिल में अच्छी नीयत और शुद्ध कल्पना होना चाहिए।)

२६. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है कि समस्त मानवी कर्मो की निर्भरता नीयतों पर है। हर व्यक्ति को उसकी नीयत के अनुसार मिलेगा। जो अल्लाह और उसके रसूल की रज़ा के लिए हिजरत करेगा तो उसकी हिजरत अल्लाह और उसके रसूल के लिए होगी (अर्थात उसको सवाब मिलेगा) और जो दुन्या (पाने) के लिए, या किसी औरत से निकाह के लिए (हिजरत) करेगा तो उसकी हिज़रत उसी के लिए होगी जिस के लिये देश छोड़ा। (बुख़ारी व मुस्लिम)

ज़मीन पर फ़साद न फैलाओ

मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी (रह०)

बिस्मिल्लाह–हिर–रहमानिर्रहीम

(वला तुफ़्सिदू फ़िल अर्ज़ि बअ़द इस्लाहिहा वदअूहु ख़ौफ़ व तमअन)

मेरे भाइयो, मित्रों एवं प्रियजनो !

आज मैं ने आपके समक्ष अपना अभिवचन "बिस्मिल्लाह" से आरम्भ किया है। सब लोग अवगत हैं बिस्मिल्लाह क्या है कब पढ़ी जाती है, परन्तु बहुत कम लोगों ने चिन्तन किया कि बिस्मिल्लाह के अन्दर क्या संदेश है। जब कोई महत्वपूर्ण कार्य आरम्भ करना होता है तो हुजूर सल्लाहु अ़लैहि व सल्लम, इस्लाम धर्म के पैग़म्बर, उनके सहयोगी, धर्म गुरू तथा सम्मानित शिक्षाचार्यों सब की परम्परा यही थी कि बिस्मिल्लाह से कार्य प्रारम्भ करते एवं यहां भारत में भी आप देखें मौलाना आज़ाद हों अथवा और कोई देश के बड़े सेवक एवं उसको स्वतंत्र कराने वाले भी बिस्मिल्लाह पढ़ने के कितने आदी (अभ्यस्त) थे। यहां तक कि भोजन गृहण करने हेतु भी यही सुन्नत है कि पहले बिस्मिल्लाह की जाय एवं तत्पश्चात् भोजन आरम्भ किया जाय तथा कोई बड़ा अथवा छोटा कार्य करना हो तो बिस्मिल्लाह कह कर आरम्भ किया जाये। परन्तु आप यह विचार करें कि जब अल्लाह का नाम लेकर कार्य प्रारम्भ किया जा रहा हो तो अल्लाह के नाम बहुत हैं "लिल्लाहिल अस्माउलहुसना"। क़ुरान शरीफ़ में स्वयं आता है कि अल्लाह के अत्यधिक नाम हैं। वह जब्बार (अर्थात बल पूर्वक आदेशों का पालन कराने में समर्थ) भी है, क़हार (अर्थात् प्रकोप ढाने में समर्थ) भी है, शक्ति वाला शक्तिवान भी है, बलवान भी है, क़ादिर (समर्थ) भी है तथा वह बड़ा तेजस्वी है, बड़े गुण वाला है, तथा अत्यन्त कृपालु है। सब कुछ है परन्तु क्यों हमें यह शिक्षा दी गई कि जब हम कार्य आरम्भ करें तो अल्लाह के नाम से आरम्भ करें एवं उसके गुणों में से यह दो गुण "अर्रहमान–अर्रहीम" को विशेष रूप से याद रखें कि हम यह कार्य आरम्भ कर रहे हैं उस खुदा के नाम से जो बहुत ही दयावान एवं अत्यन्त कृपालु है। यहां क्या कुछ नहीं कहा जा सकता था कि हम यह कार्य आरम्भ कर रहे हैं अल्लाह के नाम से जो बड़ा शक्तिशाली एवं बलवान है, बड़ा समर्थ है, बड़े राज्य वाला है, बड़ी सामर्थ्य वाला है परन्तु यह "अर्रहमान–अर्रहीम" के गुण इसमें इस लिए रखे गये है ताकि हमारा जीवन इसके सांचे में ढले और हम यह समझें कि खुदा जिसने हम को पैदा किया और जो हमें जीवित रखे हुए हैं एवं जो एक साथ जीवन व्यतीत करने का अवसर प्रदान कर रहा है, एक देश में हमें बसाया है तथा एक स्थान में हमें पैदा किया है, वही खिलाता वही पिलाता है, वह खुद जो बड़ी दया वाला, बड़ा कृपालु तथा बड़ी ही सहानुभूति वाला है तो वह इससे हमारे जीवन की दिशा निर्धारित करता है कि हमारे जीवन की दिशा रहमान की ओर हो। हम समझें कि हम जिस खुदा के बनाये हुये हैं, जिस खुदा के बन्दे हैं, जो खुदा हमें खिला रहा है, जिला रहा है, हमारी रक्षा कर रहा है और फिर उसने हमें एक दूसरे के साथ बसाया है वह "अर्रहमान–अर्रहीम" है, बड़ी अनुकम्पा वाला, अत्यन्त कृपालु है। हदीस शरीफ में आया है कि अल्लाह–तआला के गुणों का अनुसरण करो तथा अपने भीतर अल्लाह तआ़ला के वह गुण जो बन्दे गृहण कर सकते हैं और अपने चरित्र बना सकते हैं उस चरित्र में अल्लाह तबारक व तआला के इन गुणों को स्थान दिया गया तथा इसी प्रकार सूरह फ़ातिहा–अलहमदु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन में क्या कुछ नहीं कहा जा सकता था, यह वह बातें हैं, जो अत्यधिक कान में पड़ती है, हर समय सुनाई देती हैं, अज़ान के अर्थ पर चिन्तन करने वाले कितने हैं, किसी बात का ज्ञान होना, सरल हो जाना, नियंत्रण में आ जाना, हर समय सुनना और हर समय उसे देखना, वह एक रुकावट बन जाता है, एक पर्दा बन जाता है। आप ध्यान करें कि अल्हमदु लिल्लाहि अर्थात् समस्त प्रसंशा अल्लाह के लिए है, वह रब्बुल आलमीन हैं, समस्त संसारों का पालनहार, एक संसार का नहीं, एक देश का नहीं, एक समाज का नहीं अथवा एक जाति का नहीं, एक वर्ग, एक समुदाय का नहीं, वह तो रब्बुल आलमीन है, समस्त संसारों का, समस्त दुन्याओं का पालनहार है, हमारी दुन्या, सितारों की दुन्या, आसमानों की दुन्या और फिर कहां कहां की दुन्या, कितने महाद्वीपों, कितने देश, यह सब अल्लाह–तआला की अनुकम्पा की छाया के नीचे हैं, अतएव हमें यह शिक्षा दी जाती है कि हम अनुकम्पा को, एक दूसरे को देखकर उसको अपना भाई समझने को, उसकी आवश्यकता को तथा उसके दुख–दर्द में सहभागी होने को अपना कर्तव्य समझें और यह समझें कि यह खुदा की शान तथा उसके गुण हैं। हमको उनको अपना आदर्श बनाना चाहिए। अल्लाह तआला फ़रमाता है "वाला तुफ़्सिदू फ़िल अर्ज़ि बअ़द इस्लाहिहा" ज़मीन में बिगाड़ न पैदा करो, इसके बनाने के उपरान्त किसी को अपना घर बिगड़ते हुए देखना

पसंद नहीं आता कि कोई उसके बनाये हुए घर को बिगाड़ दे। एक साधारण सी बात है कि यदि बच्चा भी ज़रा सा लिखे और कोई उसको मिटा देना चाहे, फाड़ देना चाहे तो बच्चे को क्रोध भी आयेगा और ऐसे ही कोई ईंट रख दे, कोई साधारण सा कार्य करे चाहे वह यात्रा में हो या घर पर हो और कोई उससे हस्तक्षेप करे तथा उसकी बनाई हुए वस्तु को बिगाड़े तो उसको सहन नहीं होगा तो फिर वह खुदा जिसने इस विश्व की सृष्टि की एवं इस शान से सृष्टि की तथा कितनी विशाल सृष्टि की और कितनी लम्बी चौड़ी एवं कितनी दीर्घआयु वाली सृष्टि की तो उसके बिगाड़ने को खुदा कैसे पसंद कर सकता है। यह संसार उसका बनाया हुआ है, वही उसको चला रहा है, वही इसका स्वामी है वह अपने घर को बिगाड़ने की अनुमति कैसे दे सकता है। आप देखिये हमारा आपका घर ही क्या, मैं तो यहां तक कहता हूं कि यहां के बड़े–बड़े जो केन्द्रीय शासक हैं एवं बड़े–बड़े शासकों के महल हैं, यदि आप उनकी ज़रा सी ईंट तोड़ना चाहें, यदि उसमें वृक्ष लगा हुआ है उसको काटना चाहें तो कोई उसको सहन नहीं करेगा। अल्लाह तआला जो सर्वाधिक ग़ैरत करने वाला है, जो सर्वाधिक समर्थ, सर्वाधिक सम्मान वाला है, वह अपने घर के बिगाड़ को कैसे पसंद करेगा परन्तु आज क्या हो रहा है। आज हम उसी घर के निवासी अपने हाथों इस घर को नष्ट कर रहे हैं एवं आपको यह ज्ञात नहीं रह सकता, कोई घर यदि शीशे का बनाया हुआ है, लोहे का निर्मित है तथा उसकी सुरक्षा हेतु हज़ार उपाये किये जायें, इसके अतिरिक्त सुरक्षा के जो अन्य उपाये हैं वह सब किये जायें कि हाथ लगने से मनुष्य का हथ कट जाये एवम् उसमें और अधिकता करने से प्राण चले जायें तब भी कोई घर सुरक्षित नहीं रह सकता। आपको विदित है कि जब लोग उठते थे, सेना निकलती थी तो फिर देश के देश उलट पलट जाते थे। इसमें न राजा का घर बचता था न किसी बड़े धनी का घर बचता था, न किसी विद्वान अथवा ज्ञानी का घर बचता था तो हमें समझना चाहिए कि यह सम्पूर्ण देश हमारा घर है। हम सब इसके निवासी हैं। हम अपना घर सुरक्षित रख ही नहीं सकते चाहे इसके बाहर सीसे की दीवार बना दें अथवा लोहे का विराट घेरा बना दें, इसको रोकने हेतु जो उपाय होते हैं वह सब करें तब भी जब वातावरण दूष्टित होगा तो इस घर पर भी प्रभाव पड़ेगा। जब कोई भूकम्प आयेगा तो इस घर पर भी प्रभाव पड़ेगा, जब ज़ोर की वर्षा होगी तो वह घर भी प्रभावित होगा और जब लोगों के स्वभाव दोषपूर्ण होंगे और लोग किसी की मर्यादा को मर्यादा नहीं समझेंगे, प्राण को प्राण नहीं समझेंगे तथा यह समझेंगे कि बस हम सुरक्षित रहें, हमारे घर के बच्चे, घर वाले सुरक्षित रहें शेष जो कुछ होता है हो जाये तो उनका घर भी सुरक्षित नहीं रह सकता। विश्व का इतिहास यह बताता है जो यूनिवर्सल हिस्ट्री है, आप गिब्बन की पुस्तक डेकलाइन एण्ड फाल आफ रोमन इम्पाइर के विषय में पढ़िये, अध्ययन कीजिए, देखिये कि अत्याचार कैसे आरम्भ हुआ था उससे कितनी बड़ी रोमेतुल कुबरा जो विश्व का सबसे बड़ा राज्य था जिसका रोमन ला आज तक प्रसिद्ध है तथा उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया जाता है एवं जिसकी सभ्यता आज तक ब्रिटेन, अमेरिका तथा सम्पूर्ण यूरोप पर अपनी छाया किये हुए हैं तो उस देश का यह पतन कैसे प्रारम्भ हुआ। यह इसी प्रकार के अत्याचारों से आरम्भ हुआ। मानव–जाति का कोई मूल्य न था, धन का कोई मूल्य न था, एवं साधारण बात जो उन्होंने लिखी कोई धनी व्यक्ति यदि कोई निमंत्रण देता और यह विचार करता कि यदि मैं चिराग़ जला लूं अथवा शमा जला लूं तो मुझ में तथा एक साधारण व्यक्ति में क्या अन्तर है तो वह प्रकाश कैसे उत्पन्न करता। आज भी यूरोप का जो मूल भोजन है वह हमने इंग्लैण्ड में देखा है। लन्दन में तथा अन्य स्थानों पर रात्रि का भोजन मुख्य भोजन होता एवं उसी में वह समस्त राजनीतिक वार्तायें होती हैं, परामर्श होते हैं तथा योजनायें तैयार होती हैं तथा जो उस समय धनी व्यक्ति अपने यहां भोजन पर आमन्त्रित करता था तो दीप जलाने, शमा जलाने हेतु जेल से कुछ बन्दियों को लाकर, उनके वस्त्रों में आग लगा देता था, उनके वस्त्र जलते रहें और हम खाना खाते रहें। यह फैशन था। इससे अनुमान होता था किसी बड़ाई का तो यह कितना बड़ा अत्याचार था फिर इसके पश्चात् उन्होंने लिखा है कि उनको पशुओं से लड़वाते थे तथा जिस समय पशु उनको गिरा देता एवं मनुष्य के प्राण निकलने लगते तो उसकी सिस्की सुनने हेतु, उनकी कराह सुनने हेतु इस प्रकार रेला होता था कि पुलिस एवं सेना भी नहीं रोक सकती थी।

जब मनुष्य का स्वभाव इतना बिगड़ जाता है, इतना मिट जाता है तो फिर वह देश सुरक्षित नहीं रहता, वह सम्पूर्ण समाज, सम्पूर्ण नस्ल सबकी सब नष्ट कर दी जाती है।

मेरे भाइयो ! यह धर्म जो सब से बड़ी शिक्षा देता वह खुदा की पहचान के उपरान्त उसकी एकताई,उसके पूर्णतया समर्थ होने के पश्चात् यह कि मानव जाति के साथ, अपने भाइयों के साथ, आदम (अ०) की सन्तानों के साथ सद्भावना का व्यवहार करना तथा उनको देखकर प्रसन्न होना, उनकी उन्नति से उनके स्वास्थ से, धन से, उनके सम्पन्न होने से प्रसन्न होना तथा उनकी सहायता करना परन्तु

यह बात चली जाये तो सम्पूर्ण सभ्यता, सम्पूर्ण कलचर तथा जो जितना भी पूर्वजनों से विरासत में मिला है वह सारा का सारा नष्ट कर दिया जाता है। आप इतिहास को देखिये कि विश्व में जितने देश हैं, जितनी सभ्यतायें हैं तथा जितने बड़े बड़े शासन हुए हैं वह सबके सब मिट कर रह गये, उनका नाम रह गया है।

तो सर्वाधिक जो डरने की बात है वह अत्याचार एवं दुर्व्यवहार, अभिमान तथा घमण्ड है और अपने छोटे से उद्देश्य हेतु बड़े बिगाड़ को पसन्द करना है, यह बिगाड़ा सदा चल नही सकता तथा कोई घर ऐसी दशा में सुरक्षित नहीं रह सकता कि दूसरे घर सुरक्षित न हों। यह समझ लीजिए चाहे वह किसी धर्म से सम्बन्ध रखते हों, खुदा का नियम सब के लिए एक है। हमारी सुरक्षा के लिए हम पर एक शामियाना तना हो, वह शामियाना प्रेम का हो, वह शामियाना शान्ति का हो, वह शामियाना विश्वास का हो, एक दूसरे से प्रेम का हो अर्थात यहां तक यह बात हो कि मनुष्य अपने माल के सम्बन्ध में यह सोचे कि कोई भय की बात नहीं ऐसा ही होना चाहिए। वही देश सर्वाधिक भाग्यशाली सर्वाधिक समृद्ध, सर्वाधिक बधाई का पात्र है कि जहां के लोग चोरों से भयभीत नहों तथा धोखा देने से न डरते हों, क्रूरता एवं पत्थर– दिल होने से न भयभीत हों एवं यह समझें कि यह सब भाई हैं, एक कुटुम्ब एक परिवार है, यहां किसी भय की आवश्यकता नहीं और विशेषकर हमारा हिन्दुस्तान तो इसका सर्वाधिक पात्र है। यह तो ऋषियों एवं मुनियों का देश है, यह सूफ़ियों का देश है, यह तो खुदा के उन बन्दों का देश है जिन्होंने पवित्र प्रेम का प्रचार किया प्रेम की शिक्षा दी, प्रेम करके दिखाया, प्रेम का सबको पाठ पढ़ाया तथा यह पाठ सिखाया कि प्रत्येक मनुष्य को दूसरे मनुष्यों को देखकर प्रसन्न होना चाहिए कि यह हमारा भाई है, इस देश में तो विशेषरूप से यह बात होनी चाहिए बल्कि अन्य देशों हेतु, इस देश को उदाहरण तथा आदर्श बनना चाहिए था परन्तु खेद है जैसे कवि ने कहा है।

"इस घर को आग लग गई घर के चिराग़ से"

बाहर से कोई लपट आयी नहीं, बाहर से कोई चिंगारी तक नहीं आई। जो कुछ होता है वह यहां के वासियों के द्वारा है। यह धोका एवं यह क्रूरता की बातें, कठोरता की बातें तथा यह साम्प्रदायिक दंगे, यह सब यहीं के लोगों के करतूत हैं। उनका दोष है। बाहर से किसी ने आकर पाठ नहीं पढ़ाया, नहीं सिखाया तथा यदि किसी ने सिखाया तो उसके सिखाने का कोई महत्व नहीं। यहां के जो ऋषियों एवं मुनियों ने जीवन व्यतीत करने का ढंग सिखाया एवं उन्होंने इसमें अपनी सम्पूर्ण आयु खपा दी, प्रेम की शिक्षा दी तथा मानवता की सुरक्षा करना तथा उनकी मर्यादा की सुरक्षा करना एवं स्त्रियों की पवित्रता, प्रतिष्ठा तथा उनकी लाज की सुरक्षा करना एवं महिलाओं के साथ न्याय करना तथा उनका अधिकार उनको प्रदान करना एवं इसी प्रकार से निर्बलों पर दया करना यह सब चीज़े हमारे पूर्वजों ने सिखाई हैं।

आप पुस्तकों में देखिये इतिहास भरा पड़ा है कि उन्होंने किस प्रकार से यहां पर दया एवं प्रेम का पाठ दिया था तथा जहां तक आसमानी मज़हब का सम्बन्ध है खुदाई शिक्षा का समबन्ध है वह तो बिस्मिल्लाह–हिर–रहमानिर्रहीम से ही आरम्भ होता है। ताकि आप शिक्षा लें, कार्य करने वाला शिक्षा लें कि हम जो कार्य प्रारम्भ कर रहे हैं वह उस नाम से आरम्भ कर रहे हैं जो रहमान तथा रहीम है। क़हार कहा जा सकता था, शक्तिवान कहा जा सकता था, जब्बार कहा जा सकता था परन्तु अल्लाह तआला अर्रहमान–अर्रहीम को बिस्मिल्लाह में कियों सम्मिलित किया। बिस्मिल्लाह को इसका अंश क्यों बनाया ताकि हम इस से शिक्षा लें।

अल्लाह तबारक तआला का गुण जो सब पर भारी है और सब को अपने प्रभाव में लिये हुए है एवं जो समस्त संसार की रक्षा करने वाली है वह रहमत का गुण है। इस रहमत के गुण को अपने भीतर उत्पन्न करना चाहिए, दसूरे की मान मर्यादा को अपनी मर्यादा समझना चाहिए। दूसरे की सम्पत्ति को, उसके माल को अपने भाई का माल समझना चाहिए। उसकी रक्षा करना चाहिए एवं कम से कम हिन्दुस्तान को तो इस सम्बन्ध में यह करना चाहिए था कि समस्त देशो में इससे पाठ लिया जाता तथा उसको गुरू माना जाता एवं यहां के लोगों को बुलाया जाता। यूरोप में आमन्त्रित किया जाता, अमेरिका में आमन्त्रित किया जाता कि किसी भारतीय को बुलाओ वह शान्ति का संदेश दे तथा प्रेम करना सिखाये, सर्वाधिक प्रेम एवं समानता इस देश में पाई जाती थी परन्तु दुख की बात है कि यहां इसके विपरीत अपने अस्थायी छोटे–छोटे राजनीतिक उद्देश्यों एवं लाभार्जन हेतु अथवा धनलाभ की प्राप्त हेतु, अथवा प्रतिष्ठा एवं सम्मान पाने हेतु तथा विधान परिषद, विधान सभा आदि में निर्वाचित होने हेतु एक दूसरे से आपस में घृणा करने का पाठ दिया जाता है कि किस समय हमारा काम किस प्रकार निकल सकता है। शत्रुता हो, एक दूसरे से बैर हो, फिर इससे लाभ उठाते हैं एवम् इससे सम्मान प्राप्त करते हैं। यद्यपि यह सम्मान वास्तव में सम्मान नहीं जिससे देश का अनादर हो वह किसी मनुष्य की प्रतिष्ठा नहीं हो सकती चाहे वह कितना बड़ा हो। बस आप कम से कम यह निश्चय कर लें कि हम यह वातावरण उत्पन्न करेंगे एवं इस प्रकार का एक प्रेम का

शामियाना हमारे ऊपर तना हुआ होगा।

आप समस्त हिन्दू–मुसलमान भाई कम से कम इसको एक आदर्श का स्थान बनाइये। एक ऐसा आदर्श स्थान कि जिसको देखने हेतु लोग बाहर से आए एवं वह देखें कि प्रेम का शामियाना तना हुआ है और प्रेम का वातावरण छाया हुआ है तथा यहां पहुंच कर मानवता का मान होता है एवं यह धन सम्मान पूर्णतया अस्थाई एवं सीमित है तथा मान लिया जाये तो देश नहीं बच सकता। सम्पूर्ण इतिहास भरा हुआ है कि जहां पर यह बात हो कि केवल धन की पूजा हो अपना स्वार्थ प्राप्त करना उद्देश्य हो चाहे किसी को कितनी ही क्यों न हानि हो फिर वहां की नहीं रह सकती। वह आत्महत्या करती है। एक दूसरे को नष्ट करती है फिर स्वयं को नष्ट कर लेती है। एक दूसरे को नष्ट करना स्वयं को नष्ट करना है।

बस भाईयो हमारे इस देश को विशेष रूप से इसमें लीडिंग पार्ट अदा करना चाहिए। अगुवाई का जो पद है वह हमें स्वीकार करना चाहिए कि वह विश्व के लिए एक उदाहरण बने परन्तु खेद है कि यहां कामन रायट्स तथा यहां छोटे छोटे एवं घृणित उद्देश्यों हेतु एक दूसरे की प्रतिष्ठा मर्यादा पर हाथ डालना तथा प्राण की चिन्ता न करना, जान लेना एवं उसको नष्ट कर देना यह प्रतिदिन का खेल बन गया है। इससे हमारे देश की निन्दा होती है। हम सब एक दूसरे के भाई हैं और भाइयों के समान रहते हैं। इस समय हिन्दुस्तानियों को सर्वाधिक इस बात की आवश्यकता है यदि यह बात पैदा हो गयी तो यह देश बना रहेगा। यह पार्टियों के बदल जाने से, मंत्रालयों के बदल जाने से, किसी के त्यागपत्र देने से अथवा किसी के चुनाव हार जाने से तथा उसको अपना बहुमत सिद्ध न कर सकने से यह देश नहीं बच सकता। यह देश बचेगा शान्ति से, सद्भाव से, प्रेम से, एक दूसरे पर विश्वास करने से। अब यह कितने दुख की बात है कि मनुष्य एक पढ़े लिखे एवं शिक्षित व्यक्ति का विश्वास न करें। पहले तो यह होता था कि बड़ी से बड़ी मूल्यवान वस्तु बिना किसी भय के छोड़ जाते थे।

मैं स्पष्ट रूप से कहता हूं किसी में भी वह रंग नहीं है जो रंग होना चाहिए। एक दूसरे पर विश्वास करने की तथा एक दूसरे का आदर करने की एवम् उसकी मर्यादा तथा प्रतिष्ठा समझने की। संक्षेप में बात यह है कि प्रेम भाव को आम कीजिए ताकि मनुष्य को देख कर समझे कि यह सज्जन एवं शिक्षित व्यक्ति है। हमारे देशका हम वतन व्यक्ति है। इससे भयभीत होने की आवश्यकता नहीं। सांप एवं बिच्छू का अवसर कब आता है वह कब प्रकट होते हैं, मनुष्य का तो मनुष्य से काम पड़ता है, एक मुहल्ले में विभिन्न धर्मों के लोग रहते हैं, किसी किसी समय तो एक होटल में मालूम नहीं कितने धर्म के लोग ठहरे हुए होते हैं, एक स्कूल में कालेज में पढ़ते हैं, विश्वविद्यालय में, सब में विभिन्न धर्मों के लोग रहते हैं। उन्हें चाहिए कि एक दूसरे का सम्मान करें। एक दूसरे को अपना भाई समझें तथा उसकी ओर से बचाव करें। अल्लाह तआला हमें इसकी शक्ति दे। यदि ऐसा हम करेंगे तो हमारा यह देश चमन बन जायेगा। गुलजार बन जायेगा तथा इस संसार में उसका नाम होगा एवं लोग उसके दर्शन को आयेंगे कि कैसा फला फूला देश है। कैसी सद्भावना, प्रेम एवं भाई चारे का देश है परन्तु दुख यह है कि इसके स्थान पर हमारी ख्याति अन्य देशों में दूसरी प्रकार हो रही है, जिस पर हमें गर्व था वह जाती रही। परन्तु अब हमें चाहिए कि हम एक नया माडल प्रस्तुत करें, अपने जीवन का जिससे पुनः वह विश्वास वह पहचान एवं सम्मान तथा प्रतिष्ठा जो थी वापस आये।

परमाणु हथियार हलाकत और बरबादी का देव

सईद ताबिश

संयुक्त राष्ट्र के एक अध्ययन के अनुसार इस समय दुन्या में परमाणु हथियारों की संख्या चालिस और पचास हज़ार के बीच है जिनकी कुल विनाषकारी शक्ति हेरोशेमा पर गिराए जाने वाले बम से दस लाख गुना अधिक है। विज्ञान की शब्दावली में तेरह अरब टी.एन.टी. के बराबर अर्थात पृथ्वी पर बसने वाले हर मर्द, औरत और बच्चे के लिए प्रति व्यक्ति तीन टन टी.एन.टी. से भी अधिक। इनकी विनाशकारिता का विचार भी भयानक है।

हालिया आंकड़ों के अनुसार दुन्या इन हथियारों की तैयारी पर सालाना पांच सौ अरब डालर ख़र्च कर रही है अर्थात प्रति मिनट दस लाख डालर विशेषज्ञों की जिस टीम में संयुक्त राष्ट्र की देख रेख में यह अध्ययन किया उनकी रिपोर्ट के अनुसार इन हथियारों की संख्या और बिल्कुल सही निशाने पर उनकी मार की क्षमता में दिन प्रतिदिन वृद्धि होती जा रही है और बड़ी शक्तियों की दूसरों पर श्रेष्टा प्राप्त करने के जज़्बे ने जुनून का रूप धारण कर लिया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि यदि कभी इन परमाणु हथियारों का किसी जंग में प्रयोग किया गया तो संसार की यह बस्ती प्रलय के दृश्य पेश करंगी और लहलहाते हुए खेत, हरेभरे बाग़ और बहारों से भरे हुए चमन बंजर में तब्दील हो जाएंगे और ज़िन्दगी के चहचहों से गूंजती हुई इंसानी बस्तियां खण्डर बन जाएंगी।

पश्चिमी सभ्यता

(एक मनोवैज्ञानिक समीक्षा)

मुहम्मदुल हसनी

पश्चिमी सभ्यता इस समय जिस युग या जिस समस्या से गुज़र रही है वह शायद इसका अन्धकार मय युग है। वह अपनी श्रंगारिता, मन लुभावन, उन्नति और ज्ञान व कला के पूरे लावलश्कर के साथ एक ऐसे ख़तरनाक परिणाम से दोचार है जिसने इसक तमाम उन्नति को अत्यधिक तुच्छ और निर्मूल्य बल्कि जान का जंजाल बना दिया है।

अट्ठारहवीं सदी और उन्नीसवीं सदी में पश्चिमी सभ्यता ने जिस बिन्दु से अपनी यात्रा प्रारम्भ की थी उस समय उसके संस्थापकों के विचार में भी यह बात न आई होगी कि यह प्रसन्नतापूर्ण प्रारम्भ बिन्दु कभी ऐसा पश्चात्ताप और कटु परिणाम का रूप भी धारण कर सकता है। डार्विन, मेकावली और फराइड ने जीवन सम्बन्धी, सदाचार, जिंसी (यौन सम्बन्धी) तीनों मैदानों में मनुष्य जाति को पशुओं की उच्च श्रेणी, वास्नाओं का दास ओर अवसरवादी क़रार देकर अपने नज़्दीक उसको भोग विलास, सुख सुविधा और आनन्द का स्वर्ग सजा कर दे दिया था। परन्तु यह फूल अब उसके लिए कांटे बन गये हैं और इसी सुख व आनन्द के अन्दर अज़ाब और कष्ट की एक भयानक दशा पैदा हो गई है। देखने में उसका शरीर बहुत तरोताज़ा और स्वस्थ मालूम होता है लेकिन अन्दर से ऐसी घातक बीमारी का शिकार है जिसने उसके जीवन को नरक का नमूना बना दिया है। पश्चिमी दुन्या में जिस समय उन्नति के मैदान में अपना सबसे पहला क़दकम रखा था उस समय उसके सामने भविष्य का बहुत प्रकाशवान सुन्दर और प्रसन्नता पूर्ण पक्ष था। उसके पास यह सोचने की फ़ुर्सत ही न थी कि जिस मंज़िल की तरफ़ हम बढ़ रहे हैं उसकी वास्तविकता क्या है? वह एक नशा था जिसमें पश्चिमी दुन्या का हर व्यक्ति डूबा हुआ था।

परन्तु अब जब कि पश्चिमी दुन्या उस ऊंची चोटी पर पहुंच चुकी है या पहुंचने वाली है और भौतिक शक्ति की वह मंजिल आचुकी है और बेहयाई और बेशर्मी की सरिता में ग़ोते लगा रही है और क्षतिपूर्ति का दामन उसके हाथ से छूट चुका है और वह केवल दूसरों के लिए शिक्षा लेने की वस्तु बन गई है, उसको निराशा ने घेर लिया है। मायूसी उसके रग रग में समा चुकी है, उक्ताहट और तनहाई के ऐहसास ने उसकी पूरी जीवन व्यवस्था में अपने पंजे गाड़ दिये हैं। उसने अपने लिए जिस मंज़िल को चुना था वह मंजिल हर हाल में भौतिक थी इसलिए सीमित थी, अस्थाई और मिटजाने वाली थी। अब पश्चिमी दुन्या का जीवन निरर्थक है और उसकी कोई मंज़िल ही नहीं।

उक्ताहट और निराशा :

यह कल्पना नहीं सच्चाई है कि आज पश्चिमी दुन्या की सारी कोशिश, संघर्ष सारी दौड़धूप, सारी उन्नति, सभी ज्ञान और कला, संक्षेप में उसका हर कार्य और गति का प्रेरक केवल उक्ताहट है और मायूसी, नतीजे को जाने बिना एक ही काम करते रहना, तुच्छ उद्देश्य के लिए जान पर खेल जाना और बड़े बड़े सिद्धान्त सदाचार और उच्च से उच्च मक़सद के लिए अपनी जगह से न हिलना, एक उद्देश्य तक पहुंच कर उसी के लिए प्रयत्न करना यह है पश्चिमी जीवन के गुण औ विशेषता।

नई–नई विचार धारा, तेज़ी से बदलते हुए दृष्टकोण, इन्क़लाब और जवाबी इन्क़लाब, संघर्ष और असमंजस, इन सबके कारण जो कुछ भी हों, लेकिन इसका सबसे बड़ा बुन्यादी कारण यही वह निराशा और उक्ताहट है, जो इस समय पश्चिमी जीवन का सबसे प्रत्यक्ष गुण है और जिसने पश्चिम को जीवन के वास्तविक आनन्द से वंचित कर दिया है।

यह निराशा, उकताहट पश्चिमी विचार धारा, शिक्षा और पश्चिमी संस्कृति का स्वाभाविक परिणाम है। पश्चिमी सभ्यता ने जिस विचार धारा के साथ अपनी यात्रा शुरू की थी उसके बाद यह उकताहट और निराशा आश्चर्यजनक नहीं इन्सान स्वाभाविक रूप से स्वार्थी होता है। उसको हर समय एक ऐसा उद्देश्य चाहिए जिसके लिए वह अपनी सारी क्षमताएं, सारी शक्ति, सारे मनोभाव समर्पित कर दे। इस उद्देश्य का इश्क़ उसे हर क्षण कार्य में संलग्न और आनन्द के नशे में चूर रखे और वह अपने शरीर और आत्मा के साथ इस उद्देश्य या इस मंजिल की ओर दीवानावार दौड़ता रहे, भागता रहे।

जब यह मंज़िल आ जाती है तो उसकी सारी बेताबी, उसकी सारी बेचैनी, उसका सारा उत्साह अचानक ठंडा पड़

जाता है। एक साहसी इंसान को उस समय यह देखकर बहुत निराशा होती है कि क्या यह ईंट पत्थर या अल्मूनियम और प्लास्टिक का संसार था जिसने उसको अपने कोमल मनोभाव (जज़्बात) की अभिलाषा और प्रेम का केन्द्र बना दिया था। क्या उसकी सारी कोशिश, प्रयत्न, उसका सारा त्याग, सारी कला और ज्ञान, उसकी सारी बुद्धि व अक़्लमंदी, शिक्षा और नीति इसी दिन के लिए थी?

पश्चिमी सभ्यता के साथ दोहरी ट्रेज्डी पेश आई जब उसने सदियों की अज्ञानता के स्वप्न से जाग कर उद्योगिक उन्नति की ओर अपनी यात्रा शुरू की उस समय दुर्भाग्य से भौतिक शक्ति के बारे में उस की विचार धारा सही न थी। और अब जब कि एक लम्बी अवध की कोशिश के बाद उसने मंज़िल को पालिया है तो वह हैरान है कि वह क्या करे। हथियारों की वह दौड़, राकेट के मैदान में यह ज़बरदस्त मुक़ाबले, नये नये फ़ैशन, जीवन के हर क्षण बदलते हुए रंग ढंग, नीति और विचार धारा यह सब वास्तव में उसी निराशा और उकताहट का प्रदर्शन है जिसका नाम लेते हुए वह घबराती है लेकिन उससे अपना दामन किसी सूरत में नहीं छुड़ा सकती दूर जाने की आवश्यकता नहीं आए दिन समाचार पत्रों में ऐसे समाचार प्रकाशित होते हैं जिनमें पश्चिमी जीवन बेपरदा होकर हमें अपी असली सूरत में नज़र आता है और उसका वह मुलम्मा उतरता हुआ मालूम होता है जिस ने उसके दुःखदाई रूप को छुपा रखा है। हम इन छोटी छोटी खबरों से बिना कोई सीख लिए हुए गुज़र जाते हैं परन्तु यदि हम ध्यान दें तो हमें मालूम होगा कि इन तुच्छ और छोटी छोटी घटनाओं के अन्दर दुःख की एक पूरी कहानी छुपी हुई है।

अभी अधिक समय नहीं गुज़रा आस्ट्रेलिया से समाचार आया था कि एक आदमी ने बहुत ही छोटी रक़म सम्भवतः चन्द पैसों की शर्त प कई चूहे निगल लिए। पुलिस ने उस पर दुहरा जुर्म लगाया कि एक जानवर के साथ निर्दयता का और दूसरा आत्महत्या का। उसके पेट का आपरेशन किया गया तो उसमें से दो मरे हुए चूहे निकले।

इससे पूर्व एक खबर आई थी कि यूरोपीय यूनिवर्सिटी के प्रोफेसरों ने एक दिन तय किये कि पशुओं की तरह घास चबाई जाए और अनुभव किया जाए कि उसमें कितना मज़ा आता है। चुनानचः निश्चित समय पर प्रोफ़ेसरों की जमात एक खेम में घुस आई और गाय बकरी के समान सबने चराई शुरू करदी। उनका विचार था कि इस प्रकार आज़ादी के साथ चरने में अधिक मज़ा आएगा।

घटना जितनी भी हास्यप्रद और मूर्खतापूर्ण मालूम हो लेकिन इसमें पश्चिम के वर्तमान ज़िहनी अव्यवस्था और मानसिक उकताहट और निराशा की सही तस्वीर नज़र आती है।

सच्ची रूहनियत (अध्यात्मवाद) की तलाश

डा० मुस्तफ़ा अस्बाई ने अपनी ताज़ा पुस्तक "मन रूवाए हज़ारतना" में एक मनोरंजक घटना लिखी है। वह लिखते हैं कि एक साहब जो दावत का स्वाभाविक जज़्बा रखते थे फ्रांस में ठहरे हुए थे। एक बार उन्हें कुछ गैरमुस्लिमों को सम्बोधित करना पड़ा। उन्होंने उनके सामने इस्लामी जीवन शैली की विशेषताओं, उसकी सम्ता और संतुलित और परिपूर्णता पर प्रकाश डाला और यह भी कहा कि इस्लाम ने भैतिक शक्ति को बहुत प्रमुखता दी है चुनानचः कुर्आन मजीद में कहा गया है । अनुवाद : और दुश्मनों के लिए जो तुम से हो सके शक्ति की तैयारी करो।

इसलिए हम को चाहिए कि हम आधुनिक सैन्य सामान और हथियारों की तैयारी की तरफ ध्यान दें। उन लोगों ने उस पर कहा आप भौतिक उन्नति, और टैंक, हवाई जहाज़ का नाम हमारे सामने न लीजिए। इस मशीनरी दुन्या से तो हम तंग और बेज़ार होकर आप के सामने आए हैं। हवाई जहाज़ और मशीनरी से हमारा दिल भर चुका है। आप हमें यह बताइये कि इन्सानियत, सदाचार, अध्यात्मिक मूल्यों के मैदान में इस्लाम हमें क्या दे सकता है?

असलियत यह है कि यह केवल चन्द लोगों का हाल नहीं बल्कि सारी पश्चिमी दुन्या का यही हाल है । इन तमाम भौतिक उन्नति और सम्पन्नता के बावजूद उसकी आत्मा को शान्ति नसीब नहीं।

स्वार्थ यारूहानी बेचैनी

अमरीका के एक ऊंची इमारत की ऊपरी मंज़िल से कूद कर एक व्यक्ति ने आत्महत्या कर ली। पुलिस को सूचना दी गई और वह उस फलैट में तलाशी के लिए पहुंची। वहां एक सज्जन दिखाई दिये जो पलंग पर बहुत इत्मिनान व शान्ति के साथ लेटे हुए थे। पुलिस की पूछ ताछ का उन्होंने जो उत्तर दिया बयान करने योग्य है। उन्होंने कहा कि मैंने उस व्यक्ति को खिड़ की तरफ़ जाते हुए देखा और वहां से कूदते हुए देखा लेकन मैं उस समय आराम कर रहा था। मैंने सोचा बिला वजह क्यों अपने आराम को खराब करें अतएव मैं इसी तरह लेटा रहा और किताब पढ़ता रहा।

प्रत्यक्ष में यह प्रतीत होता है कि इस घटना का प्रेरक अतिअधिक बढ़ी हुई खुदगर्जी और स्वार्थपरता है लेकिन मामिला इतना ही नहीं है। वास्तव में यह घटना एक व्यक्ति की रूहानी बेचैनी, मन की

(शेष पृष्ठ १६ पर)

आदर्श शासन

डा० मुहम्मद इज्तिबा नदवी

दूसरे खलीफ़ा हज़रत उमर रज़ि० अपनी दिनचर्या के अनुसार बाहर से आने वाले क़बीलों, मुसाफिरों और परदेसियों की देख भाल के लिए रात के गश्त पर निकले हुए हैं, मदीना की गली कूचों से गुज़रते हुए खजूरों के एक बाग में पहुंच जाते हैं। मदीना शहर दो ओर से काली पहाड़ियों से घिरा हुआ है। उसमें पश्चिम वाले भाग को पश्चिमी हर्रः और पूरब वाले को पूरबी हर्रः कहा जाता है। तीसरी ओर खजूरों के सुन्दर बाग दूर तक फैले हुए हैं। उत्तरी दिशा में खुला मैदान है। इसी ओर से विभिन्न क्षेत्रों से आने वाले लोग मदीना में प्रवेश करते हैं। रास्ते में मदीना की प्रसिद्ध घाटी अक़ीक़ है, जिस के नागरिकों की कविता और साहित्य में बड़ी रूचि है।

हज़रत फ़ारूक आज़म रज़ि० बागों से निकल कर उत्तर की आरे मुड़ जाते हैं। उनके साथ हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० हैं। अचानक दोनों की नज़र व्यापारियों के एक काफ़िले पर पड़ती है, जिसमें पुरुषों के साथ स्त्रियां और बच्चे भी हैं। हज़रत उमर रज़ि० हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि० को सम्बोधित करके फ़रमाते हैं : आओ आज रात उनकी पहरेदारी करें। इसी बीच एक बच्चे के रोने की आवाज़ आती है। हज़रत उमर आवाज़ सुनकर उस बच्चे की ओर जाते हैं और उसकी मां से कहते हैं : खुदा के लिए इस बच्चे के साथ अच्छा व्यवहार करो' मां को बच्चे का ध्यान दिला कर अपनी जगह वापस आ गए। थोड़ी देर के बाद रोने की आवाज़ फिर सुनी। फिर गए और उसकी मां से कहाः इसका ध्यान रखो, इस को सुला दो' मां को नसीहत करके अपनी जगह पर फिर वापस आ गए।

रात के अन्तिम पहर बच्चे के रोने से फिर परेशान हो गए। बच्चे की मां के पास आकर कहा कि तुम अच्छी मां नहीं लगती हो, आज रात इस बच्चे को आराम नहीं मिला और यह रोता ही रहा।' मां को यह मालूम नहीं था कि यह व्यक्ति अमीरुल मोमिनीन है, उसने बड़े आवेश में जवाब दिया कि खुदा के बन्दे तुम ने तो हमें आज तंग कर डाला, तुम को इससे क्या लेना देना, मैं इस बच्चे का दूध छुड़ा रही हूं और वह छोड़ नहीं रहा है।

उन्होंने नर्मी से मालूम किया : ऐसा क्यों कर रही हो, ज़बरदस्ती दूध क्यों छुड़ा रही हो? मां ने जवाब दिया : ऐसा मैं इसलिए कर रही हूं कि उमर रजि० दूध पीते बच्चे को वज़ीफा नहीं देते हैं, केवल उसी बच्चे का गुज़ारा निर्धारित करते हैं जो दूध पीना छोड़ देता है। पूछाः इसकी उम्र कितनी है? जवाब दिया : इतने महीने की।' फ़रमाया : खुदा तुम्हारा भला करे जल्दी न करो।'

हज़रत उमर रज़ि० को इस घटना ने बड़ा प्रभावित किया। उनका एक प्रशासनिक आदेश बच्चों के लिए कष्ट का कारण जो बन गया था। फ़ज्र की नमाज़ के दैरान आंसू बहने लगे। इस कारण लोग पूरी तरह कुरआन की क़िराअत भी न सुन सके। सलाम फेरते ही फ़रमाया बदनसीब उमर कितने मुसलमान बच्चों की हलाकात का कारण बना। एक व्यक्ति को सम्बोधित करके कहा : जाओ, पुकार, पुकार कर घोषणा कर दो कि ऐ लोगों अपने बच्चों का दूध छुड़ाने में जल्दी न करो। हम बच्चे के लिए पैदा होते ही वज़ीफ़ा निर्धारित कर देंगे। जाओ पूरे राज्य में घोषणा करा दो।

यह इस्लाम के वह ख़लीफ़ा हैं, जिन्होंने एक हाथ से किसरा और दूसरे हाथ से क़ैसर की सलतनतों को खंडित कर के इस्लाम की गोद में डाल दिया, जिनके नाम से उस दौर का सारा जगत कांप जाता था। आपने देखा कि वे किस प्रकार रात को गश्त करके पहरेदारी क़ायम करते थे और एक बच्चे के रोने पर तीन बार उसकी मां के पास जाते हैं और खुशामद करते हैं कि उसे खामोशी से सुला दे। मानव प्रेम के यह उदाहरण अछूता ही है क्योंकि इतिहास ऐसा दूसरा उदाहरण प्रस्तुत करने में असमर्थ है। आइए! उच्चआचरण, इस्लामी मानवता का इस जैसा एक और उदाहरण देखें।

हज़रत उमर रज़ि० हर दिन की तरह आज रात में फिर गश्त पर निकले हैं। मदीना के एक बड़े मैदान से गुज़र रहे हैं। अचानक बालों का बना हुआ एक खेमा उनको आकृष्ट करता है, जिसके अन्दर से किसी औरत के कराहने की आवाज़ आ रही है। खेमे के दरवाज़े पर एक आदमी कष्ट व चिन्ता की मूर्ति बना बैठा है। हज़रत उमर रज़ि० आगे बढ़कर उस व्यक्ति को सलाम करते हैं और मालूम करते हैं : आप कौन हो, कहां से आए हो? जवाब मिलता है : बद्दू हैं और अमीरुल मोमीनीन से सहायता मांगने आये हैं। पूछाः खेमे के अन्दर कौन है और क्यों कराह

रहा है? वह बदवी नहीं जानता था कि यह अमीरुल हज़रत उमर रज़ि० हैं। कहाः भाई अपना काम करो, ऐसी बात मत पूछों? जिससे तुम्हारा कोई लेना देना नहीं। जाओ खुदा तुम्हारा भला करे।'

हज़रत उमर रज़ि० ने बड़े स्नेह व नर्मी से आग्रह किया : नहीं भाई बताओ, क्या बात है ? शायद में कुछ काम आ सकूं।' उस बद्दू न बताया : खेमे में उसकी पत्नी है जो प्रसव के कष्ट में हैं और सहायता के लिए स्त्री के पास कोई नहीं है।'

हज़रत उमर रज़ि० यह सुनते ही बड़ी तेज़ी से अपने घर आए और अपनी पत्नी हज़रत उम्मे कुल्सूम बिन्त हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्हू रज़ि० से कहा : खुदा ने सवाब कमाने का एक अवसर प्रदान किया है, क्या सवाब प्राप्त करना चाहती हो?

पूछा क्या मामला है? आपने उनसे उस बदवी का हाल बयान किया और फिर फरमाया : नवजात शिशु के लिए कुछ कपड़े और औरत के लिए तेल आदि ले लो और एक पतीली घी और कुछ खाने का सामान भी। आपकी पत्नी यह सारा सामान लेकर घर से निकलीं। अमीरूल मोमिनीन की पत्नी ने सारा सामान खुद उठाया और रात के अंधेरे में हज़रत उमर रज़ि. के पीछे–पीछे चल दीं।

पत्नी बदवी के खेमे के अन्दर चली गयी और हज़रत उमर रज़ि. खुद बाहर बैठ कर खाना पकाने लगे। बदवी बैठा हुआ हज़रत उमर रज़ि. को खाना बनाते हुए देखता रहा। उसे पता न था कि यह कौन है? थोड़ी देर के बाद आप की पत्नी ने अन्दर से पुकारा : या अमीरुल मोमिनीन अपने दोस्त को बेटे के जन्म की मुबारकबाद दीजिए।' बदवी यह सुनते ही सन्नाटे में आ गया और कांप कर दूर जा खड़ा हुआ।' हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमायाः घबराओ नहीं, अपनी जगह पर बैठो। खाने की पतीली उठा कर अपनी पत्नी को दी और कहा : औरत को खिला पिला दो। वह जब खा पी चुकी तो आपने शेष खाना बदवी को दे दिया और कहा कि तुम भी खाओ और आराम करो। तुम रात भर जागते रहे और बे आराम रहे हो।

अमीरूल मोमिनीन की पत्नी खेमे से निकलीं, दोनों वापस जाने को तैयार हुए, हज़रत उमर ने उसे सलाम किया और कहा : हमारे पास आना, हम तुम्हारी मदद करेंगे। अगले दिन जब वह व्यक्ति हज़रत उमर रज़ि० की सेवा में उपस्थित हुआ तो आपने उसके बच्चे और उसके लिए वज़ीफ़ा निर्धारित कर दिया।

दुन्या में शासकों और बादशाहों की समाज सेवा की अनेक घटनाएं मिल सकती हैं, मगर इस जैसी घटना शायद ही मिले। रात के अंधरे में इतने बड़े राज्य का प्रमुख जनता की देख भाल व सेवा के लिए अपनी नींद व आराम हराम करे और फिर अपनी पत्नी को साथ लेकर उससे दाया व नर्स का काम कराए, स्वयं उनके लिए खाना बनाए और उस समय तक आराम का सांस न ले, जब तक उस खेमे में रहने वाले को आराम व सुख चैन की नींद न सुला दे।

आइए हज़रत उमर रज़ि० के जीवन की एक और प्रसिद्ध घटना का विवरण देखते चलें।

अपने नियम के अनुसार रात के गश्त पर निकले और मदीना की आबादी के एक छोर पर पहुंच जाते हैं। अचानक एक आवाज सुनाई देती है, बेटी जल्दी उठो दूध निकाल कर उसमें थोड़ा पानी मिला दो। सुबह होने वाली है।

बेटी की आवाज़ सुनायी देती है : अम्मा जान ! अमीरूल मोमिनीन ने दूध में पानी मिलाने से मना कर दिया है।' मां ने डांटते हुए कहा : अरे तू पानी मिला दे, यहां कहां अमीरूल मोमिनीन देख रहे हैं।

बच्ची ने अपने ईमान की पूरी शक्ति के साथ जवाब दिया : अम्मा जान! यदि अमीरूल मोमिनीन नहीं है, तो अमीरूल मोमिनीन का स्वामी और हमारा पालनहार वह अल्लाह तो देख रहा है।

हज़रत उमर रज़ि० इस वाक्य को सुनते ही आगे बढ़ते हैं और इस घर पर निशान लगा देते हैं और तेज़ तेज़ क़दम बढ़ाते हुए मस्जिद नबवी में दाखिल हो जाते हैं। अल्लाह की बारगाह में सज्दे में गिर जाते हैं। अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं कि ईमान और ईमानदारी मुसलमानों के जीवन में मौजूद है। इतने में मोअज़्ज़िन फ़ज्र की अज़ान देता है। हज़रत उमर रज़ि० सज्दे से सर उठाते हैं और सुन्नत पढ़ते हैं। नमाज़ के बाद अपने बेटे हज़रत आसिम को बुलाकर मश्वरा करते हैं। रात को जिस घर पर निशान लगा आए थे, उसके बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं और अन्त में उस नेक व ईमानदार लड़की से अपने बेटे आसिम का पैग़ाम देते हैं। मां की स्वीकृति मिल जाने पर उसे अपनी बहू बना कर अपने घर ले आते हैं। खुदा से डरने वाली ईमानदार और दीनदार युवती का इससे अच्छा और क्या इनआम हो सकता था ? इसी युवती ने उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ को जन्म दिया, जिन्होंने उमवी शासन में खिलाफत की ज़िम्मेदारी उठाई और थोड़ी सी अवधि में हज़रत उमर रज़ि. के समय की याद ताज़ा कर दी। बादशाहत को फिर से ख़िलाफ़त में, और भोग विलास के जीवन को सदाचारी जीवन में बदल दिया। अल्लाह उनसे प्रसन्न हो और मुसलमानों को उनके पद चिन्हों पर चलने और शरीअ़त के आदेशों को अपने जीवन के हर क्षेत्र में लागू करने का सौभाग्य प्रदान करे। (आमीन)

भाईचारे और समानता के व्यवहारिक नमूने

दुन्या के अन्य धर्मों के मुक़ाबले में इस्लाम को यह प्रमुखता प्राप्त है कि उसने अपने आरम्भिक काल ही में शरीअ़त के तमाम सिद्धान्तों और आचरण के व्यवहारिक नमूने प्रस्तुत कर दिए और एक ऐसा समाज निर्माण करके दुन्या के सामने प्रस्तुत कर दिया जो कियामत तक उदाहरण और नमूना बना रहेगा।

कौन नहीं जानता कि हिजरत के बाद नबी करीम सल्ल. ने मुहाजिरों और अनसार के बीच एक–एक का नाम लेकर भाई–भाई का सम्बन्ध स्थापित कर दिया जिस को मुवाख़ात कहा गया। मुवाख़त का यह रिश्ता मरते समय तक तो बाक़ी रहा ही, उसके बाद भी इसका लिहाज़ रखा गया। अन्सारी भाई ने अपने मुहाजिर भाई को अपने धन, सम्पत्ति और कारोबार में से आधा हिस्सा दे दिया था, यहां तक कि यदि किसी अन्सारी भाई की दो पत्नियां थी उसने अपने मुहाजिर भाई को यह अनुमति दे दी कि जो पत्नी उसे पसन्द हो, उसे वह तलाक़ दे देगा ताकि अन्सारी भाई उसे अपने निकाह में ले ले। जिस मुहाजिर ने जिस स्त्री को पसन्द किया, उस को अन्सारी भाई ने तलाक़ दी और क़ुर्आन व हदीस के अनुसार मुहाजिर भाई से उस के निकाह में पूरा–पूरा सहयोग दिया। मुहाजिर भाइयों में से कुछ ऐसे भी थे कि जिन्होंने बस अपने अन्सारी भाई से बाजार का रास्ता मालूम किया और उससे कुछ न लिया। अल्लाह ने उनके कारोबार में बड़ी बरकत दी।

इसी प्रकार इस्लाम ने रंग, नस्ल, जाति और राष्ट्र व क्षेत्र के आधार पर असमानता को मिटा कर, सब इन्सानों को मानवता के आधार पर समानता प्रदान की। यदि किसी को कोई बड़ाई या प्रमुखता मिली तो केवल ईशभय (तक़्वा) और भलाई व नेकी में उसकी रूचि के आधार पर अल्लाह का इर्शाद है –

"अल्लाह के प्रति तुम में सबसे अधिक सम्मानित वह है जो अल्लाह से डरने वाला व संयमी हो" (४६:१३)

नबी करीम सल्ल. ने अपने अन्तिम हज के अवसर पर अपने खुत्बे में न केवल भाईचारा व समानता का स्पष्ट दिशा निर्देश दिया बल्कि दुन्या में सबसे पहले मानव अधिकार के चार्टर की घोषणा भी की।

"तुम लोग आदम (अलैहि.) से पैदा हुए और आदम मिट्टी से पैदा हुए थे, किसी अरबी को किसी ग़ैर अरबी पर प्रमुखता नहीं और किसी सफेद को किसी काले पर कोई बड़ाई प्राप्त नहीं मगर ईशभय के आधार पर।" (मुसनद अहमद)

आइये इस्लामी समाज में इसी घोषणा के व्यवहारिक नमूने भी देखते चलें। नबी करीम सल्ल० के अन्तिम हज्ज में सहाबा की बड़ी संख्या जमा थी, जिनमें उन क़बीलों के लोग भी थे, जो अपने तेज व प्रताप के लिए प्रसिद्ध थे ओर उनके अभिमानी सरदार भी जो हर किसी के साथ उठना बैठना, खाना, पीना पसन्द करते थे। मगर मिना में, अरफ़ात के मैदान में और मुज़दलफ़ा और नमाज़ की पंक्तियों में सब एक साथ एक ही समय और समान तरीके से उठते बैठते और खाते पीते और नमाज़ पढ़ते थे और किसी के प्रति लेशमात्र भी तुच्छता का व्यवहार नहीं हुआ।

एक ही सफ़ में खड़े हो गए महदू व अयाज़
न कोई बन्दा रहा और न कोई बन्दा नवाज़

आइए! यह देखिए कि पवित्र काबा की छत पर वह कौन खड़ा है जिसे नबी करीम सल्ल. ने मक्का की विजय के बाद अज़ान देने का आदेश दिया है। यह तो हज़रत बिलाल हब्शी रज़ि. हैं। यह तो इसी मक्का में उमय्या बिन ख़लफ़ के गुलाम थे और काले होने के कारण उनसे अछूतों जैसा व्यवहार किया जाता था। उनके इस्लाम स्वीकार कर लेने पर इसी उमय्या बिन ख़लफ़ और उसके कुटुम्ब के मुखिया अबू जहल और सफ़वान बिन उमय्या ने उनको कठोर यातनाएं दी थीं और इनकी मुबारक ज़बान से केवल अहद अहद (अल्लाह एक है) की आवाज़ निकलती रही।

आज इनको इस्लामी समाज में यह सम्मान प्राप्त हो रहा है। यह इस्लाम की महानता व समानता और इस्लामी भाई–चारे का व्यवहारिक नमूना है। एक काला व्यक्ति जो गुलाम भी रहा है, अपने अभिमान के लिए प्रसिद्ध मक्का वासियों की नज़रों के सामने पवित्र हरम की छत पर चढ़ जाता है और उसपर खड़ा होकर अज़ान देता है। यह सम्मान किसी बड़े सरदार को प्राप्त नहीं होता। लोगों ने अपनी आंखों से इस्लाम के इस महान पात्र को देखा है।

क्या प्रगति की दावेदार पश्चिमी दुन्या आज भी कोई ऐसा उदाहरण पेश कर सकती है, जिसमें ज्ञान, श्रेष्ठता, बुद्धि, आचरण और ईमान के आधार पर कोई व्यक्ति महानता व श्रेष्ठता की चोटी पर पहुंच जाए, न कि सफेद खाल और गोरे चहेरे के द्वारा। यहां तो यदि ईमान व अमल नहीं तो किसी व्यक्ति का गोरा होना या बेड़े खानदान से सम्बन्ध होना उसे आगे नहीं बढ़ा सकता और न किसी का काला होना उसे पीछे कर सकता है।

गिरावट के बावजूद इस्लामी समाज आज भी इस आदर्श पर क़ायम है। मस्जिद में इमाम किस जाति का है, कोई नहीं पूछता, बराबर में कौन खड़ा है, कोई न नहीं सोचता, नसीहत करने वाला किस जाति और वर्ग से है, कोई नहीं

देखता, सब पंक्ति बद्ध होकर एक साथ नमाज़ पढ़ते हैं, आगे कौन खड़ा है, पीछे कौन है, किस के सर के आगे किसके पैर हैं कोई नही देखता,एक जगह बैठ कर खाते पीते हैं और हर एक के प्रति उसके ज्ञान और दीनदार के आधार पर व्यवहार किया जाता है।

इस्लामी सेना अम्र बिन आस रज़ि. की कमान में मिस्र की ओर आगे बढ़ती है और बाबलियोन के किले तक पहुंच जाती है। मिस्र के बादशाह का एक प्रतिनिधि मुसलमानों से बातचीत के लिए आता और कहता है कि हमारे बादशाह से बात करने के लिए अपने प्रतिनिधि भेजो। हज़रत अम्र बिन आस रज़ि. दस सहाबा का एक प्रतिनिधि मंडल भेजते हैं। उसका मुखिया उबादा बिन सामित रज़ि. को बनाते है।

हज़रत उबादह लम्बे चौड़े और काले रंग के आदमी थे, जिस समय मकोकस के दरबार में यह प्रतिनिधि प्रवेश करते हैं, मक़ोक़स हज़रत उबादा के डील डोल और काले रंग को देख कर चकित रह जाता है। घबराकर कहता है कि इस काले आदमी को दूर हटाओ और किसी दूसरे को मुझसे बात करने के लिए आगे बढ़ाओ। प्रतिनिधि मंडल के सदस्य जवाब देते हैं : यह काले व्यक्ति हमारे सरदार हैं, हम में सबसे बेहतर और हम में सबसे अधिक ज्ञानी और सूझ बूझ वाले हैं। हम इनकी राय व आदेश का पालन करते हैं। हमारे सेना–पति ने इनको हमारा सरदार बनाया है और इनका आदेश मानने के लिए हमें निर्देश दिया है। मक़ोक़स ने कहा, तुमने इस काले आदमी को अपना सरदार कैसे बना लिया? यद्यपि वह तुम लोगों से तुच्छ है।"

उन लोगों ने जवाब दिया : 'कदापि नहीं, वे यद्यपि काले हैं, परन्तु हम सबसे योग्य व अच्छी राय के स्वामी हैं, हमारे यहां काला होना कोई दोष नहीं है।'

मक़ोक़स ने मज़बूर होकर हज़रत उबादा रज़ि. से कहा : अच्छा तो आगे बढ़ ऐ काले आदमी ! और मुझसे नर्मी से बात कर, क्योंकि मुझे तेरी काली चमड़ी से डर लगात है' हज़रत उबादा ने मक़ोक़स को अपनी काली चमड़ी व काले रंग से डरता हुआ देख कर कहा : हमारी सेना में एक हजार सैनिक काले रंग वाले हैं जो मुझसे भी अधिक काले हैं।'

उदार हृदय, उच्च चरित्र और मनुष्य के सम्मान व महत्व का एक उदाहरण और देखिए। बनी उमैया के बड़ी प्रतिष्ठित और तेजस्वी ख़लीफ़ा अब्दुल मलिक बिन मरवान दमिश्क से हज्ज के लिए मक्का आते हैं। वहां उनकी भेंट मक्का में शरीअत के सबसे बड़े विद्वान इमाम अ़ता बिन रबाह से होती है। ख़लीफ़ा वहां हज के अवसर पर यह घोषणा करता है: फ़तवा केवल अता बिन अबी रबाह देंगे। उनके होते किसी और को फ़तवा देने का अधिकार नही दिया है।'

अब अ़ता इब्न अबी रबाह कैसे थे? बहुत काले, एक आंख से वंचित, चपटी नाक, लंगड़े, लूले और बिखरे बाल। कोई व्यक्ति थोड़ी देर भी उन पर निगाह नहीं जमा सकता था। पढ़ाने के लिए जब छात्रों के बीच बैठते, तो ऐसा लगता था कि जैसे रूई के ढेर पर कोई काला कव्वा बैठ गया है।

हज़रत अता बिन अबी रबाह रह. के लिए कव्वे का उदाहरण कुछ अनुचित सा है, परन्तु इस 'सभ्य' संसार को, जिसने आज के इस उन्नत और प्रगतिशील सभ्य समाज में रंग–भेद की नीति का खुले तौर पर संरक्षाण प्रदान कर रखा है, आज से चौदह वर्ष पहले महान धर्म ने उस श्यामवर्ण के व्यक्ति को अपना इमाम और अपने पवित्र शहर में मुफ़्ती, फ़क़ीह और मुहद्दिस के महान पदों पर विराजमान कर रखा था, जिसकी पाठशाला से हजारों छात्र ज्ञानी बन कर, निपुणता का प्रमाणपत्र लेकर, उसके प्रति अपने दिल में निष्ठा, आदर व सम्मान की भावनाएं लेकर निकलते थे।

एक हज़रत अता बिन अबी रबाह (रहम०) ही नहीं, बल्कि कितने ही ऐसे ज्ञानी, धर्म–शास्त्री, कवि, लेखक, साहित्यकार हैं, जिनको रंग और जाति के भेद–भाव से ऊपर उठ कर, केवल उनकी विद्वता और तक़वा व नेकी के कारण मुसलमानों ने अपने सीने से लगाया और आंखों में बैठाया। प्रसिद्ध कवि नसीब, धर्मशास्त्री उसमान बिन ज़ैलअी, जिन्होंने हनफी फिक़ह (धर्म–शास्त्र) की प्रसिद्ध पुस्तक 'किन्ज़' की टीका लिखी। बहुमूल्य पुस्तक 'नसबुर्रायः' के लेखक हाफ़िज़ जमालुद्दीन अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह इब्न यूसुफ़ ज़ेलअ़ी काले थे और हब्शा (इथोपिया) के शहर ज़ैला के रहने वाले थे।

(पृष्ठ २० का शेष)

पहचानता कि तुम विषैले हो या नहीं न मैं जानता कि तुम मुस्लिम जिन हो अतः यदि तुम मुस्लिम जिन हो तो तुरन्त लुप्त हो जाओ वरना मैं मारने जा रहा हूं फिर मार दे तो इन्शा अल्लाह पाप न होगा।

इसको उलमा ही भलीभांति स्पष्ट कर सकते हैं।

जब तक इन्सान अपने भाई की मदद में रहता है अल्लाह तआ़ला उसकी मदद में रहता है। (हदीस)

फ़तहे मक्का

माहिरुल क़ादरी

हिजरते नबी के आठवें साल की घटना है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम मस्जिद में तशरीफ़ रखते थे इतने में एक व्यक्ति दुखदाई स्वर में फ़रयाद करने लगा'' ऐ खुदा! मुहम्मद को वह बचन याद दिलाता हूं जो हमारे उनके प्राचीन क़बीले में हुआ है। ऐ खुदा के रसूल (सल्ल०) हमारी मदद कर और खुदा के बन्दों को बुला ''हुज़ूर (सल्ल०) ने हाल पूछा तो मालूम हुआ कि कुरैश की अनुमति बल्कि उनकी सहायता से बनू बक्र ने बनू ख़ज़ाआ (अरब के क़बीले) का हरम (काबा) की सीमा के अन्दर खून बहाया और समझौते को तोड़ा है। हुदैबिया की सुलह की शर्तों की बुन्याद पर बनूख़ज़ाआ और मुसलमान एक दूसरे के सहयोगी हो गए थे। यही मुसलमानो के सहयोगी (ख़जाआ) भेड बकरी की तरह हरम की सीमा में ज़िब्ह कर दिये गये।

अम्र बिन सालिम अपने क़बीले की तरफ़ से फ़रयाद लेकर रसूल के दरबार में हाज़िर हुए थे। इस सिलसिले में तमाम घटनायें औ पूरा विवरण सुनकर हुज़ूर (सल्ल०) बहुत अधिक प्रभावित हुए और कुरैश के पास तीन शर्तें लेकर दूत को रवाना किया। पहली शर्त यह थी कि ख़ज़ाआ का खूंबहा (धन जो क़त्ल हो जाने वाले के उत्तराधिकारियों को उनकी मर्ज़ी के अनुसार खून के बदले में दिया जाये) दूसरी शर्त यह थी कि कुरैश बनूबक्र की सहायता से हाथ उठा लें और आखिरी शर्त यह थी कि इस बात का एलान कर दिया जाए कि हुदैबिया में जो सुलह हुई थी टूट गई।

कुरैश के प्रतिनिधि (नुमाइन्दे) ने रसूल के दूत से कहा कि पहली दो शर्तें तो हमें मान्य नहीं अलबत्ता हमको तीसरी शर्त स्वीकार है। जब दूत मदीना चला गया तो कुरैश को अपनी ग़लती का आभास हुआ कि हमने उत्तर देने में जल्दी और उग्रता से काम लिया। अबू सुफ़यान को उन्होंने मदीना भेजा और अबूसुफ़यान ने हुदैबिया के सुलहनामे के नवीनीकरण की कोशिश भी की परन्तु अब मुआमला सुलह की हद से गुज़र चुका था। कुफ़्फ़ारे कुरैश के लगातार विश्वासघात, साज़िशों और इस्लाम दुशमनी किसी औचित्य और समझौते के पात्र न थी। अबूसुफ़यान का प्रतिनिधित्व (सफ़ारत) असफल रहा। इतिहास अपना पन्ना उलट चुका था और असत्य को आप ही आप पसीने आ रहे थे।

हुज़ूर ने मक्का की तरफ़ कूच का एलान फ़रमा दिया।

चन्द दिन में कूच की तैयारियां पूरी हो गईं यहां तक कि रमज़ान की दस तारीख़ सन् आठ हिजरी को हुज़ूर (सल्ल०) दस हज़ार जान निछावर करने वाले श्रद्धावान सहाबा (रज़ि०) को साथ लेकर मदीना से मक्का की तरफ़ रवाना हो गए। मंजिलों पर मंज़िलें तय करता हुआ यह पवित्र लशकर मक्का की सीमा में दाख़िल हुआ। हुज़ूर (सल्ल) ने हज़रत अब्बास (रज़ि.) को आदेश दिया कि जाओ अबू सुफ़यान को पहाड़ी क़िले पर ले जाकर खड़ा कर दो ता कि वह अपनी आंख से अल्ला की फौज़ का प्रताप और दबदबा देख ले। सब से पहले अरब के क़बीलों की फौज़ें आगे बढ़ीं। ग़फ़्फ़ार कबीले का झण्डा सब से आगे लहरा रहा था फिर दूसरे क़बीलों के जांबाज़ सिपाही हथियारों से सजे हुए नार–ए–तकबीर (अल्लाहुअकबर) बलन्द करते हुए आगे बढ़े।

अबूसुफ़यान इस दृष्य को देखकर डर जाता था। तकबीरों (अल्लाहु अकबर) के पुरजोश नारों ने उसके बदन के रोंगटे खड़े कर दिये या तो वह ज़माना था कि मक्का की धरती मुसलमानों के लिए बिलकुल तंग हो गई थी और खुदा के पुजारी अति अधिक अत्याचार सहने और निःसहाय का जीवन व्यतीत कर रहे थे, यहां तक कि खुद आक़ाये नामदार (नामवर आक़ा) मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मक्का छोड़ देना पड़ा और आज मक्का के आकाश में इस्लाम का झण्डा लहरा रहा था मज़लूमियत (अत्याचार सहन) विजय और अधिपत्य (ग़लबा) से बदल गई थी, अधर्म छुपने के लिए पनाह ढूंढ रहा था और असत्य प्रास्त हो चुका था। तमाम क़बीलों के दस्तों के बाद अंसार की बारी आई, तलवार, नेज़े तरकश और कवच, झण्डे और सबसे बढ़कर उन सबकी प्रसन्नता का जोश, सहृदयता, श्रद्धा का ज़ज़्बा नज़र आ रहा था। कुरैश इस श्रद्धा को देखकर कांप गये यह अंसार थे, रसूल और सहाबा के मददगार जिन्होंने महाजिरीन के साथ भाइयों जैसा सुलूक किया, इस्लाम की सहायता में हमेशा तत्पर रहे। वह

पवित्र युद्धों में जिनकी बहादुरी और जिहाद के जोश की कहानियों से इस्लाम का इतिहास हमेशा सुसज्जित रहेगा यही पूरा प्रमाण होगा।

क़बीलों के सभी दस्ते एक एक करके गुज़र चुके तो सब से अन्त में ख़ुद मुहम्मद मक्की व मदनी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सवारी मक्का की गली कूचों को महकाती हुई और धूल के कणों को चांद, सूरज बनाती हुई नज़र आई। हज़रत ज़ुबैर बिन अ़व्वल के हाथ में नबी सल्ल० का झण्डा था और हुज़ूर ने (सल्ल०) अत्यधिक आदर सत्कार और धन्यवाद के जज़्बे से मुबारक सर को इतना झुका लिया था कि पेशानिये मुबारक कजावे से लग गई थी।

जिस समय अंसार का लशकर मक्का में दाख़िल हुआ तो हज़रत सअ़द बिन इबादा जैश अंसारी झण्डा लिए हुए थे उनके मुंह से जोश में निकल गया था कि "आज घमसान का दिन है आज काबा हलाल कर दिया जाएगा, इस वाक्य जिसे क़ुरैश ने सुना कांपा कांप गया। अबूसुफ़यान ने हुज़ूर को जब देखा तो डरते डरते शिकायत के लेहजे में पुकरा "आप (सल्ल०) ने सुना इबादा के बेटे सअ़द अंसार के अलम बरदार (ध्वाजा वाहक) ने क्या कहा।" हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि सअ़द ने ठीक नहीं कहा, आज तो काबा के महानता का दिवस है। इस कहने के बाद आपने आदेश दिया कि जैश अंसार का झंडा सअ़द बिन इबादा से लेकर उनके बेटे को दे दिया जाए। हरम की छत पर निर्दोष कबूतर ख़ुशी से नाच रहे थे कि आज काबा के पाक होने का दिन था। हिजरत से लेकर आज तक हरम की ज़मीन का कण कण उदास था परन्तु अब उनके दिन फिर गए थे। बेजान ज़र्रों के मुंह में ज़बान आ गई थी। और गोयाई (वाक् शक्ति) भी ज़बाने हाल से अर्ज़ कर रही थी–

हुज़ूर (सल्ल०) जब से आप यहां से तशरीफ़ ले गए हैं हम पर प्रसन्नता की एक सुब्ह भी नहीं हुई है। हम उसी दिन से सरकार की राह देख रहे हैं। हम पर कैसे कैसे कठिन दिन गुज़रे हैं और कैसी कैसी भयानक ख़बरें हम तक पहुंची हैं। कभी यह कि उहद की जंग में मुहम्मद इब्ने अब्दुल्लाह शहीद कर दिये गये। कभी यह कि मदीना के यहूदियों व मुनाफ़िक़ीन ने सहाबा को क़त्ल कर के तबाही मचा दी और किसी दिन यह भी सुन लेना कि अब्दुल मुत्तलिब का घर का चराग़ भी गुल हो गया। और हुज़ूर (सल्ल०) आप से जंग करने के लिए जब कुफ़्फ़ारे क़ुरैश गुज़रे हैं तो उनके जोश शोरोगुल के दृष्य को देखकर भयभीत हो जाते अल्लाह से दुआ करते थे कि बारे इलाही ! तू अपने नबी (सल्ल०) और इंसानियत के हमदर्द नबी (सल्ल०) की मदद फ़रमाना । अल्लाह ने हम तुच्छ ज़र्रों को सुन ली। हुज़ूर तशरीफ़ ले आए। क़ुरैश के घमंड व ग़रूर के झण्डे आप ही आप झुक गए।

क़ुरैश मुसलमानों की फ़ौज देख कर डरके मारे बदहवास हो गये । मुक़ाबला करने की किसी में हिम्मत न थी। उनके बहादुरी के बाजू आज शिथिल हो गये। तलवारों के जौहर आप ही आप घुमिल हुए जा रहे थे और साहस जवाब दे रहा था और अरब के पुश्तैनी आत्मसम्मान पर उदासी छा गई थी। मगर इस दशा में भी क़ुरैश की एक टोली से बर्दाश्त न हो सका। उसने हमला किया और कर्ज़ बिन जाबिर क़हरी और हब्स बिन अशअ़र दो सहाबियों को शहीद कर दिया। हज़रत ख़ालिद तलवार चलाना नहीं चाहते थे, वह देख चुके थे कि सअ़द बिन इबादा के यह वाक्य कि "आज घमासान का दिन है आज काबा हलाल कर दिया जाएगा," रसूलुल्लाह (सल्ल०) को पसन्द नहीं आए। लेकिन जब दूसरी तरफ़ तलवारें अपना काम कर रही थीं तरह देकर खामोश बैठे रहना और युद्ध के क़त्ल खून से नज़र बचाना किसी तरह उचित नहीं था। ख़ालिद ने भी तलवार का जवाब तलवार से दिया यहां तक कि कुफ़्फ़ार मैदान से भाग निकले। उनके तेरह आदमी काम आए और वह क़त्ल होने वालों की लाशें भी छोड़ गये।

ख़ालिद के तेवर क्रोध से भरे हुए थे, नंगी तलवार पर काफ़िरों के खून की लालिमा चमक रही थी। हुज़ूर (सल्ल०) ने ख़ालिद से पूछ गछ की। ख़ालिद और दूसरे सहाबी ने पूरी घटना बयान कर दी। मालूम हुआ कि जंग की शुरूआत काफ़िर क़ुरैश ने की थी। छेड़छाड़ उन्हीं की तरफ़ से हुई। हमलावर वहीं लोग थे। मुसलमानों को मजबूरी में अपनी सुरक्षा के लिए तलवार उठानी पड़ी। मुसलमान खामोश रहते तो खुद हरम में बद्र व उहद का इतिहास दुहराया जाता। इस सूचना के बाद हुज़ूर सल्ल० ने अपनी ज़बाने मुबारक से फ़रमाया "अल्लाह का हुक्म यही था।" मक्का में खैफ़ के स्थान को हुज़ूर के निवास का सम्मान मिला, खैफ़ बन हाशिम की उस उत्पीड़न और बेबसी का इतिहास अपने सीने में छुपाए हुए था, अब से चन्द वर्ष पहले जब कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने बनू हाशिम का पूरा बाईकाट कर दिया था और जहां यह खानदान ख़ुद रसूलुल्लाह की ज़ात समेत बन्दी बना हुआ था, यही वह स्थान था कि कल का घिरा क़ैदी आज का विजयी था। उन्होंने उसे क़ैद किया था और घेर रखा था आज उस की दया दृष्ट का मुहताज था। ज़माना करवट बदल चुका था । अरब का इतिहास दूसरे अन्दाज़ पर लिखा

जा रहा था और कुरैश के काफ़िरों की महानता के सितारे अब टिमटिमा रहे थे। सत्य बहुत दिनों तक उत्पीड़ित नहीं रह सकता। जुल्म की नाव सदा एक ही दिशा में नहीं बह सकती। असत्य के पुजारियों को एक निश्चित समय तक ढील दी जा सकती है। जब पाप का घड़ा भर चुका है तो एक हल्की सी लहर उसको डुबोने के लिए बहुत काफ़ी होती है। हमेशा से यही होता चला आया है। यह अल्लाह के क़ानून की रीत है जिसमें कभी परिवर्तन नहीं होता। रसूलुल्लाह (सल्ल०) खान–ए–काबा में तशरीफ़ लाए । हरम की दरोदीवार ने स्वागत किया। "सलाम ऐ मक्का और ताइफ़ के मज़लूम नबी सलाम" "दुरूद ऐ ओहद व बदर के ज़ख़्मी दुरूद" भूखा रहकर औरों को खिलाने वाले सख़ी (दानी) स्वागत खन्दक के पवित्र मज़दूर आप का स्वागत, इन्सानियत के सबसे बड़े ग़मख़्वार "सलात व सलाम"। वह काबा जिस की बुन्याद सय्यदना इब्राहीम अलैहिस्सलाम और इसमाईल अलैहिस्सलाम के पवित्र हाथों ने उठाई थी और जिन्होंने केवल एक खुदा की उपासना सारे संसार में आम की, मूर्ख और अज्ञानी कुरैश ने उसे बुतखाना बना रखा था। जगह जगह पत्थर और लकड़ी के बुत लगा रखे थे और दर व दीवार पर चित्र बने हुए थे हुजूर (सल्ल०) ने काबा में दाख़िल होकर यह आयत पढ़ी –

व क़ुल जाअलहक़्क़ु व ज़हक़ल बातिलु इन्नल बातिल कान ज़हूका० (बनी इस्राईल : ८१)

अनुवाद : ऐ मुहम्मद। आप कह दीजिए कि : हक़ (सत्य) आ गया और असत्य मिट गया। निःसन्देह असत्य मिटने का नाम है।

सच्चाराही खुद पढ़ें और दूसरों से पढ़वायें

(पृष्ठ १२ का शेष)

व्याकुलता और उकताहट का प्रमाण है जिसको सारी भौतिक सुख सुविधा प्राप्त है परन्तु उसकी आत्मा की शान्ति और हृदय के सुख का सामान नहीं। ऐसे व्यक्ति से इस प्रकार का व्यवहार कल्पना से दूर नहीं और न इस को केवल ख़ुदगर्ज़ी कहा जा सकता है। यूरोप में पागलपन के भयानक वृद्धि वास्तव में इसी मनो स्थिति का नतीजा है।

ज़रा कल्पना की जिए एक व्यक्ति जिसके पास कई कारें हैं, कई बंगले हैं, काफ़ी बैंक बैलेंस है। अब यदि ऐसे व्यक्ति को रूहानी तौर पर कोई कमी महसूस होती है और यह मनोस्थिति बढ़ती ही जाती है तो बताइये यह व्यक्ति क्या कर सकता है। मायूसी उसके दिल में बैठ जाती है, उसके अचेतन में एक अनजाना भया पैदा हो जाता है और धीरे धीरे उसके सारे तांतरिक और समझ सबंधी व्यवस्था को प्रभावित करती है।

वह अपने इस सारे साज़ व सामान से उकताने लगता है जो बहुत शान्दार, बहुमूल्य और विलास्तापूर्ण होने के बावजूद उसको शान्ति का एक क्षण और प्रेम का एक कण प्रदान न कर सके। वह नहीं जानता कि उसका परिणाम क्या होगा, संसार में उसका मिशन क्या है, वह इन्सान है या पशु । चुनानचः वह कभी कुत्तों के लिए एयरकंडीशन भवन बनवाता है, कभी जाइदाद कुत्तों के लिए वक्फ़ करता है। इससे भी शान्ति नहीं मिलती तो हवाई जहाज़ से छलांग लगाने की कोशिश करता है और कभी फोटो ग्राफ़रों और पत्रकारों को अपने फ़लैट में बुलाकर उनके सामने बहुत धैर्य से आत्महत्या का कर्तव्य सम्पन्न करता है।

यह सब काल्पनिक बातें नहीं, पश्चिमी सभ्यता और पश्चिमी जीवन की ठोस घटनाएं हैं जो बराबर पेश आती रहती हैं। कदाचित् कोई पश्चिमी खान्दान और घराना इससे अपवादित हो।

यह घटनाएं यदि एक तरफ़ स्वार्थ और भौतिकवाद, लालच और स्वाद प्रियता को प्रकट करती है तो दूसरी ओर वह पश्चिमी दुन्या के इस गम्भीर रूहानी सूनेपन की तरफ़ संकेत करती है जिसके कारण पूरे पश्चिमी संसार में निराशा और उकताहट का ज़हर फैल गया है। जब तक पश्चिमी सभ्यता भौतिक शक्ति की पूजा करती रहेगी यह भयानक ज़हर उनके जीवन में निरंतर फैलता रहेगा। पश्चिम की आत्मा बेचैन रहेगी और इसी के साथ पश्चिम का इन्सान भी हमेशा बेचैन रहेगा और तबाह व बरबाद होता रहेगा।

(अनुवाद हबीबुल्लाह आज़मी)

सरवरे काइनात

मु० सानी हसनी

ज़ात आली सिफ़ात
सरवरे काइनात
ख़ातिमुल अंबिया
साहिबे मुअ़जज़ात
पाक रू पाक तन
पाक दिल पाक ज़ात
ख़ुश नवा ख़ुश अदा
ख़ुश नज़र ख़ुश सिफ़ात
आप के ख़ुल्क़ से
खाई दुशमन ने मात
जिस की जानिब हुई
आपकी इल्तिफ़ात
हर ग़मो फ़िक्र से
उसने पाई नजात
आप का नाम है
हर तरफ़ शश जिहात
आप पर हर नफ़स
हों सलमो सलात

जिन्नात का परिचय

अबू मर्गूब

पीछे आ चुका है कि हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से नक़्ल किया कि काला कुत्ता शैतान है (मुस्लिम किताबुस्सलात, बाबुस्सुन्ना) ऐसा लगता है कि यह वैसे ही है जैसे ऊंट के विषय में कहा गया कि ऊंट शैतान से पैदा किये गये हैं (इब्ने माजा किताबुल मसाजिद) इस का यह मतलब कदापि नहीं है कि ऊंट शैतान की नस्ल से है। अगर ऐसा होता तो ऊंटनी पर न हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सवार होते न ईमान वालों के लिए ऊटों की सवारी की अनुमति होती, न उन का दूध हलाल होता और न गोश्त। इस का यही मतलब लिया जाएगा कि शयातीन ऊंटों के साथ ज़ियादा रहते हैं। इसी प्रकार काले कुत्ते के साथ भी। इसी कारण उसे शैतान कह दिया गया। हम लोग भी किसी पाजी उद्दंडी को शैतान कह दिया करते हैं अतः सम्भव है कि इस्तिआरः (व्यंजना) के भाव में कुत्ते और ऊंट को शैतान कहा गया हो परन्तु वास्तविकता तो अल्लाह ही जानता है।

सारे जिन्न मुकल्लफ़ (उत्तरदायी) नहीं :–

मुकल्लफ़ की परिभाषा से तात्पर्य उन लोगों से है जिनके लिये शरअ़ी क़ानून अनिवार्य है। उस पर चलेंगे तो पुरस्कारित होंगे न चलेंगे तो दंडित होंगे। एक रिवायत हज़रत अबू दरदा की आ चुकी है कि जिन्नों की एक क़िस्म वह है जिनका हिसाब व किताब होगा। (फ़त्हुलबारी जिल्द ६ पृष्ठ ३४५) इस रिवायत से ज्ञात हो रहा है कि सारे जिन्न मुकल्लफ़ न होंगे। अगर रिवायत सहीह़ हो तो कोई कठिनाई भी नहीं दिखती। हम इन्सानों में भी दीवाने, मज्जूब (भक्ति में मस्त) और बच्चे मुकल्लफ नहीं हैं।

पीछे आ चुका कि जिनों की एक किस्म सांप और कुत्तों के रूप में है दूसरी ठहरने और सफ़र (यात्रा) करने वाली तीसरी उड़ने वाली (बैहक़ी अल–अस्मा वस्सिफ़ात) इससे ऐसा ज्ञात होता है कि पहले वाली दो किस्में उड़ नहीं सकतीं परन्तु तीव्र गति शीलन शक्ति इन सब में अवश्य पाई जाती है। जब हम देखते हैं कि बिजली का करन्ट लम्बी से लम्बी दूरी आन की आन में तै कर लेता है। आवाज़ हवा के कान्धों पर रेडियों द्वारा लन्दन तथा अमरीका से उसी पल सुनाई पड़ जाती है तो सूक्षम तर अग्नि सृष्टि जिस में इरादा शक्ति भी है एक नगर से दूसरे नगर और एक देश से दूसरे देश आन की आन में तै करले तो पूर्णतया सम्भव है। पेछे गुज़री एक रिवायत से ज्ञात हुआ कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि "मदीने के घरों में मुसलमान जिन्न है। जब इस तरह के सांप घरों में दिखाई दें तो तीन बार उनको तंबीह कर के चले जाने का अवसर दो फिर दिखाई दें तो मार दो। (सहीह़ मुस्लिम, किताबुस्सलाम, बाब क़त्लि हय्यात, सारांश) परन्तु मुअत्ता इमाम मालिक किताबुल जामिअ़" की एक रिवायत से ज्ञात होता है कि कुछ बड़े विषैले सांपों को बिना किसी तंबीह (चेतावनी) के मार देने का आदेश दिया गया है। उनके मार डालने का कारण उनका भयंकर विष बताया गया है। इस रिवायत से यह बात समझ में आती है कि जिस सांप के विषय में निश्चित रूप से विश्वास हो कि वह विषैला है तो उसे बिना किसी चेतावनी के मार दें और याद रखें कि मुस्लिम जिन्न किसी विषैले सांप का रूप धारण कर के किसी मुसलमान घर में प्रकट होकर मुसलमानों को भयभीत न करेगा। और अगर उसने यह पाप किया तो वह स्वयं दण्डनीय है।

पिछले बयान में जो सहाबी ने मुस्लिम जिन्न सांप को मार दिया था उस समय तक ऐसा आदेश न आया था। दीहात के लोग जिन का सांपों से बराबर सम्बन्ध रहता है वह विषैले और बिना विष वाले सांपों को भली भांति पहचानते हैं। हमारे जवार में एक दुमकटा सांप होता है जो ज़हरीला नहीं होता। लग भग सभी ज़हरीले सांप धारी वाले होते हैं और फन फैलाते हैं। पनिहा सांप बिना विष के होता है। धामिन तथा अजगर भी विषैले नहीं होते परन्तु अजगर बड़ा भयंकर होता है, वह घरों में नही पाया जाता। आज कल स्कूलों में भी जीव विज्ञान में विषैले तथा विष रहित सापों का परिचय दिया जाता है।

सारांश यह कि विषैले सांप को तो सम्भव हो तो तुरन्त मार दें विष रहित को तीन बार की चेतनावी के पश्चात् मारें। परन्तु बच्चे बड़े सभी हर सांप से डरते हैं अतः न मारें तो जतन से घर से बाहर कर दें। लेकिन अगर कोई व्यक्ति विषैले और विष रहित का अन्तर नहीं जानता और घर में उस को सांप दिखा तो मेरी समझ में उसको चाहिए कि वह कहे कि मैं नहीं

(शेष पृष्ठ १६ पर)

उर्दू साहित्य के कुछ शिष्टाचारिक शब्दों का परिचय

इदारा

यूं तो हर भाषा में किसी भी व्यक्ति के नाम के साथ पूर्व तथा पश्चात कुछ मान सम्मान या प्रेम भाव प्रकट करने वाले शब्दों का प्रचलन है परन्तु उर्दू साहित्य में इस का रिवाज कुछ अधिक ही है वास्तव में यह इस्लामिक संस्कृति के शब्द हैं जो मुस्लिम उर्दू साहित्यकारों द्वारा उर्दू भाषा में आए हैं। चूंकि यह शब्द आम तौर से अरबी ज़बान के होते हैं इसलिए इन के अर्थ से साधारण लोग अपरिचित होते हैं। विशेषतया हिन्दी भाषियों के लिए यह शब्द वैसे ही कठिन होते हैं जैसे उर्दू वालों के लिए संस्कृत के शबद जब कि अब ७५ प्रतिशत पढ़ा लिखा मुस्लिम नवयुवक हिन्दी लिखता पढ़ता और इन शब्दों का शुद्ध या अशुद्ध प्रयोग करता है। अतः इस लेख में ऐसे ही कुछ शब्दों के अर्थ बताने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि हमारे बहुत से पाठकों को इससे लाभ होगा और यह लेख पसन्द किया जाएगा।

छोटों के नाम के साथ आरम्भ में लिखे जाने वाले शब्द और उनके अर्थ

अज़ीज़ी, अज़ीज़म, अज़ीज़े मन इन तीनों का अर्थ हुआ "मेरे प्रिय", नूरे नज़र=आंखों की ज्योति, लख़्ते जिगर=यकृतांश, जिगर का टुकड़ा। क़ुर्रतुलऐन=आंखों की ठंडक, मुहिब्बी, मुहिब्बे मन=मेरे प्रिय।

छोटों के नाम के अंत में लिखे जाने वाले शब्द और उनके अर्थ–

सल्लमहू, सल्लमहुल्लाहु, सल्लमहुल्लाहु तआ़ला=उसको अल्लाह तआला हर प्रकार से सुरक्षित रखे। तूल उम्रुहू=उसकी आयु लम्बी है। ताल उम्रहू=उसकी उम्र लम्बी हो। अतालल्लाहु उम्रहू=अल्लाह उसकी आयु लम्बी करे। ज़ाद लतफ़ुहू = उसके आनन्द में वृद्धी हो। ज़ीद लुतफ़ुहू उसका आनन्द बढ़ा दिया जाए।

अन्त में कभी "हु" या "हू" के स्थान पर 'क' लाया जाता है–

इस हु या हू का अर्थ 'उसको लिया जाता है जबकि 'क' से आपको या तुम को समझा जाता है।

उदाहरण – अज़ीज़म मुहम्मद तारिक़ सल्लमहुल्लाहु तआ़ला को भी बुलाना है।

अर्थ – प्रिय मुहम्मद तारिक (अल्लाह तआ़ला उसको हर प्रकार सुरक्षित रखे) को भी बुलाना है।

मुहिब्बी खालिद सल्लमकल्लाहु तआ़ला फ़ौरन अपनी ख़ैरियत लिखो। अर्थ– मेरे प्रिय ख़ालिद अल्लाह तआ़ला तुम को सलामत रखे तुरन्त अपना हाल लिखो।

बराबर वालों के नामों के साथ आरम्भ में आम तौर से ब्रादरम या ब्रादरे मन लिखते हैं दोनों का अर्थ हुआ मेरे भाई इसके पश्चात जनाब भी लिखा जाता है जो श्री या श्रीमान का अर्थ देता है। आरम्भ मे मुहतरम, मुहतरमी, मुकर्रम या मुकर्रमी लिखने का भी रिवाज है। जिस का अर्थ आदरणीय है। मुहतरमी तथा मुकर्रमी के अन्त की ई की मात्रा 'मेरे' के अर्थ में है। नाम के पश्चात बराबर वाला हो या बड़ा सब के साथ साहिब अवश्य लिखा जाता है। उर्दू साहित्य में यह शब्द ऐसा रिवाज पा चुका है कि बराबर वाले या बड़े के नाम के साथ साहिब न लगाना बड़े दोष की बात समझी जाती है और साधारणतया इस का अर्थ "मान सम्मान वाला" लिया जाता है।

साहिब अ़रबी शब्द है जिस प्रकार उर्दू में आदरणीय नामों के साथ प्रयोग किया जाता है अ़रबी में इस प्रकार प्रयोग नहीं है। साहिब का एक अर्थ साथी है, दूसरा अर्थ मालिक अथवा अधिकार प्राप्त है, इसी से मिलता हुआ "वाला" का अर्थ भी लिया जाता है जैसे साहिबुल ग़नमि= बकरियों वाला, साहिब बैत– घर मालिक, इन संयुक्त शब्दों में, साहिब अधिकारी है। तथा दूसरा भाग अधिकार सम्बन्धी है इन शब्दों में साहिब के पश्चात जो "ल" है वह अ़रबी शब्द 'अल' है जो व्यक्तिवाचक संज्ञा का चिन्ह है। उर्दू में जो नामों के साथ साहिब लिखा जाता है यह अधिकारी है इसके पश्चात अधिकार सम्बन्धी शब्द छुपा माना जाता है जो नाम वाले के अनुसार समझा जा सकता है जैसे साहिबुस्सआ़दति–अच्छी क़िसमत वाला, साहिबुल फ़ज़ीलति – बड़ाई वाला (गुणवान) आदि।

बराबर वालों के नामों के साथ

आमतौर से साहिब के पश्चात कुछ और नहीं लिखा जाता है लेकिन कुछ लोग ज़ाद लुतफ़ुहू या ज़ीद लुतफ़ुहू लिख देते हैं जिनका अर्थ पीछे आ चुका है। कुछ लोग हफ़िज़हुल्लाह, या हफ़िज़कल्लाहु लिखते हैं जिसका अर्थ हुआ अल्लाह उसकी रक्षा करे, अल्लाह आप की रक्षा करे।

बड़े के साथ बहुत से शब्द लिखे जाते हैं यहां कुछ शब्द लिखकर उनके अर्थ लिखे जा रहे हैं।

मद्द ज़िल्लुहू या दामज़िल्लुहू– उनकी छांव लम्बी हो अर्थात उनकी आयु लम्बी हो। मर्द के साथ अन्त में हू लाते हैं और औरत के लिए हा।

ज़ाद इनायतुहू – उनकी कृपाएं अधिक हों।

दामत बरकातुहू – उनकी कृपाएं बाक़ी रहे अर्थात वह जीवित रहें। दाम फैजुहू– उनका उपकार बाकी रहे। कोई सत्ता पद वाला हुआ तो उसके लिए लिखते हैं – दाम इक़बालुहू अर्थात उसका इक़बाल बढ़े। (इक़बाल – प्रताप)

मज़हबी शख्सियात (धार्मिक सज्जनों) के आरम्भ में शब्द "हज़रत" लगाते हैं यह श्रीमान की भांति है परन्तु उससे कुछ ऊंचा है जिसका अर्थ है "आप वह हैं जिस के पास बहुत से लोग हाज़िर (उपस्थित) हुआ करते हैं।

जिस मुसलमान का देहान्त हो चुका होता है अगर वह साधारण आदमी है तो मर्द के साथ मर्हूम और औरत के साथ मर्हूमा लिखते हैं। अर्थ हुआ रहम किया हुआ, अर्थात वह मृतक व्यक्ति (मर्द या औरत) अल्लाह की कृपा में है।

यदि मृतक मुसलमान महापुरूषों (बुजुर्गों) में है तो आमतौर से रहमतुल्लाहि अलैहि या रहिमहुल्लाहु और औरत के लिए रहमतुल्लाहि अलैहा या रहिमहल्लाहु लिखते हैं जिसका अर्थ है उन पर अल्लाह की रहमत हो, अल्लाह उन पर रहम फ़रमाए।

अल्लाह के रसूल के सहाबी के नाम के पश्चात रज़ियल्लाहु अन्हु और सहाबिया हों तो रज़ियल्लाहु अन्हा लिखते हैं। अर्थ हुआ अल्लाह उनसे राज़ी हो गया। यह याद रहे कि दुआ वाला शब्द यदि भूत काल में हो तो भी उसका अर्थ भविष्य का लिया जाता है। अतः रज़ियल्लाहु अन्हु का अर्थ "अल्लाह उन से राज़ी हो" भी हो सकता है।

किसी नबी या फ़िरिश्ते के नाम के पश्चात अलैहिस्सलाम लिखते हैं अर्थ हुआ उन पर अल्लाह की सलामती हो। कभी अलैहिस्सलात व स्सलाम लिखते हैं अर्थात उन पर अल्लाह की रहमत और अल्लाह की ओर से सलामती उतरे। अल्लाह के आखिरी नबी हज़रत मुहम्मद के नाम के पश्चात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लिखा और कहा जाता है। मुसलमानों के नज़दीक हज़रत मुहम्मद के नाम के पश्चात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहना वाजिब (अनिवार्य) है।

आमतौर से लोग रहमतुल्लाहि अलैहि के स्थान पर (रह०) रज़ियल्लाहु अन्हु के स्थान पर (रज़ि०) अलेहिस्सलाम के स्थान पर (अ०)और सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के स्थान पर (स०) लिखते हैं जो लोग इन संकेतों को समझते हैं उनको चाहिए कि वह पूरा वाक्य कह लिया करें। परन्तु उलमा ने सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के स्थान पर (स०) लिखने से रोका है। फिर भी यदि कहीं सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के स्थान पर (स०) लिखा हो तो पढ़ने वाला अगर मुसलमान है तो सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़रूर पढ़े वरना गुनहगार होगा।

अन्त में यह बताना आवश्यक है कि यह तमाम शब्द अरबी भाषा के हैं यह एक वचन, द्विवचन, बहुवचन, पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग एवं उत्तम पुरूष, मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष के अनुसार शब्दों में थोड़ा बदलाव आ जाता है जिस को अरबी जानने वाले ही समझ सकते हैं अतः यदि यहां लिखे शब्दों से भिन्न शब्द मिलें तो अनुवाद उसके अनुसार होगा। यह भी याद रहे कि यहां साधारणतया प्रयोग होने वाले कुछ शब्दों का परिचय दिया गया है अरबी जानने वाले इनके अतिरिक्त शब्दों का भी प्रयोग करते हैं।

0522-264646
Bombay Jewellers
The Complete Gold & Silver Shop
84, Victoria Street, Akbari Gate, Lucknow.

0522-508982
Mohd. Miyan
Jwellers
एक भरोसेमन्द सोने चान्दी के जेवरात की दुकान
1-2 Kapoor Market, Victoria Street, Lucknow-226003

आपकी समस्याएँ और उनका हल

मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

प्रश्न : एक औरत पर हज़ फ़र्ज़ हो चुका है। शौहर का इन्तिक़ाल हो चुका है हज़ के सफ़र में जाने के लिए कोई महरम मर्द नहीं मिल राह है। पड़ोस के एक साहिब अपनी बीवी के साथ हज को जा रहे हैं क्या उनकी बीवी के साथ मज़कूरा औरत हज को जा सकती है?

उत्तर : औरत के लिए सफ़र बिना शौहर या महरम मर्द के जाइज़ नहीं वह किसी औरत के साथ भी अपने शौहर या महरम मर्द के बिना सफ़र नहीं कर सकती लिहाज़ा किये गये सवाल में पड़ोसी मर्द अगर इस औरत का महरम नहीं है तो उसकी बीवी के साथ भी इस औरत का हज के सफ़र पर जाना जाइज़ न होगा।

प्रश्नः आज कल हज में बड़ी भीड़ होती है ख़ास तौर से रमी में बड़ी मुश्किलात आती हैं। क्या ऐसी सूरत में कोई औरत रमी के लिए किसी को अपना वकील बना सकती है?

उत्तर : भीड़ का होना कोई शरअी उज़्र नहीं है। इसलिए वकील बनाना दुरूस्त नहीं। ऐसी हालत में शरीअत ने, ऐसे वक़्त में रमी की गुंजाइश रखी है जब कि भीड़ न हो अर्थात रात में रमी कर सकती है।

प्रश्न : हज्जे बदल के लिए क्या यह जरूरी है कि जो शख्स हज्जे बदल पर जा रहा है वह अपना हज कर चुका हो?

उत्तर : ज़रूरी तो नहीं लेकिन बेहतर यही है कि ऐसे व्यक्ति को हज्जे बदल पर भेजा जाए जो अपना फ़र्ज़ अदा कर चुका हो।

प्रश्न : क्या ऐसे शख़्स को हज्जे बदल पर भेजा जा सकता है जिस पर अपना हज फ़र्ज़ न हो?

उत्तर : इसमें भी बेहतर वह व्यक्ति है जिसने अपना हज फ़र्ज अदा कर लिया है परन्तु जिस पर हज फ़र्ज़ न हो उसको भी हज्जे बदल पर भेजना जाइज़ है।

प्रश्न : एक नेक आदमी बाल बच्चों वाले हैं मेहनत मज़दूरी से गुज़र करते हैं। एक साहिब ने हज्जे बदल के लिए उन का इन्तिखात किया क्या वह हज्जे बदल के मसारिफ़ के साथ हज्ज के ज़माने तक का अपने बाल बच्चों के लिए खर्च का मुतालबा कर सकते हैं?

उत्तर : ऐसे आदमी को अपने बाल बच्चों के लिए हज्ज के ज़माने तक के खर्च का मुतालबा करना तो दुरुस्त नहीं परन्तु भेजने वाले को अधिकार है चाहे तो दे सकता है।

प्रश्न : मस्जिदे नबवी में दाख़िले पर पहले तहीयतुल मस्जिद की दो रकअतें पढ़ना चाहिए या पहले हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रौज़े पर हाज़िर हो कर सलाम पेश करना चाहिए?

उत्तर : मस्जिद में दाखिल होने की वजह से पहले तहीयतुल मस्जिद पढ़ें फिर रौज़े पर हाज़िर हो कर सलाम पेश करे।

प्रश्न : हज की कुर्बानी में आम तौर से कुर्बानी कर के जानवर यूं ही छोड़ दिया जाता है। न कोई गोश्त ले जाता है न खाल काम में आती है मगर मालूम हुआ है कि वहां कोई इस्लामी बैंक है जो हाजियों से पैसे लेकर उनकी तरफ़ से कुर्बानी कर के गोश्त ग़रीब इस्लामी मुल्कों में भिजवाता है। उस बैंक के जरिये कुर्बानी करवाने में कोई हरज तो नहीं है?

उत्तर – कुर्बानी खुद करे या बैंक के ज़रिये दोनों तरह जाइज़ है अल्बत्ता तर्तीब (अर्थात रमी के बाद कुर्बानी) का लिहाज़ करना चाहिए।

प्रश्न : क्या हज्जे बदल करने वाला व्यक्ति तमत्तों कर सकता है या नहीं।

उत्तर – इसमें इख़्तिलाफ़ है परन्तु सही यही है कि तमत्तों नहीं कर सकता।

प्रश्न : एक साहिब जिनका वतन फतेहपुर है तिजारत के लिए शारजा में रहते हैं वहीं इन्तिकाल कर गये तो उनका हज्जे बदल वतने असली (फतेहपुर) से कराना चाहिए या शारजा से अगर शारजा से भेजा जाएगा तो सही होगा या नहीं।

उत्तर – प्रश्ननानुसार दोनों जगह से हज्जे बदल कराना जाइज़ है।

प्रश्न : एक व्यक्ति हज्ज को जा रहा है उसके ज़िम्मे दूसरों के हुकूक की रक़म भी है आप कुर्आन व हदीस की रोशनी में बताए कि ऐसे व्यक्ति का हज्ज कुबूल होगा या नहीं ?

उत्तर – अगर यह व्यक्ति अपनी जाइज़ कमाई और अपने पैसों से हज करेगा तो हज अदा हो जाएगा किसी का हक़ दबा लेने का गुनाह उस पर बाकी रहेगा और अगर ग़सब की हुई (ग़लत तरह सी ली हुई) रक़म से हज करेगा तो ज़िम्मे से हज उतर जाएगा मगर हज मक़बूल न होगा।

इस्लाम में हलाल कमाई की मान्यता और बेकारी व भीख की मनाही

मौलाना अब्दुल्ला अब्बास नदवी

एक मिसाली और सच्चा मुसलमान वह है जो हलाल रोज़ी के लिए जायज़ तरीक़े अपनाए। स्वयम् अपनी मां–बाप, बीवी बच्चों को आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयासरत हो। इस क्रम में अल्लाह के रसूल सल्ल० के निर्देश व नसीहतें और व्यावहारिक नमूने निम्नलिखित हदीसों से मालूम होंगे :–

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया – "कोई भी इन्सान ऐसा खाना नहीं खता जो उसकी मेहनत मजदूरी से कमाये हुए खाने से बेहतर हो। अल्लाह के नबी हज़रत दाऊद अलै० अपनी रोज़ी अपनी मेहनत से कमाते थे।" (बुख़ारी)

दूसरे मौक़े पर आप सल्ल० ने फरमाया – "बेहतरीन रोज़ी कमाने का ज़रिया (साधन) वह है जो अपने हाथों से हासिल किया गया हो।" (मुसनद इमाम अहमद बिन हंबल)

इमाम बैहक़ी रह० कुर्आन की सूरः जुमा की दसवीं आयत, जिसका तर्जुमः है "फिर जब नमाज़ हो चुके तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़्ल (कृपा) तलाश करो और अल्लाह को बहुत याद करो ", की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि नमाज़ पढ़ने के बाद महत्वपूर्ण कर्तव्य यह है कि एक मुसलमान हलाल रोजी हलाल तरीक़ों से हासिल करे। यही नहीं बल्कि जो व्यक्ति अपने पर निर्भर व्यक्तियो के लिए रोज़ी और राहत के सामान के लिए प्रयास करता है और अपने आप को किसी के सामने हाथ फैलाने से रोकता है, उसके लिए एक मुजाहिद (तपस्वी) का प्रतिफल है।

तिबरानी और बैहक़ी ने उल्लेख किया है कि :– एक व्यक्ति जो शारीरिक रूप से स्वस्थ और मज़बूत हाथ पैर का था, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु, अलैहि व सल्लम के सामने से गुज़रा। सहाबा ने कहा काश ऐसा व्यक्ति जिहाद में शरीक होता। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया–

"अगर यह व्यक्ति अपने बच्चों के पालन पोषण के लिए हलाल तरीके से रोज़ी की तलाश में निकला है तो यह भी अल्लाह की राह में गिना जायेगा, और अगर अपने बूढ़े मां–बाप के लिए कमाने निकला है तो यह भी, अल्लाह के रास्ते में इसका जिहाद है और अगर इस लिए किनला कि इतनी रोज़ी अपनी मेहनत मज़दूरी से हासिल करले कि लोगों के सामने शर्मिन्दा न होना पड़े तो यह भी जिहाद है। हां अगर दिखावे और नुमाइश के लिए निकला है तो वह शैतान की राह में है।"

यह बात अल्लाह के रसूल सल्ल० की दिनचर्या में शामिल थी कि अगर किसी ऐसे व्यक्ति को देखते जो स्वस्थ है फिर भी अपनी ग़रीबी का रोना रोता है तो उसके लिए आप सल्ल० जीविका उपार्जन का साधन तलाश करते और उसको भीख मांगने के अपमानसे सुरक्षित रखने का प्रयास करते । सुनने इब्ने माजः की एक रिवायत है :–

"एक व्यक्ति अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास आया और अपनी हाजतमन्दी का इज़हार किया, अपनी ज़रूरत बताई। आपने पूछा तुम्हारे घर में कोई सामान है ? उसने कहा एक भद्दी सी चादर है जिस में से आधी को बिछाता हूं और आधी को ओढ़ लेता हूं और लकड़ी का प्याला है। आप सल्ल० ने हुक्म दिया कि यह दोनों चीज़ें ले आओ। आपने इन दोनों चीजों को अपने हाथ में लिया और सहाबा को सम्बोधित करके फ़रमाया, कौन इन दोनों को ख़रीदता है? एक व्यक्ति ने कहा मैं एक दिरहम में खरीद सकता हूं। आप सल्ल० ने फरमाया, कोई है जो इससे अधिक क़ीमत दे? दो या तीन बार आपने एलान फ़रमाया। इस पर एक व्यक्ति ने कहा आज मैं दो दिरहम दे सकता हूं। आप ने उस की बोली पर नीलाम ख़त्म कर के सामान उसके हवाले किये और दो दिरहम लेकर माल के मालिक को दिये और कहा, इन दो दिरहमों में से एक दिरहम में अपने बच्चों के लिए खाने की चीज़ें खरीद लो, और एक दिरहम से जाकर कुल्हाड़ी ख़रीद लाओ। वह व्यक्ति गया और एक कुल्हाड़ी ले आया। उस कुल्हाड़ी में लकड़ी का बेंट नहीं था, सिर्फ लोहे का फल था। आप ने एक लकड़ी उठा कर अपने हाथ से उसमें बेंट लगाया उसको कसा और उन सहाबी को देकर फ़रमाया, जाओ इससे जंगल जाकर लकड़ी काट लाओ और बाजार में बेचो। और अब आज से पन्द्रह दिन तक अपना मुंह न दिखाना। उन सहाबी ने ऐसा ही किया। पन्द्रह दिन बाद आये तो दस दिरहम उनके पास थे। कुछ कपड़े खरीदे, कुछ खाने पीने का

(शेष पृष्ठ ३४ पर)

प्रेम सन्देशा

सच्चा राही आया है।
प्रेम सन्देशा लाया है।।
जिसमें प्रेम का अंश नहीं।
वह मानव का वंश नहीं।।
प्रेम मुहम्मद के रब से।
प्रेम नबीये अहमद से।।
वह हैं नबी सब से उत्तम ।
सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम।।
प्रेम नबी की आल से।
उनकी सब अ़याल से।।
रहम इलाही हो उन पर।
फ़ज़्ल इलाहि हो उन पर।।
प्रेम ईश के दूतों से।
और उनके सन्देशों से ।।
प्रेम हमें कुर्आन से।
निर्णायक फुर्क़ान से।।
प्रेम नबी की सुन्नत से।
प्रेम नबी की उम्मत से।।
प्रेम नबी के मित्रों से।
सत्य धर्म के पुत्रों के।।
अबू बक्र सिद्दीक़ से।
और उमर फ़ारूक़ से।।
हयादार उसमान से।
और अ़ली ज़ीशान से।।
हमज़ा और अब्बास से।
सअ़द अबी वक़्क़ास से।।
प्रेम जुबैर अ़व्वाम से।
और अ़ब्दुर्रहमान से।।
प्रेम अबू उबैदा से।
और सईद व तलहा से।।
प्रेम हमें हसनैन से।
यानी हसन हुसैन से।।
नबी के सब असहाब से।
नारी और नर जाति से।।
रब की रज़ा उन सब ने पाई।
रब के फ़ज़्ले ख़ास से।।
प्रेम ईश के भक्तों से।
सत्य मार्ग के सन्तों से।।
प्रेम पिता और माता से।
प्रेम बहन और भ्राता से।।
पति का प्रेम हो पत्नी से।
पत्नी का हो पति जी से।।
प्रेम हर इक सम्बन्धी से
प्रेम अकारण बन्दी से।
प्रेम गुरू और विद्या से।
प्रेम नहीं पर मिथ्या से।।
प्रेम कार्य के साथी से।
प्रेम हर इक सहपाठी से।।
प्रेम हमें परिश्रमी से।
प्रेम हमें सत्कर्मी से।।
प्रेम हर इक इन्सान से।
आदम की सन्तान से।।
प्रेम हो अपने देश से।
देश के इक इक खेत से।।
प्रेम देश के नेता से।
प्रेम देश की जनता से।।
प्रेम पशु और पक्षी से।
प्रेम हो सारी सृष्टि से।।
प्रेम हो हम को शांति से
उन्नति वाली क्रांति से।।
प्रेम हो ध्यान और ज्ञान से।
लाभ जनक विज्ञान से।।
प्रेम न शिर्को बिदअ़त से।
प्रेम न कुफ़्री मिल्लत से।।
प्रेम नहीं शैतान से।
प्रेम नहीं अभिमान से।।
प्रेम न झूठे लीडर से।
राजनीति के गीदड़ से।।
प्रेम नहीं परत्रिया से।
प्रेम नहीं कुकिया से।।
प्रेम नहीं धन दौलत से।
प्रेम नहीं कुसंगत से।।
प्रेम न भ्रष्टाचार से।
प्रेम न अत्याचार से।।
प्रेम न पक्षपात से।
प्रेम न छल उत्पात से।।
प्रेम न रक्तापात से।
प्रेम न आतंकवाद से।।
प्रेम न डाका चोरी से।
प्रेम न रिश्वत ख़ोरी से।।
प्रेम न छूतावाद से।
प्रेम न वर्णावाद से।।
प्रेम नहीं कुकर्मों से।
प्रेम नहीं बेधर्मों से।।
गीत प्रेम के गाओ तुम।
सत्य प्रेम अपनाओ तुम।।

औलाद के लिए दुआ

ख़ैरुन्निसा बेहतर

ऐ ख़ुदाए दो जहाँ,
ऐ ख़ालिक़ अर्ज़ो समा।
ऐ मेरे मोनिस मेरे,
रहबर मेरे हाजत रवा।।
है तेरा फ़रमान यह,
कुर्आन में रब्बेमुजीब।
कि पुकारें जब मेरे,
बन्दे मैं होता हूं क़रीब।।
हो मेरी औलाद या रब,
दो जहां में बहरः मन्द।
और मेरी औलाद का,
आलम में रुत्बा हो बुलन्द।।
ख़िदमते इस्लाम से,
कर उनको या रब फ़ैज़याब।
और खुला हर दम रहे,
उनके लिए नुसरत का बाब।।

कुर्आन में सौर्य जगत

मौलाना अब्दुल करीम पारेख

अल्लाह ने आज से लगभग १४७५ वर्ष पहले अन्तिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को भेजा। अब दुन्या के अन्त तक तमाम इन्सानों के लिए आप (सल्ल०) ही मार्गदर्शक तथा अल्लाह के नबी हैं।

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर एक ग्रंथ पवित्र कुरआन उतारा गया। इस किताब के आ जाने पर पिछले दौर के लोगों ने खोज–तहक़ीक़ात की दुन्या में जहां–जहां ठोकरें खायीं और जहां जहां कामयाब हुए, इसका पूरा खुलासा पवित्र कुरआन में अलहम्दु लिल्लाह बयान कर दिया गया है, जिनसे कायनात सम्बन्धी ग़ौर फिक्र, सोच विचार का अस्ल दरवाज़ा खुला और सच्चा एवं सत्यनिष्ठ ज्ञान इन्सानों के हाथ आया।

पवित्र कुरआन की रौशनी में हर चीज़ को परख लेना, खोज एवं संशोधन की निगाह से सृष्टि सम्बन्धी मालूमात प्राप्त करना इन्सान के लिए आसान हो गया और अब तक जो उल्टी सीधी जानकारी और गलत सलत बातें मशहूर हो गयी थीं, उनका पूर्ण रूप से खंडन पवित्र कुरआन के अवतरण के बाद सम्भव हुआ, परिणामतः सच्चे ज्ञान एवं संशोधन का रास्ता अलहम्दु लिल्लाह खुल गया।

हर एक गतिशील है

"सब के सब अपने अपने दायरे में तैर रहे हैं" (यासीन : ४०)

यह फरमाकर सर्वश्रेष्ठ अल्लाह ने ज्ञान के गलत स्तर को बेनकाब कर दिया और केकड़े की पीठ, गाय की सींग वाले दृष्टिकोण से मनुष्य को हटा दिया।

इसी प्रकार आज के इस दौर में साइंस और टेक्नोलॉजी के तहत इन तमाम संशोधनों को तौलने परखने के लिए एक मीज़ान (तराजू) और बोध प्रदान करने वाली किताब हमारे हाथ आ गयी तथा ज्ञान एवं संशोधन के उचित आधारों और उसके परिणामों का अल्हम्दु लिल्लाह दरवाज़ा खुल गया।

"यह (कुरआन) तुम्हारे रब की ओर से तमाम इन्सानों के लिए सत्य बात को खुली आंखों से देख लेने का ज़रीया है और साफ रास्ता एवं भरपूर रहमत (कृपा) भी ।" (७ अअ़राफ, आयत – २०३)

बुरुज (राशि)

सर्वश्रेष्ठ अल्लाह ने जो आसमानी किताब, अन्तिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर अवतरित की उसमें एक स्थान पर फरमाया –

"और हमने आसमान में सितारों की मंजिलें निश्चित कर दीं और देखने वालों के लिए आसमान को शोभा एवं सजावट प्रदान की।" (१५ अल हिज्र–आयत–१६)

आकाशीय वातावरण में ग्रह–तारों की गर्दिश के स्थान और विस्तार को बुरुज अर्थात राशि कहा गया हो, यह भी सम्भव है। पवित्र कुरआन में एक स्थान पर यह भी फरमाया गया –

"मज़बूत किले बन्द आसमान की कसम है।' (८५ अल बुरुज–आयत–१)

अ़रबी भाषा में 'बुरुज' शब्द मज़बूत किलों के लिए प्रयोग किया गया है। ज़मीन पर बसने वाले किसी मर मिटने वाले राजे महाराजे के किले और लाल किले इन आयात में मुराद (अभिप्रेत) नहीं, बल्कि वह तो सर्वोपरि महान रचियता के बनाये हुए और इन्सानी अक्ल को हैरान कर देने वाले ज़बरदस्त भारी भरकम ग्रह तारे मुराद है। इन्हीं में से एक ग्रह जुहरा (शुक्र) है जिसे अंग्रेजी में **Venus** कहा जाता है।

यह ग्रह सूरज से दस करोड़ अस्सी लाख किलोमीटर की दूरी पर अधर, वातावरण में घूम रहा है, अपनी धुरी पर एक गर्दिश अर्थात एक फेरा २४३ दिन चार घण्टे में पूरा करता है और सूरज के गिर्द इसका चक्कर २२४ दिन ७० घण्टे में पूरा होता है और इस ग्रह का व्यास (Diameter) १२,१०४ (बारह हज़ार एक सौ चार) किलोमीटर है।

नित नयी शान

इस तफसील तथा मालूमात की रौशनी में किसी अक्ल वाले इन्सान को यह फैसला करने में देर न लगेगी कि वह हस्ती वाकई अस्तित्व में है और सर्वज्ञानी रचियता है, जिसकी नित नयी रचनाओं का सिलसिला अब भी जारी है।

पवित्र कुरआन में फरमाया गया है–

"उसकी शान यह है कि हर दिन काम में व्यस्त है, अर्थात उसके हर काम में एक नई शान है।"

(५५ सूरह रहमान, आयत–२६)

ग्रहों की अपनी कक्षा में गर्दिश, सूरज की प्रदक्षिणा वाली गर्दिश, उसका व्यास और सूरज से दूरी का अन्तर वगैरा तफसील आज तक इन्सानी मेहनत और खोज से जितना कुछ मालूम हो सका है, इससे कई करोड़ गुना ज़ियादा जानकारी इन्सान को प्राप्त होना अभी बाकी है, जैसे कि फुलां सितारे की अस्ल हक़ीक़त क्या है? उस पर प्राणी मात्र का अस्तित्व है या

नहीं? ज़िन्दगी के चिराग की रौशनी इसमें है या नहीं ? जो मनुष्य ऐसी सजी संवरी कायनात में ज़िन्दगी के दिन पूरे कर रहा है और जिसका एक दिन मर जाना निश्चित हो और फिर इस हक़ीक़तों को जानने के बाद क्या कोई इन्सान अपने रब की वहदानियत अर्थात उसके एक मात्र ईश्वर एवं उपास्य होने का इन्कार कर सकता है?

अज्ञानता, प्राचीन और आधुनिक

आइये, अब हम एक और ग्रह का परिचय आप से कराते हैं, जिसे मिर्रीख़ (मंगल) कहा जाता है और अंग्रेजी नाम **Mars** है, जो २२,७६,००००० (बाईस करोड़, उन्यासी लाख) किलोमीटर, सूरज से दूर है।

संस्कृत वालों ने इसका नाम मंगल ग्रह रखा है। लश्कर या लश्करों का पड़ाव जैसा नाम भी बताया गया है। कुछ लोगों ने इस ग्रह को "रण देवता" भी कहा है। अर्थात लड़ाई में दुश्मनों के मुकाबले में विजय प्राप्ति देने वाला देवता।

तौबा तौबा, इन्सान भी, अल्लाह के सिवा दूसरों को उपास्य मानने में शैतान का चचा निकला, साइंस और खोज संशोधन की दुनिया होते हुए भी हमारे दौर के नास्तिक अगर खुदा को न पुकार सकें तो मौजूदा दौर में पैटर्न टैंक, हवाई जहाज़ और एटम बम को पुकार कर पूछ लें कि "रण देवता" कौन है?

जवाब तो ज़ाहिर है कोई देने से रहा, अलबत्ता इस दौर के लोगों को अल्लाह की दी हुई अक्ल और बसीरत (अंतरदृष्टि) से काम लेना चाहिए वरना डर है कि पुरानी अज्ञानता और आधुनिक अज्ञानता में फर्क न रहेगा।

६८७ दिन में एक चक्कर

Mars अर्थात मंगल ग्रह की अधिक मालूमात यह है कि अपने मेहवर (कील) पर यह ग्रह २४ घण्टे ३७ मिनट में एक फेरा पूरा करता है। इसका व्यास ६७६४ किलोमीटर हैं ये तमाम तफ़्सील और मालूमात देखकर मानव बुद्धि के आश्चर्य की कोई सीमा न रहेगी। कुछ लोगों ने अपनी कल्पना से इस ग्रह को बिच्छु जैसा मान कर "वृश्चिक" नाम दिया। अरबों ने भी इसका नाम "अक़रब" (बिच्छू) रखा है। मुमकिन है कि इस ग्रह का आकार एवं इसका विस्तार बिच्छू समान हो।

७७ करोड़ ८३ लाख किलोमीटर का फासला

विख्यात उर्दू कवि अल्लामा इकबाल के इस कथ्न "सितारों के आगे जहां और भी है" के अनुसार, हम एक और ग्रह का परिचय आपसे कराते हैं। उर्दू में इसे 'मुश्तरी' कहते हैं और अंग्रेजी में इसे **Jupiter** कहा जाता है।

जो बहुदेववादीय धारणा रखते थे, उन्होंने इसे 'इन्द्र देवता' मान लिया और कुछ लोगों ने इसे 'गुरु ग्रह' नाम दे दिया। शायद गुरू और उस्ताद लोग वहां रहते हों। कुछ लोगों ने इसे मछली की शक्ल का मानकर "हूत" नाम रखा और जिन्होंने इसे तीर कमान जैसा समझा, उनकी राय में इसका नाम "कौस" है। सम्भवतः ये सारे नाम बनावटी और काल्पनिक हों।

जिस तरह सृष्टि की समस्त चीज़ें अल्लाह के हुक्म की ताबेदार हैं, उसी तरह यह ग्रह भी सर्वज्ञानी रचयिता के हुक्म का ताबेदर है लेकिन कुछ लोगों ने इसको अपना देवता मान लिया। बहुदेववादीय श्रद्धा की यही सबसे बड़ी शिकस्त है कि अल्लाह को पहचानने की निशानियों को उसी की ईशता में शामिल करके उनकी उपासना की जाने लगी।

इस तरह इन्सानों ने अपना माथा, अनेक ईश्वरों की आराधना से कलंकित कर लिया।

गुरू (Jupiter) ग्रह वातावरण में सूरज से ७७ करोड़ ८३ लाख किलोमीटर के फासले पर अपनी जगह बनाये हुए हैं। इसे अपनी कक्षा में एक मर्तबा घूमने में ९ घण्टे और ५० मिनट का वक्त लगता है और ग्यारह साल दस महीने में सूरज के गिर्द एक चक्कर लगाता है और इसका व्यास (Diameter) १,४२,०२८ (एक लाख बयालिस हज़ार अट्ठाइस) किलामीटर है।

२९ साल ६ महीने में एक फेरा

सूरज के गिर्द फेरा लगाने वाले ग्रहों की आश्चर्यकारक मालूमात को पढ़कर आप हैरत के घेरे में आये होंगे, लेकिन अपने होश–हवास को संभालें, एक और ग्रह का परिचय हम आपसे कराना चाहेंगे। यह ग्रह 'जुहल' के नाम से मशहूर है, जिसे हिन्दी भाषा में "शनि" कहते हैं तथा अंग्रेजी में **Saturn** नाम से पहचाना जाता है।

सूरज और इस ग्रह के बीच १,४२,००,००,००० (एक अरब बयालिस करोड़) किलोमीटर का अन्तर है। वह अपनी कक्षा में १० घण्टे ३९ मिनट में एक फेरा पूरा करता है, और सूरज के गिर्द एक – चक्कर लगाने में उसे २९ वर्ष ६ महीने का समय लगत है। इसका व्यास १,२०००० (एक लाख बीस हज़ार) किलोमीटर है।

अब इन्सानों की नादानी देखिए कि रोमन लोगों ने इस ग्रह को अपनी खेती बाड़ी का देवता मान लिया और उसे **God of Agricultre** नाम रख दिया। मुमकिन है रूमी लोग इस ग्रह की उपासना भी करते हों।

सूरज से २ अरब ८६ लाख किलोमीटर दूर

लीजिए, अब हम सातवें नम्बर के ग्रह का आपसे परिचय करवा रहे हैं। इसका नाम है यूरेनस (Uranus) प्राचीन

भारत के लोग इसे "हर्षल ग्रह" कहते हैं

अल्लाहु अकबर (अल्लाह सबसे महान है) यह ग्रह, वातावरण में हमारे सरों पर ५१ हज़ार ८०० किलोमीटर का व्यास (Diameter) लिए हुए अधर लटका घूम रहा है। यह भारी भरकम ग्रह सूरज से २ अरब ८६ लाख किलोमीटर दूर है। सूरज से इतना दूर होने के सबब सूरज के गिर्द एक चक्कर लगाने में ८४ वर्ष लगते हैं और १७ घण्टे १४ मिनट में अपनी कक्षा में एक फेरा लगाता है।

एक दिन टूट कर गिर पड़ेगा

इस आसमानी छत के नीचे गर्दिश करने वाले ग्रह दूर से टिमटिमाते चिराग मालूम होते हैं। झिलमिलाते, जगमगाते तारे टूट कर गिर पड़ेंगे जैसे कि पवित्र कुरआन में फरमाया गया है–

"और जब तारे निस्तेज होकर झड़ जायेंगे।" (८१ तकवीर, आयत – २)

हम बेचारे इन्सानों की बस्ती और ज़मीन किस हाल में होगी ? जब सबके सब ग्रह तारे बेनूर होकर झड़ने लगेंगे और कायनात में मिटजाने का सूर फूंक दिया जायेगा।

"जब सूरज को लपेट लिया जायेगा।" (८१:१)

"और चांद गहन में धंस जायेगा और सूरज और चांद दोनों इकट्ठा कर दिये जायेंगे।" (अलक़िमहः ६)

ऐसे वक्त मनुष्य की क्या दशा बनेगी, इस पर अभी से गौर कर लिया जायेगा।

जमीन खाली हो जायेगी

अभी आकाश हमारे सरों पर एक छत की तरह तना हुआ है, लेकिन एक दिन यह भी फटकर टुकड़े–टुकड़े हो जायेगा। इस सन्दर्भ में सर्वश्रेष्ठ अल्लाह फरमाता है –

"जब आसमान फट जायेगा अपने पालनहार का हुक्म सुन लेगा और उसपर हक है कि जैसा हुक्म दिया जाये वैसा ही करे। जब जमीन फैला दी जायेगी। जो कुछ इसके अन्दर है बाहर फेंक देगी और खाली हो जायेगी। ज़मीन भी अपने रब का हुक्म सुन लेगी और उस पर यह हक़ लाज़िम है।" (८४ इन्शिक़ाक़ – आयत–१ से ५)

अंग्रेज़ भी अज्ञानी निकले

पाठक सज्जनों ! थोड़ा सा और समय दीजिए कि बाकी दो सितारों का वर्णन हम कर दें। इनमें से एक नेपच्यून (Neptune), है जिसे कुछ नादान लोगों ने "समुन्द्रों का देवता" कहा है।

तौबा–तौबा (अल्लाह माफ करे) यह अंग्रेज भी मूर्ख और गंवार निकले और अपनी किताबों में इस ग्रह का परिचय देते वक्त God of the sea में लिख दिया। काश मुसलमानों तुमने इस दुन्या में कुरआन को तमाम लोगों तक पहुचा दिया होता, तो आज दुन्या में इस्लाम और ईमान ईमान ही होता।

यह ग्रह ४ हजार ४६ करोड़ किलोमीटर सूरज से दूर है। और सूरज के गिर्द एक चक्कर १६४ वर्ष १० महीने में पूरा करता है तथा १६ घण्टों में अपनी कक्षा में एक चक्कर लगा लेता है। इस का व्यास ४६ हजार ५ सौ किलोमीटर है।

चुम्बकीय आकर्षण के कारण सूरज, चांद या अन्य कोई ग्रह तारा किसी दूसरे ग्रह या तारे को अपनी ओर कम ज़्यादा आकर्षण में न खींच सकता है और न ही ढील दे सकता है।

"यह अन्दाजा बांधा हुआ है गालिब इल्म वाले का।" (यासीन, आयत–३८)

इस आयत के अनुसार हर एक को सर्वश्रेष्ठ और सर्वशक्तिमान अल्लाह ने शिकंजे में कस दिया है।

मनुष्य को सम्मान दिया

सूरज, चांद और इन बड़े–बड़े ग्रह–तारों के सामने मनुष्य शक्ति एवं सामर्थ्य के दृष्टिकोण से क्या हैसियत रखता है? और किस खेत की मूली है? लेकिन कुर्बान जाइये सर्वश्रेष्ठ अल्लाह की कुदरत तथा हिकमत पर इस में मनुष्य की निर्मिती के बारे में फरमाया–

"निःसन्देह ! हमने इन्सान को बहुत खूबसूरत सांचे में ढाल कर बनाया है।"

(६५ सूरह तीन, आयत–४)

"और निःसन्देह हमने आदम की औलाद को बड़ा सम्मान दिया तथा धरती पर जंगल, दरिया में हर जगह इनको सवारी प्रदान की और खाने के लिए पाकीज़ा और साफ सुथरी रोज़ी से नवाज़ दिया और अपनी बहुत सारी निर्माण की गयी चीजों पर उनका खास श्रेष्ठता प्रदान की।" (१७ बनी इस्राईल– आयत–७०)

एक भारी भरकम ग्रह

ग्रहों की आश्चर्यकारक तफसील पूर्ण मालूमाता को पढ़ते सुनते वक्त हैरत में डूब कर किसी का दिल दहल न जाये इसलिए अब हम एक और ग्रह का संक्षेप में वर्णन प्रस्तुत करते हैं।

नाम इसका प्लूटो (Pluto) है, इसका व्यास २२८४ किलोमीटर है। सूरज के गिर्द इसका एक फेरा २४७ साल आठ महीने में पूरा होता है तथा अपनी ही कक्षा में चक्कर लगाने में उसे ६ दिन नौ घंटे का समय लगता है। सूरज से दूरी का इसका फासला ५ अरब ६० करोड़ किलोमीटर है।

अब ये ग्रह और तारे जानदार हैं या बेजान, इसका ज्ञान तो हमारे पालनहार को ही है। लेकिन पवित्र कुरआन पढ़ने के बाद–

"अल्लाह ही है जिसने हर चीज़ को बोलने की कुव्वत दी है" के अनुसार

इतना अवश्य कहेंगे कि ये सूरज, चांद तथा सभी ग्रह तारे हमसे या आपसे न सही, किन्तु अपने पालनहार से सब बातचीत करते हैं और अपने स्वामी का हुक्म सुनकर उसे अमल में लाते हैं।

हुक्म देकर अल्लाह ने घुमा दिया, घूमने लगे, ठहरने का हुक्म दिया ठहर गये। जिसको जहां और जितनी दूरी पर रखा वह वहां से एक बाल बराबर भी ऊपर नीचे या आगे पीछे नहीं हो सकता। कुरआन में फरमाया गया –

'सर्वश्रेष्ठ अल्लाह ने आसमान और ज़मीन से फरमाया कि जो ख़िदमत तुमको अंजाम देनी है उस पर खुशी से या लाचारी से हाज़िर हो जाओ। दोनों ने कहा कि, हम खुशी खुशी हाज़िर हैं।''

(४१ हा–मीम–सजदा–आयत११)

"जिस दिन हम जहन्नम को कहेंगे क्या तू भर गयी? वह कहेगी, क्या और भी कुछ है? (५० क़ाफ–आयत–३०)

इस मज़मून का मक़सद

अल्लाह की इस जमीन पर बसने वालों के लिए अल्लाह की मर्ज़ी के अनुसार यह लेख खास तौर पर हमने इसलिए तैयार किया कि कायनात और उसके अन्दर पायी जाने वाली चीज़ों में इन्सान के लिए गौर व फिक्र के दरवाज़े खुल जायें कि जिस धरती पर हम रहते बसते हैं, जिस पर हमारे मुल्क, राष्ट्र, प्रदेश शहर, गांव, खेत, खलियान, दुकान मकान आबाद हैं।

सर से ऊपर जो (खगोल) विश्व दिखायी देता है, जिसमें अरबों खरबों नहीं, बल्कि बेशुमार छोटे बड़े ग्रह–तारे तथा चांद सूरज अधर अवस्था में घूम रहे हैं और आसमान इन सबके लिए गुम्बद की तरह घेरा डाले छत बना हुआ है।

ऐसी विस्मयकारक सृष्टि में मानवता का डेरा धरती पर पड़ाव के रूप में बसा हुआ है। मौत आयी तो यहां से चलता बना। मिट्टी से बना शरीर मिट्टी में दफ़न हो गया।

"इसी जमीन से हमने तुमको पैदा किया और इसी ज़मीन में वापस डाल देंगे और इसी में से दूसरी बार तुमको निकाल खड़ा करेंगे।" (२० ताहा–आयत–५५)

इस आयत से स्पष्ट कर दिय कि सर्वश्रेष्ठ अल्लाह ने हम सबको मिट्टी से निर्माण किया है। हम कुछ नहीं थे, कोई चीज़ नहीं थे।

"क्या मनुष्य को यह बात याद नहीं रही कि इसके पहले हम इसको पैदा कर चुके हैं, वास्तव में यह कोई चीज़ नहीं था।" (१६ मर्यम–आयत–६७)

वाक़ई हम कुछ भी न थे, अल्लाह ने ही हमको पैदा किया और मौत के बाद हमारे शरीर का हर एक अंग, ज़मीन का अंग बन जायेगा।

इन्सानों का पैदा होना और मर कर मिट्टी में मिल जाना, या दोनों तजुर्बे हमारी आंखों के सामने हो रहे हैं। लेकिन यह तीसरी बात कुरआन ने यह कही है कि

"और इसी में से दूसरी बार तुमको निकाल खड़ा करेंगे।" आयत का यह हिस्सा साबित करता है कि इस घूमती–फिरती, चक्कर लगाती ज़मीन में हमारे शरीर के अंग अंग मौजूद हैं।

आत्मा का सम्बन्ध आकाश से है

शरीर में जो रूह थी उसका सम्बन्ध आसमान से था।

"और आप (सल्ल०) से रूह के सम्बन्ध में सवाल करते हैं, आप (सल्ल०) फरमा दो कि रूह तो मेरे रब के हुक्म में से एक हुक्म है।"

(१७ बनी इस्राईल, आयत–८५)

जब शरीर और आत्मा अलग हो जाती है, तो मिट्टी से बना शरीर मिट्टी ही में मिल जाता है, परन्तु आत्मा, सर्वश्रेष्ठ अल्लाह के दरबार में हाज़िर की गयी जैसा कि पवित्र कुरआन में फरमाया गया–

"आप (सल्ल०) कह दो कि अल्लाह की तरफ से मौत का फिरिश्ता तुम पर तैनात है। वह तुम्हारे प्राण को कब्ज़े में जैसे ही लेगा, तुम फौरन अपने पालन हार के सामने हाज़िर किये जाओगे।" (३२ अस्सजदा–आयत–११)

आत्मा का शरीर से अलग होना

आदमी धड़ है, उसके अन्दर की आत्मा उसकी जान है। मौत के वक्त अल्लाह के हुक्म से मलकुल मौत अर्थात मौत के फ़िरिश्ते की कार्रवाई पर रूह और जिस्म की जुदाई हो जाती है। रूह की पेशी अल्लाह के दरबार में होने के बाद मनुष्य यदि गुनाहगार हो तो उसकी रूह "सिज्जीन" की कस्टडी में रखी जाती है और नेक हो तो उसकी रूह "अ़िल्लीयीन" में रखी जाती है हश्र और हिसाब के दिन आत्मा और शरीर का जोड़ मिलाया जायेगा, तो मनुष्य दुन्या में जैसा था, वैसा ही क़ियामत में खड़ा कर दिया जायेगा।

"और अब बदन और रूह के जोड़ फिर से मिलाये जायेंगे।"

(८१ तकवीर, आयत–७)

रेकार्ड तैयार है

मनुष्य एक उत्तरदायी व्यक्ति है। अल्लाह की निर्माण की गयी सभी चीजों में उसे बड़ा महत्व प्राप्त है। मनुष्य को अस्तित्व रूप देकर एक उत्तरदायी निर्मिती की हैसियत से इस धरती पर रहने बसने का अवसर अल्लाह ने प्रदान किया है।

"कोई एक लफ्ज़ भी जैसे ही इन्सान ने कहा, इसके पहले ही एक चौकस पहरेदार की निगरानी उस पर कायम है।"

(५० क़ाफ–आयत–१८)

"और हर एक इन्सान का कर्म–पत्र हमने आवश्यक रूप से उसके गले का

हार बना दिया है और क़ियामत के दिन यह कर्मों का दफ्तर किताब के रूप में हम ले जायेंगे, इस तरह कि हर आदमी अपने किये धरे को लिखा हुआ और खुला हुआ पायेगा।" (१७ बनी इस्राईल–आयत–१३)

इन दोनों आयतों पर ग़ौर करने से मालूम होता है कि इन्सान के मुंह से जो भी शब्द निकला वह रेकॉर्ड बन गया और क़ियामत के दिन खुली किताब की शक्ल में इसका लेखा–जोखा हर आदमी के गले में लटका हुआ होगा। यह कर्मों के हिसाब का दिन है, जिसे पवित्र कुर्आन ने "यौमुल हिसाब" कहा है।

क़ियामत के नाम

हश्र के दिन को क़ियामत का दिन भी कहा गया है। यह इसलिए कि यह दिन पालनहार के दरबार में इन्सानों के खड़े होने का दिन होगा। पवित्र कुरआन में "यौमुत्तग़ाबुन" (हार–जीत का दिन) यह शब्द भी इस्तेमाल हुआ है।

इन्सानों का एक गिरोह ग़लत जीवन–शैली स्वीकारने के कारण बाज़ी हार चुका होगा और एक गिरोह अल्लाह और रसूल (सल्ल०) के आदेश के अनुसार दुन्या की ज़िन्दगी गुज़ारने के कारण बाज़ी जीत चुका होगा। पवित्र कुरआन में इस दिन के अनेक नाम बताये गये हैं, जिनमें कुछ नाम इस प्रकार हैं–

यौमुल हसरत–पछताने का दिन। जो लोग बेईमान रहकर मरे होंगे, वे बहुत पछतायेंगे।

यौमुत्तनाद – जिस दिन बहुत आवाजें होंगी और चीख़ व पुकार होगी।

यौमुल ख़ुलूद–हमेशा रहने का दिन।

यौमुद्दीन – इन्साफ का दिन, बदले का दिन।

यौमुल आख़िरत – आखरी दिन।

पाठक सज्जनों से विनंति है कि यदि आप स्वयं पवित्र कुरआन को अर्थ के साथ पढ़ें तो आपको क़ियामत के बेशुमार गुणदर्शक नाम अल्लाह ने चाहा तो मालूम हो जायेंगे और आपके दिल और दिमाग पर अल्लाह की महब्बत का साया पड़ जायेगा।

कुरआन की बात एक अटल सच्चाई है

अलहम्दुलिल्लाह इस लेख पर आपकी नज़र पड़ गयी और इस बनी संवरी सजी सजाई कायनात के बारे में कुछ थोड़ी मालूमात मुझे और आपको हो गयी।

इस सन्दर्भ में एक बात हम यह कहना चाहेंगे कि पवित्र कुरआन से जो प्रमाण एवं दलीलें देकर हमने इस बयान की रचना की है, वे सारे प्रमाण तथा दलील अटल है, सत्यनिष्ठ हैं तथा किसी भी तरह से खंडन करने योग्य नहीं है।

तलाश किस मंज़िल तक ?

लेकिन वैज्ञानिक जानकारी के अनुसार हमने सूरज और अन्य ग्रह तारों के व्यास, उनकी अपनी कक्षा में गर्दिश, सूरज के गिर्द की गर्दिश वगैरा, जो मालूमात शामिल की है, वह आज के ज़माने के वैज्ञानिकों के खोज एवं संशोधन के अनुसार बतायी है, जो शत प्रशित विश्वसनीय और अंतिम नहीं हो सकतीं।

सम्भवतः आने वाले ज़माने के खोज–संशोधन के कुछ कम ज़ियादा भी हों। आज के वैज्ञानिक लाखों करोड़ों मील और किलोमीटर के फासले दर्ज करते हैं, वे आने वाले चन्द सालों में ही आज का एक एक किलोमीटर, सैकड़ों दशलक्ष किलोमीटर में परिवर्तित हो सकताहै; इसलिए ग्रह और तारों को कक्षीय गर्दिश, सूरज के गिर्द की गर्दिश तथा सूरज से उनकीदूरी और व्यास वगैरा की मालूमात देने का मक़सद यह है कि कायनात में खोज–संशोधन में इन्सान किस मंज़िल तक पहुंच सका है, इसका कुछ अन्दाज़ा हो सके।

मालूमात कभी अधिकता का शिकार

वैज्ञानिक जानकारी तथा संशोधन पूर्ण दृष्टिकोण हर जमाने में कभी–अधिकता का शिकार होता रहा है। उदाहरण के तौर पर आज से तीस साल पहले रूस के वैज्ञानिकों ने बयान दिया था कि आसमान नाम की कोई चीज़ हमारे सर पर नहीं है, बल्कि यह केवल दृष्टि–सीमा और धुंआ सा है इसलिए हमको छत की तरह दिखाई देता है। पूरे विश्व में इस बात का चर्चा हुआ।

लेकिन अब वैज्ञानिक महाशयों ने अपनी दूसरी खोज का एलान किया जो पहले के बिल्कुल–खिलाफ भी है तथा उसका खंडन भी करती है। वह यह कि आसमान एक मज़बूत इमारत है। पहला साइंसी दृष्टिकोण कि आसमानधुंवा धुंवा है यह कुरआन के खिलाफ़ पड़ता था। लेकिन अब उनका यह बयान कि "आसमान एक मज़बूत इमारत है" पवित्र कुरआन के बयान से निकटतम है,जैसा कि अल्लाह ने कुरआन में फरमाया –

"और हमने आसमान को सुरक्षित छत बनाया, फिर भी इतनी बड़ी निशानी को ये लोग बेध्यान होकर टाल देते हैं।" (२१ अल अम्बिया–आयत–३२)

ऊपर लिखी बहस से आप समझ गये होंगे कि इन्सान की मालूमात में खोज–संशोधन तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण बदलते रहते हैं, किन्तु आसमानी किताब अर्थात पवित्र कुरआन अटल है,इसी का बयान सत्य निष्ठ है। पवित्र कुरआन में आसमान के लिए अर्थात "ठोस इमारत और सुरक्षित छत" यह शब्द प्रयोग हुआ है।

वैज्ञानिक क्यों भूल गये?

रूस के वैज्ञानिकों पर मुझे आश्चर्य होता है कि वे अपनी खोज का एलान करते हुए यह क्यों भूल गये कि सूरज चांद और बेशुमार ग्रह तारे, जो ठोस हैं, मज़बूत हैं, घूम रहे हैं, चक्करलगा रहे हैं, भारी और वज़नी भी हैं, रौशनी भी देते हैं जो अंधेरी रातों में चिराग और कंदील का काम देते हैं और अल्लाह के हुक्म के मातहत अंतरिक्ष में अधर लटके हुए हैं उनके लटकने के लिए कोई न कोई चीज़ तो होनी ही चाहिए तो आसमान का ऊपर छत की तरह होना असम्भव कैसे हुआ?

काश, वैज्ञानिकों में अनुवाद के साथ कुरआन पढ़ने का चलन आम होता तथा विज्ञान के विद्यार्थी एवं सामान्य तथा असमान्य लोगों में भी अर्थ को समझते हुए पवित्र कुरआन के पढ़ने और अध्ययन करने का रिवाज होता, तो वैज्ञानिक संशोधन के दोष एवं त्रुटियां जाहिर हो सकती हैं।

पवित्र कुरआन एक ऐसा ग्रंथ है, जिसका कथन सृष्टि रचयिता का कथन है। आज के ज़माने का खोज संशोधन और ज्ञान विषयक जानकारी इसी स्पष्ट ग्रंथ की देन है। इसे आज से चौदह सौ पचहत्तर बरस पहले अंतिम पैग़म्बर–हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर सृष्टि रचयिता सर्वश्रेष्ठ अल्लाह ने अवतरित किया है।

इस शुभकारी एवं कल्याणी दायी ग्रंथ ने समस्त निराधार एवं असत्य विचारों तथा बहुदेववादी श्रद्धा तत्वों का खंडन करते हुए एकमेव अल्लाह पर ईमान लाने का तमाम इन्सानों को आवाहन किया और कायनात में ग़ौर, फिक्र, चिन्तन मनन करने पर प्रोत्साहित किया तथा मनुष्य मात्र को विवेक बुद्धि से काम लेने पर प्रेरित किया।

ईमान, ईश्वर की सबसे बड़ी देन है

अतः जानना चाहिए कि कुरआन के आवाहन का आधार अल्लाह का एकमात्र उपास्य होना, शुद्ध एकेश्वरता की श्रद्धा है और सम्पूर्ण कुरआन तथा पैग़म्बरीय आचरण–शैली बहुदेववादिता के खंडन में भरपूर बयान लिये हुए है।

ईमान लाने में, अल्लाह की एकेश्वरता, पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का संदेष्टा होना तथा क़ियामत पर नितान्त श्रद्धा रखना यह सच्ची और सबसे बड़ी ईश–देन है, जो किसी बुद्धिमान और अंतरदृष्टि रखने वाले मनुष्य को मिल जाये तो उसका काम दुन्या और आखिरत (लोक–परलोक) दोनों जगह बन गया।

रही यह ज़मीन और ऊपर आसमान, बीच में चांद सूरज तथा ग्रह तारों का अस्तित्व तो यह सब सर्वश्रेष्ठ अल्लाह के सामर्थ्यपूर्ण कब्ज़े में है और क़ियामत के दिन यह खुला दृश्य हम अपनी आंखों से देख लेंगे। पवित्र कुरआन की सूरह अम्बिया में फरमाया गया –

"वह दिन ऐसा होगा कि हम आसमान को लपेट लेंगे, जैसे लिखी हुई दस्तावेज लपेटी जाती है।" (२१ अल अम्बिया –आयत–१०४)

आसमान लपेट लिए जाएंगे

महत्वपूर्ण दस्तावेज, शाही फरमान, सरकारी दस्तावेज़ और जायदाद के रजिस्ट्री के काग़जात, जिस तरह लपेटे जाते हैं, उसी तरह आसमान को सर्वश्रेष्ठ अल्लाह लपेट देगा। इसी बयान को लिये हुए पवित्र कुरआन की एक और आयत पर नजर डालियेः–

"क़ियामत के दिन पूरी ज़मीन सर्वश्रेष्ठ अल्लाह के कब्ज़े में होगी ओर आसमान उसके दाहिने हाथ में लिपटे हुए होंगे। शिर्क करने वाले, अल्लाह पर ऐब लगाते हैं। अल्लाह इनके बोहतान से पाक है और बहुत बुलन्द और उच्चतम है।" (३९ अल ज़ुमर–आयत–६७)

बहुदेववादी अपने पालनहार की बेअदबी करता है

अनेक ईश्वरों की उपासनों करने वाले, दूसरों को अल्लह का सहभागी बताकर अल्लाह की बेअदबी करते हैं कि देने वालो वह है और मांगते हैं गैरों से और बताते हैं कि ये अल्लाह के शरीक हैं, जबकि क़ियामत के दिन तमाम ज़मीन अल्लाह की मुटठी में होगी और वह तमाम आसमानों को दस्तावेज़ी कागज़ की तरह लपेट लेगा।

अब कहां पता लगे उन लोगों का, जिन्हें इनकार करने वाले अपना कार्य साधक मानते हैं। इसीलिए फरमाया कि इन बेअदब लोगों के मअ़बूद (उपास्य) पूरी ज़मीन समेत मेरी मुट्ठी में क़ैद हैं और सब आसमान एक काग़ज की तरह मेरे हाथ में है।

ढूंढते फिरें अब अपनें नकली मअ़बूदों को, खुद भी लापता होंगेऔर अपने सच्चे ईश्वर को नाराज़ करके जिन्हें पूजा वे भी ला पता और बेनाम व निशान होंगे। इस खेल को इसी पर समाप्त करते हुए एक और आयत उपहार के रूप में स्वीकार करें।

"अल्लाह की तस्बीह खूबियां बयान की जिए रात में और सितारों के पीठ फेरने (अदृश्य होने) के वक्त भी।" (५२ सूरह तूर, आयत–४९)

सर्वश्रेष्ठ अल्लाह की निकटता प्राप्त करने के लिए सजदे बहुत मददगार हैं, जैसा कि एक हदीस में फरमाया है सिर्फ़ अल्लाह के लिए सजदा करना अल्लाह की नज़दीकी का सबसे बड़ा ज़रिया है।

(छठी क़िस्त)

स्वतंत्रता आन्दोलन में भारतीय मुसलमानों की भूमिका

प्रोफेसर शान्तिमय राय

असहयोग आन्दोलन ने आजादी के लिए जन आन्दोलन के द्वार खोल दिये। किन्तु गांधी जी ने चौरी–चौरा के लोगों की उत्तेजित क्रान्ति और क्रान्तिकारी जन आन्दालेन को स्थगित कर दिया। इस से उग्रवादी और क्रान्तिकारी जन आल्दोलन के ऐसे ग़लत रास्ते पर जा लगे जिसमें पग पग पर खतरा था। थोड़े से भारतवासी क्रान्तिकारी किसानों तथा औद्योगिक श्रमिकों को संगठित करने लगे। १६२५ में कम्यूनिस्ट पार्टी आफ इन्डिया बनी। इन क्रान्तिकारियों ने भारत की आजादी की लड़ाई की दो मुख्य समस्याओं के समाधान का रास्ता दिखाया। उनमें से एक यह थी कि राजनीति आज़ादी के साथ साथ सामाजिक तथा आर्थिक आजादी भी मिलनी चाहिए। दूसरे यह कि राष्ट्रीय मुक्ति की कामयाबी के लिए इसे अन्तर्राष्ट्रीय क्रान्तिकारी आन्दोलन से जोड़ना आवश्यक है। भारत की राजनीति में साम्प्रदायिकता का विष पहले ही घोला जा चुका था और इसे निकाल फेंकने तथा राष्ट्रीय एकता क़ायम रखने का एक ही तरीका था जमीदारी विरोधी, सामन्तशाही विरोधी जन आन्दोलन को हर प्रकार के धार्मिक अथवा साम्प्रदायिक पक्षपात से पाक वर्ग संघर्ष के आधार पर संगठित किया जाता।

१६२३ में जन आन्दोलन शुरू हुआ उसके झुकाव ने आजादी के लिए राष्ट्र की लड़ाई को बड़ा बल प्रदान किया। १६३६ में लखनऊ के कांग्रेस अधिवेशन में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कांग्रेस प्लेटफाम से पूरी आजादी तथा समाजवाद की स्थापना और तानाशाह के खतरे की बात कही। उन्होंने जोर देकर कहा कि कांग्रेस को सोशलिस्ट, कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी नेशनलिस्ट जैसे सुभाष चन्द्र और नेशलिस्ट मुस्लिम पार्टीयों को मिलकर जो सामन्तशाही विरोधी जन आन्दोलन में विश्वास रखती हैं, संयुक्त मोर्चे में एक कामन पलेटफार्म बनाना चाहिए। कांग्रेस के १६३७ के हरीपुरा अधिवेशन में और १६३८ में त्रिपुरा अधिवेशन में कांग्रेस का यही झुकाव रहा। और १६३६ में रामगढ़ अधिवेशन के साथ समाप्त हो गया। इसके बाद क्रान्तिकारी नेशनलिस्ट सुभाषचन्द्र बोस ने फार्वर्ड ब्लाक की स्थापना की १६४० में जेल से छूटने के कुछ समय बाद वह देश से गायब हो गये और बाहर जाकर आजादी के लिए राष्ट्रीय संघर्ष के इतिहास में आजाद हिन्द फ़ौज को संगठित कर एक नया अध्याय जोड़ा। सुभाष चन्द्र की क्रान्तिकारी गतिविधियों से अनेक मुस्लिम देशभक्त जुड़े थे। जिनमें कोमिल्ला के अशरफुद्दीन चौधरी का नाम सजह ही याद आ जाता है।

सरहदी सूबा के अकबर शाह को उनके साथ (सुभाष चन्द्र) भारत के बाहर कौतूहलपूर्ण यात्रा में जाने का बहुमूल्य अवसर प्राप्त हुआ। आजाद हिन्द फौज में उनके दो विश्वसनीय साथी मेजर जनरल शाहनवाज़ और कर्नल हबीबुर्रहमान थे। रिपोर्ट में आये उनके प्राणघातक हवाई सफर में कर्नल हबीबउर्रहमान को उनका अन्तिम साथी होने का गौरव प्राप्त है।

स्वयं अस्थायी सरकार में लेफ्टिनेंट कर्नल अज़ीज़ अहमद, लेफ्टीनेंट कर्नल एम०जेड० किरमानी, लेफ्टीनेंट कर्नल एहसान क़ादिर, लेफ्टीनेंट कर्नल शाह नवाज़, करीम ग़नी, डी०एम० खान को अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा जिम्मेदारी के विभाग मिले थे।

अपनी नब्बे दिन की पनडुब्बी यात्रा में बर्लिन से सुभाषचन्द्र बोस के साथ केवल एक भारतीय आबिद हसन थे जो उनके सेक्रेटरी थे उनके दूसरे अनुयाइयों में कर्नल राशिद अली और कर्नल एस०एस० इसहाक़ थे। आज़ाद हिन्द फौज के लगभग एक सौ मुसलमान शहीदों में लेफ्टीनेंट अशरफी मण्डल, आबिद हुसैन, यूसुफ, लेफ्टीनेंट एस०एम० अली, अब्दुल अज़ीज़, अमीर हयात, अब्दुर्रज़्ज़ाक़, अली अकबर, अली मोहम्मद, अली शाह, अल्ताफ़ हुसैन, अता मोहम्मद खां, ए०के० मिर्ज़ा, अयूब खां, एस० अख़्तर अली, अमादउल्ला, अब्दुरहमान खां, आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

एक क्रान्तिकारी नेता की हैसियत से सुभाष चन्द्र एक बात में अनोखे थे। यद्यपि वे स्वयं बड़े धार्मिक थे किन्तु उन्होंने अपने धर्म को राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष में कभी रूकावट बनने की इजाज़त नहीं दी। आज़ाद हिन्द फौज के ज़रिये उन्होंने अपने देशवासियों के लिए धार्मिक सहिष्णुता (मज़हबी रवादारी) की शानदार मिसाल छोड़ी जिसे धर्म निर्पेक्ष के बराबर समझा जा सकता है। मुसलमानों की परम्परागत बहादुरी में उनकी आस्था निम्नलिखित

उद्धरण से सिद्ध होती है –

"अंग्रेजों द्वारा उत्प्रेरित प्रोपेगन्डा ने लोगों के अन्दर एक ऐसा एहसास पैदा कर दिया था कि भारत के मुसलमान हमारे स्वतंत्रता आन्दोलन के विरुद्ध हैं। किन्तु यह पूर्णतया असत्य है। सच यह है कि मुसलमानों की एक बड़ी संख्या ने राष्ट्रीय आन्दोलन में हिस्सा लिया है। इस समय भी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष अबुल कलाम आज़ाद हैं जो स्वयं एक मुसलमान हैं। भारतीय मुसलमानों की एक बड़ी संख्या ब्रिटिश विरोधी है और वे भारत को आज़ाद देखना चाहते हैं। निःसन्देह यह सच है कि हिन्दू और मुसलमान दोनों में अनेक ब्रिटिश समर्थक पार्टियां हैं किन्तु यह पार्टियां धर्म पर आधारित साम्प्रदायिक पार्टियां हैं और इन्हें लोगों का प्रतिनिधि नहीं कहा जा सकता है। १८५७ की बग़ावत राष्ट्रीय एकता की शानदार मिसाल थी । प्रत्येक वर्ग तथा समुदाय के लोगों ने लड़ाई में हिस्सा लिया जिसका नेतृत्व बहादुरशाह ज़फ़र कर रहे थे। तब से भारत के मुसलमान समान रूप से दूसरे भारतवासियों के साथ भारत मां के सपूत हैं; और उनके हित भी दूसरों के हितों के समान हैं। इस समय मुस्लिम समस्या ब्रिटिश द्वारा पैदा की गयी आयरलैंड की अल्सटर समस्या और फिलिस्तीन की यहूदी समस्या की तरह एक काल्पनिक समस्या है। यह समस्या ब्रिटिश हुकूमत के अन्त के साथ समाप्त हो जायेगी।"

(सुभाष चन्द्र बोस)

मैं अन्त में जनसाधारण के क्रान्तिकारी संघर्ष में भाग लेने वाले थोड़े से मुसलमानों का उल्लेख करना चाहूंगा। मैं लिख चुका हूं कि यह क्रान्तिकारी अन्तर्राष्ट्रीयता में विश्वास रखने वाले हैं और हर प्रकार के साम्प्रदायिकतावाद से ऊपर हैं। सच तो यह है कि उन्हें किसी समुदाय विशेष का आदमी बताना उनका अपमान करना होगा। वास्तव में मुझे बड़ी शर्म आती है कि मुझे आजादी के असंख्य क्रान्तिकारी वीरों में से कुछ के नाम केवल इस लिए लेने पड़ रहे हैं कि इतिहास के प्रभावशाली पंडितों की निराधार और अतर्कपूर्ण मुस्लिम विरोधी धारणा का पर्दाफाश किया जा सके। मैं यह भी अनुभव करता हूं कि इन नामों को लोगों की जानकारी में लाना जरूरी है और मुझे आशा है कि एक दिन आयेगा कि इस विषय पर ढेरों साहित्य लिखा जायेगा। इस शताब्दी की तीसरी दहाई में जो मुस्लिम बुद्धिजीवी जनआन्दोलन की विचार धारा से युवा वर्ग को संगठित और प्रोत्साहित करना चाहते थे। उनमें तीन अच्छे दिमाग़ वाले युवाओं के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। वे हैं मुज़फ़्फ़र अहमद, नज़रुल इस्लाम और अब्दुल रज़्ज़ाक खां जो वहाबी क्रान्तिकारी मोल्वी फ़ैज़उद्दीन के वंशज में से है। कुतुबुद्दीन अहमद और मोहम्मद अब्दुल उनके साथ आ मिले और आगे चलकर अब्दुल हलीम भी मुजफ्फर अहमद के साथ आ मिला जबकि उसकी उम्र अट्ठाइस साल की थी। इसके बाद किसान मज़दूर पार्टी बनी। यू०पी० में सत्यभक्त और मौलाना शौकत उस्मानी ने थोड़े से लोगों को संगठित किया। बम्बई में श्रीपद अमृत डांगे ने और सिंगापुरा बेलू चेटियर ने मद्रास में लगभग साथ साथ विभिन्न कम्यूनिस्ट ग्रूपों को संगठित किया। १६३४ में कम्यूनिस्ट पार्टी आफ इण्डिया इन्टरनेशनल की सातवीं कांग्रेस के निर्देशानुसार कम्यूनिस्ट क्रान्तिकारियों ने सामन्तशाही के विरुद्ध एक जुट होकर लड़ने के लिए सामन्तशाही विरोधी मोर्चे को बड़े पैमाने पर संगठित करना शुरू किया।

१६३६ तक आल इण्डिया किसान सभा की स्थापना हो गई थी। वरदवान के किसान आन्दोलन के दो प्रमुख कार्यकर्ता जिनका सम्बन्ध देश के क्रान्तिकारी जन आन्दोलन से था। जुमरिया के मुल्ला परिवार के सैयद शाहिदुल्ला और उनके भाई अबुल मन्सूर हबीबुल्ला थे। उनके साथ दो अन्य वरिष्ठ नेताओं अब्दुल्ला रसूल और अबुल हयात का उल्लेख किया जाना चाहिए। वे १६२२ के राष्ट्रीय आन्दोलन से किसान आन्दोलन में आये और आगे चलकर १६३८ में वे आल इण्डिया किसान आन्दोलन के चोटी के नेता बने। वे मुजफ्फर अहमद, अब्दुल रज़्ज़ाक खां और अब्दुल हलीम के निकट सहयोगियों में से थे। इससे पहले शमसुल हुदा और अबुल मोमिन भी उन से आ मिले। उनका सम्बन्ध १६२३ और १६२७ से क्रमशः मज़दूर आन्दोलन से था। १६३७ में जेल से छूटने के बाद यह दोनों चतकल मज़दूर आन्दोलन के प्रमुख संगठनकर्ता बने। उन दिनों दिल्ली के विख्यात छात्रनेता के० अहमद बंगाल प्राविशियल स्टूडेन्टस फेडरेशन के अध्यक्ष बने। काली मुखर्जी इस फेडरेशन के जनरल सेक्रेटरी थे। उन दिनों यू०पी० के अन्सार हरवानी ए०आई०एस०एफ० के एक लीडर थे। जलालुद्दीन बुखारी ने सिन्ध के किसानों को संगठित किया। यू०पी० के कुछ होनहार बुद्धिजीवि इंगलैंड से वापसी पर नेशनल कांग्रेस में शामिल हो गये। और छात्रों तथा मज़दूरों को कम्युनिस्ट विचार धारा के आधार पर संगठित करना शुरू किया यह थे। के०एम० अशरफ डा० जेड० ए० अहमद, हाजिरा बेगम और सैयद सज्जाद ज़हीर (बन्ने भाई)। उस समय के अन्य प्रमुख युवा नेता मियां इफ़्तेखारूद्दीन पंजाब के अली अहमद और बम्बई के सोशलिस्ट लीडर यूसुफ़ अली थे। यह सभी कई बार जेल गये। यू०पी० के एक

दूसरे प्रमुख लीडर डॉ० मुज़्ज़फर थे। वह ठोस बुद्धि और असाधारण सूझ बूझ के व्यक्ति थे। यू०पी० के रईस मुसलमानों के बेहतरीन सपूत कम्युनिस्ट पार्टी के माध्यम से आज़ादी की लड़ाई में शामिल हुए। पटना के छात्र नेताओं में अली अशरफ और अमजद अली विशेष रूप से अपनी संगठन क्षमता के लिए मशहूर हैं। दिल्ली के मोहम्मद फ़ारूकी उस समय के एक दूसरे बड़े योग्य छात्र नेता थे। उनकी क्रान्तिकारी बेदारी को जुल्म व सितम से दबाया नहीं जा सका। हैदराबाद के क्रान्तिकारी कवि मख़दूम मुहीयुद्दीन आंध्रा के मंझे हुए नेताओं में से एक थे। निज़ाम शाही के विरुद्ध मोर्चा लेकर उन्होंने नाम कमाया। उन दिनों बंगाल के एक दूसरे जवान मुस्लिम शायर गुलाम कुददूस ने तानाशाही के विरुद्ध अडिग लड़ाई छेड़कर देश की आजादी के लिए जोशपूर्ण रचनायें कीं जो वीर रस से भरी थीं। मजाज़, अली सरदार जाफरी, नियाज़ हैदर, क़ैफी आज़मी, मजरूह सुल्तानपुरी, परवेज़ नकवी, सोरिश कशमीरी, लखनऊ के शफ़ीक़ नक़वी और रशीद अहमद नक़वी पटना के मेजर रिज़वी, यू०पी० के ज़ियाउल हक़, जियाउल हसन, मिर्जा अशफ़ाक़ बेग, बम्बई के उमर शेख़, मुरादाबाद के दुला खां (ट्रेड यूनियन वर्कर), बम्बई के छात्र नेता वदूद खां, कामरेड शहीद, मदनपुरा के सिद्दीक़ बख्शी– यह सभी तानाशाही विरोधी लहर की उठान के साथ राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन में शामिल हुए। मोहम्मद शहीद, लखनऊ के रहने वाले थे। बम्बई में वह एक सूती मिल में काम करते थे वहां वह मज़दूरों के नेता बने और वहीं संघर्ष जारी रखते हुए उनका निधन हुआ। (जारी)

अनुवाद : मो० हसन अंसारी

(पृष्ठ २४ का शेष)

सामान ख़रीदा। आप सल्ल० ने फ़रमाया कि यह काम हज़ार गुना इससे बेहतर है कि तुम किसी से मदद चाहो। किसी के सामने हाथ फैलाना क़ियामत के दिन चेहरे पर एक दाग़ बनकर उभरेगा किसी के सामने हाथ फैलाने की इजाज़त सिर्फ तीन हालतों में है– भुखमरी का सामना हो, या बड़ी मजबूरी में लिया हुआ क़र्ज़ पीठ की हड्डी तोड़ रहा हो, या किसी का "खूँ बहा" अदा करना पड़े।"

आप सल्ल० के पवित्र चरित्र का यह अमली नमूना बताता है कि धन कमाने के शरीफ़ाना तरीक़ों को प्रोत्साहन दिया गया है, और हलाल की कमाई से अगर किसी के पास माल जमा हो जाये, मामूली तिजारत बढ़कर बड़ी तिजारत बन जाये जैसा कि हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि० या हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ी० को अल्लाह ने दुन्यावी नेमतें माल की शक्ल में अता फरमायी थीं तो वह उन्हीं की तरह अपनी दौलत की एक एक पाई को अल्लाह की अमानत समझकर ख़र्च करे।

धन कमाने के वह साधन इस्लाम ने हराम क़रार दिये हैं जो किसी के व्यक्तिगत हितों को नुक़सान पहुंचाते हों अथवा कुल मिलाकर जिससे सामाजिक ढांचा कमज़ोर होता हो या जो राजनैतिक दृष्टिकोण से हानिकारक हों इनमें सब से ऊपर सूद है जिसकी परिभाषा यह है – ऐसा कर्ज़ जिसके बदले मूलधन से अधिक देना पड़े। सूदी क़र्ज़ दो प्रकार के होते हैं एक को **Consumable** (इस्तेहलाकी) कहते हैं अर्थात जो खर्च करके ख़त्म कर दिया जाये। और दूसरे प्रकार का सूदी क़र्ज़ **Investment** (इस्तिस्मारी) है जो कारोबार में लगाने के लिए लिया जाता है। इस्लाम ने दोनों को, और इसकी जितनी क़िस्में हों, चाहे इन पर कितने ही लुभावने पर्दे डाले गये हों, सब को हराम (वर्जित) क़रार दिया है। क़ुर्आन का एलान है :–

तर्जुमा : "और अल्लाह ने क्रय–विक्रय को हलाल और सूद को हराम क़रार दिया।" (सूरः बक़्रः २७५)

अल्लाह के रसूल हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने 'हज्जतुल विदा' के सम्बोधन में फ़रमाया :–

"सुन लो कि असमानता के युग (ज़मान–ए–जाहिलियत) के तमाम बुरे रिवाज मेरे क़दमों से आज रौंद दिये गये। जाहिलियत के तमाम सूद ग़लत (बातिल) और असत्य कर दिये गये और सबसे पहले अपने ख़ानदान का सूद अब्बास बिन अब्दुल्लमुत्तलिब का सूद बातिल करता हूं।" (बेहक़ी)

अनुवाद : मो० हसन अंसारी

जीवन की डगर पर

जीवन की डगर पर
मनुष्य
अपने जीवन की सांसें
खींचते हुए चलता है।
मात्र अपनी
मेहनत के बलबूते पर
सुख की चाह लिये
वह छटपटाते हुए
सड़कों पर बढ़ रहा है।
लेकिन –
मानवता के दुश्मन
उसे चलने नहीं देते
जिस कारण
वह अगला कदम
जैसे रखता है–
सड़क पर ही
अन्तिम यात्रा पर
उसे जाना होता है।

डा० सूरज मृदुल

बच्चों का पृष्ठ

फ़िरऔन की बीवी का ईमान

अरबी से अनुवाद

अहमद अ़ली नदवी

फ़िरऔन यह समझता था कि जिस तरह वह लोगों के शरीर (जिस्मों) पर शासन करता है उसी प्रकार लोगों के दिमाग़ों पर भी शासन कर सकता है। उसकी बादशाहत लोगों के दिलो पर और उनकी ज़बानों पर है।

उसकी नज़र में किसी (मिस्री) को उससे पूछे बिना किसी बात को करने और ईमान लाने का हक़ नहीं है।

उसके पेश (मिस्र) में कहीं कोई मूसा पर ईमान ले आता तो वह गुस्से में पागल हो जाता। गुस्से में बैठता और खड़ा होता। चीख़ता–चिल्लाता और गरजता। वह यह बरदाश्त नहीं कर सकता था कि कोई भी उससे पूछे बिना ईमान ले आये। वह यह नहीं देख सकता था कि कोई उसके देश में रहे और उसकी बात न माने कोई उसका खाये और उसकी नाशुक्री करे। वह कहता कि मुझसे अच्छा और ताक़तवर मिस्र में मेरे अलावा है कौन?

फ़िरऔन यह भूल गया कि वह अल्लाह की ज़मीन और उसकी बादशाहत में जीवन बिता रहा है। उसका दिया हुआ खा रहा है और उसकी नाशुक्री कर रहा है।

अल्लाह ने उसके घर में अपनी निशानी दिखलाई अल्लाह ने उसको दिखला दिया कि वह लोगों क़ी अक़ल और जिस्मों पर हुकूमत करता है। लोगों के दिलों और ज़बानों पर उसकी हुकूमत है। वह यह नहीं जानता कि वास्तव में हुकूमत हर चीज़ पर अल्लाह की है। उसकी पत्नी के दिल में ईमान की रौशनी पैदा हुई है उसको इसका पता भी नहीं चल सका कि उसकी बीवी अल्लाह पर ईमान लाई और फ़िरऔन की बड़ाई से इन्कार किया।

उसकी पत्नी मूसा पर ईमान लाई। जो फ़िरऔन से अधिक अल्लाह की मख़लूक़ (मानव जाति) के बारे में ज्ञान रखते थे फ़िरऔन और उसकी पुलिस को इस का पता भी नहीं चला जब कि उनकी पुलिस इस बारे में पल–पल की ख़बर रखती थी। वह तो पता लगाने के लिए कव्वों की तरह देखती चींटी की तरह सूंघती थी। फ़िरऔन को इसकी ख़बर व भनक भी नहीं लगी जबकि वह उनके बहुत क़रीब था। उसको यदि पत्नी के ईमान लाने की ख़बर हो भी जाता तो वह क्या कर सकता था। वह बेशक जिस्म का तो मालिक था लेकिन अ़क़ल पर उसकी हुकूमत नहीं थी। वह ज़बानों पर तो बादशाहत कर सकता था लेकिन दिल उसके क़ाबू में नहीं था।

फ़िरऔन के बस में नहीं था कि वह किसी आदमी और उसके दिल के बीच हायल (रोक) हो।

फ़िरऔन को अपनी पत्नी पर पूरा हक़ था लेकिन अल्लाह का हक़ ज़ियादा बड़ा है। पत्नी को अपने पति की सेवा करनी चाहिए और सकी बात माननी चाहिए। लेकिन उसको अल्लाह के मुक़ाबले पति की बात नहीं माननी चाहिए। इस लिए कि सृष्टिकर्ता (ख़ालिक) की अवज्ञा (नाफ़र्मानी) करके किसी का आज्ञापालन नहीं।

फ़िरऔन की पत्नी अपने ईमान पर डटी रही और अल्लाह के दुश्मन के घर में अल्लाह की इबादत (पूजा) करती थी। वह अल्लाह से डरती थी और अल्लाह के समक्ष फ़िरऔन के कुकर्मों से अपनी निर्दोषिता प्रस्तुत करती थी। अल्लाह फ़िरऔन की पत्नी से राज़ी और खुश हुआ और उनको अल्लाह ने फ़िरऔन और उसके कर्मों से नजात दी। अल्लाह ने उनके ईमान और बहादुरी को मुसलमानों के लिए नमूना बनाया।

उस औरत ने कहा कि "ऐ मेरे परवरदिगार! मेरे लिये बहिश्त (स्वर्ग) में अपने पास एक घर बना और मुझको फ़िरऔन और उसकी क़ौम से बचा और मुझको ज़ालिम लोगों से बचा।"

बनी इस्राईल की आज़माइश (परीक्षा)

लोगों को जब बनी इस्राईल से फ़िरऔन की दुश्मनी की जानकारी हुई तो वह भी उनको कष्ट पहुंचाने के लिए फ़िरऔन के साथ हो गये।

बनी इस्राईल के लड़कों से मज़दूरी कराते और उनको कुत्ता समझते और उनके साथ वैसा ही मामला (व्यवहार) करते प्रतिदिन उनको आज़मांईश में डातले और हर रोज़ एक नई मुसीबत खड़ी करते थे।

मूसा अ० उनको तसल्ली देते और उनसे कहते कि "बस अल्लाह से मदद (सहायता) मांगो और सब्र करते रहो। ज़मीन अल्लाह की है वह जिसको चाहे इसका वारिस बना दे। अच्छा अंत अल्लाह से

डरने वालों के लिए है।"

बनी इस्राईल इन तकलीफ़ों और आज़माईशों से तंग आ गये तो मूसा से कहने लगे कि :

"हमें तो किसी चीज़ से लाभ नहीं और इस कष्ट से छुटकारा भी नहीं मिल पा रहा है। हमें तो बराबर तकलीफ़ उठानी पड़ रही है।"

मूसा अ० निराश नहीं थे और न घबराये थे। वह तो उनको समझाते और कहते कि घबराओ नहीं अल्लाह जल्द ही तुम्हारे दुश्मन को नष्ट कर देगा और तुम्हीं में से किसी को इस ज़मीन में जानशीन (बादशाह) बना देगा। फिर वह देखेगा कि तुम क्या करते हो। मूसा अ० ने क़ौम को समझाते हुए कहा कि "अगर तुम हल्लाह पर ईमान लाये हो तो अल्लाह पर भरोसा भी करो यदि तुम मुसलमान हो "

क़ौम ने कहा कि हमने अल्लाह पर भरोसा किया है। "ऐ अल्लाह ! हमें ज़ालिम क़ौम के लिए आज़माइश में न डाल हमें तू अपने फ़ज़ल से काफ़िर से छुटकारा दिला दे।"

फ़िरऔन बनी इस्राईल को अल्लाह की इबादत से रोकता था। किसी को अल्लाह की इबादत करते और नमाज़ पढ़ते देखता तो बेहद क्रोध में आ जाता था। वह इससे भी रोकता था कि उसकी ज़मीन पर अल्लाह की मस्जिदें और उनमें अल्लाह की इबादत हो। मस्जिदों में नमाज़ और अल्लाह की इबादत उसके गुस्से को बढ़ाती थी। कितना बेककूफ़ था वह अल्लाह की ज़मीन को अपनी ज़मीन समझता था।

उससे बड़ा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह की ज़मीन पर अल्लाह की इबादत से रोके। फ़िरऔन में यह ताक़त नहीं थी कि किसी को अपने घर में उसके पसन्द का कार्य करने से रोक सके। अल्लाह ने बनी इस्राईल से मूसा के ज़रिये कहा कि "अपने घरों को क़िबला बनाकर घरों में नमाज़ पढ़ो।" फ़िरऔन उसकी पुलिस बनी इस्राईल को अल्लाह की इबादत से नहीं रोक सकी।

कहतसाली

फ़िरऔन की सरकशी और अल्लाह से दुश्मनी बहुत बढ़ गई तो अल्लाह ने उसको सावधान (होशियार) किया और उसको कहा गया कि अल्लाह काफ़िरों को पसंद नहीं करता और वह भी नहीं चाहता कि उसकी ज़मीन में कोई गड़बड़ पैदा करे। फ़िरऔन बड़ा बेवकूफ़ था उसकी बुद्धिमानी जाती रही। गधे को जब तक मारा न जाये ठीक से नहीं चलता। अल्लाह ने भी फ़िरऔन को सचेत करने का इरादा फ़रमाया। तुम जानते हो कि यूसुफ़ अ० के काल में सूखे के दिनों में मिस्र ने अपने दूर–दराज़ शहरों की कितनी सहायता की थी। शाम और कनआन वालों की किस प्रकार सहायता की थी । मिस्र कितना ज़रखेज़ (उपजाऊ) शहर था जिसकी ज़मीन को नील सींचता था ओर यह शहर अपनी खूबसूरती, खेती बाड़ी और नील के होने पर गर्व करता था। फ़िरऔन और मिस्र वालों ने नील को रिज़क़ (रोज़ी–रोटी) की कुन्जी समझ लिया था। वह यह समझने लगा कि नील की वजह से जब किसी चीज की जरूरत (आवश्यकता) नहीं। बारिश की भी नहीं।

वह नहीं जानते थे कि रोज़ी की कुन्जी अल्लाह के हाथ में है। अल्लाह इस पर क़ादिर है कि जिसको जितना रिज़क़ (रोज़ी रोटी) देना चाहे दे । यह लाभदायक नील अल्लाह के आदेश पर ही बह रा है। अल्लाह ने जब नील को आदेश दिया उसका पानी कम हो गया और ज़मीन में चला गया। खेतों की सिंचाई प्रभावित हुई। फलों में कमी आ गई गल्ला कम हो गया खाने में कमी आ गई। फिर भी फ़िरऔन और मिस्र वाले जागे नहीं शैतान ने आकर उनको रास्ते से भटका दिया। वह कहने लगे कि यह जो कुछ भी हुआ मूसा के बुरे कर्मों के कारण हुआ है।

आश्चर्य होता है उनकी इस सोच पर। मूसा पहले भी थे और बनी इस्राईल भी एक ज़माने से है। यह हालत जो हुई वह मूसा के कारण नहीं थी। यह तो उनके कुफ़्र के और बुरे कर्मों की सज़ा है। फ़िरऔन और उसकी क़ौम मूसा की दुश्मनी पर आमादा रही और कहती रही कि हम इन के जादू के आगे झुकने वाले नहीं हैं। और कहते कि हमें डराने के लिए जो भी निशानियां लाये हो उनका हम पर कोई असर (प्रभाव) नहीं होगा और हम तो तुम पर ईमान नहीं लायेंगे।

पांच निशानियां

अल्लाह ने उनपर एक दूसरी निशानी उतारी बारिश खूब हुई नील में बाढ़ आ गई। खेत और खेती डूब गई और फल बरबाद हो गये। यह बारिश उनके लिए वबाले जान बन गई।

पहले उनको पानी की कमी की शिकायत थी और अब उनको पानी की ज़ियादती की शिकायत है। हमने उन पर टिड्डी भेजी। उसने उनके खेत और खेती तथा पेड़ों को खा पी कर बराबर कर दिया। अल्लाह के इस लश्कर के सामने फ़िरऔन और हामान कितना बेबस और कमज़ोर है और उसकी पुलिस नाकारा। लेकिन फिर भी सचेत नहीं हुए और सबक नहीं लिया। इसके बाद अल्लाह ने खटमल भेजे, अल्लाह की पनाह। हर जगह खटमल बिस्तों में खटमल, कपड़ों में खटमल, सर में खटमल उनका जीना हराम कर दिया खटमलों ने। रात भर उनको मारते और उनको गाली देते सुबह करते। खटमलों से लड़ने की ताक़त उनमें नहीं थी। न वहां तलवार चल सकती है और न वहां तीर काम आ सकता है। फ़िरऔन, उसकी पुलिस और सेना उनपर काबू नहीं पा सकती थी। इसके बाद अल्लाह ने उन पर मेंढक भेजे। हर चीज़ में मेंढक खाने

में मेंढक, पानी और पानी की चीज़ों में मेढक, कपड़ों में मेंढक, मेंढकों ने उनका जीना हराम कर दिया। पूरे घर में मेंढक ही मेंढक फैल गये। वे एक को मारते दस आ जाते, ग़ोल के ग़ोल आते गोया घर में पैदा हो रहे हैं। इन मेंढक से पुलिस और गार्ड आजिज़ आ गये थे।

अल्लाह की पांचवीं निशानी खून थी। उनकी नाकों से खून बहता जिसने उनको निढाल कर दिया था। हकीम और डाक्टर आजिज़ और परेशान थे उसके इलाज से, कोई दवा काम नहीं कर रही थी।

जब वह कोई निशानी देखते तो मूसा से कहते कि 'ऐ मूसा ! इस मुसीबत को दूर करने के लिए दुआ करो। हम तौबा करते हैं और हम ईमान भी लाते हैं। और बनी इस्राईल को तुम्हारे साथ भेजने को भी तैयार हैं।" जब उनसे यह मुसीबत टलती तो फिर मुकर जाते और अपनी बातों और वादों को भुला देते इस प्रकार हम ने उनपर तूफान, टिड्डी, मेंढक, खटमल और ख़ून की शकल में अपनी निशानियां भेजी लेकिन उन्होंने उस पर भी घमण्ड किया। कैसी ढीट और फ़सादी क़ौम थी।

मिस्र से निकलने का आदेश

मिस्र की ज़मीन अपने फैलाव के बावजूद बनी इस्राईल पर तंग हो गई। मिस्र की सनअ़त (उद्योग) उसकी उन्नति समाप्त हो गई थी। वह सब जेल में ठूंस दिये गये। हर दिन उनको नित नये कष्ट और तकलीफ़ें दी जाती रहीं लेकिन बरदाश्त की भी एक हद होती है। वह भी तो आदम की औलाद थे। उनको भी तकलीफ और कष्ट का एहसास होता था।

अल्लाह तआला ने मूसा (अ़०) को वही फ़रमाई कि वह किसी रात में बनू इस्राईल को साथ लेकर मिस्र निकल जायें।

फ़िरऔन की पुलिस को इसका एहसास हो गया था । एहसास होना भी चाहिए था। पुलिस कौओं की आंखें रखती थी और चींटी की तरह सूंघती थी।

सुन-गुन मिलते ही फ़िरऔन को इसकी सूचना दे दी।

मूसा अ़० बनी इस्राईल को लेकर रात में मुक़द्दस (पवित्र) ज़मीन की तरफ़ चल पड़े। यह सब १२ ग्रुपों में बटे थे और हर ग्रुप का एक अमीर (आगे चलने वाला) था। शाम का रास्ता मूसा अ़० का जाना बूझा था। वह इस रास्ते पर दोबार सफ़र (यात्रा) कर चुके थे (एक बार वह इसी रासते मदयन गये और फिर इसी रास्ते मिस्र लौट आये)। मूसा ने कुछ और सोचा और अल्लाह ने कुछ और चाहा। हुआ वही जो अल्लाह ने चाहा था।

अल्लाह के इरादे से मूसा रास्ता भटक गये। मूसा समझ रहे थे कि वह बनी इस्राईल को उत्तर की तरफ़ ले जा रहे हैं। हालांकि वह रात की तारीकी में उनको मशरिक़ (पूरब) की तरफ ले जा रहे थे। वहां उनको लाल समुद्र मौजें मारता मिला। देखते ही बोल पड़े कि या अल्लाह! अरे हम लोग कहां पहुंच गये? जवाब था कि हम लोग तो समुद्र के सामने हैं।

मुड़कर देखा तो एक बड़े लश्कर का गुबार है जो उन पर चढ़ाई करने के इरादे से आ रहा है। उसको देख कर बनू इस्राईल चीख़ पड़े और कहने लगे "ऐ इमरान के बेटे तुमने तो हमें धोखा दिया और हमको मरवाने कापूरा सामान कर दिया। तुम हमको समुद्र के किनारे फ़िरऔन से मरवाने के लिए ले आये। वह तो हमें चूहे की मौत मारेगा। भागने और बचने का अब कोई रास्ता भी नहीं है।

हमने तो तुम्हारे साथ कोई बुराई नहीं की थी फिर तुम किस बात का बदला हमसे ले रहे हो। हमने तो तुम्हारी ख़ातिर सब कष्ट और मुसीबतें बरदाश्त कीं और तुम्हारे साथ यहां तक आये। अब समुद्र हमारे सामने है और दुश्मन हमारे पीछे है। अब तो मौत यक़ीनी है। बनी इस्राईल की आंखों के नीचे अंधेरा छा गया। दुन्या उनके लिए तारीक (अंधेरी) हो गई। डर से आवाज़ बैठ गयी और जीवन से निराश (नाउम्मीद) हो गये।

ऐसी हालत में बड़े-बड़े अपने हवास खो बैठते हैं और उनकी हिम्मत जवाब दे देती है लेकिन मूसा (अ़०) को अपने रब पर पूरा भरोसा और विश्वास था। वह लोगों के शोरोगुल से नहीं घबराये और फ़रमायाः मेरा अल्लाह मेरे साथ है वही मेरा मार्गदर्शन करेगा। अल्लाह ने मूसा को समुद्र में अपनी लकड़ी मारने का आदेश (हुकम) दिया। मूसा अ० ने लकड़ी मारी। समुद्र फट गया। पानी रुक गया। हर तरफ़ पहाड़ की तरह । उसमें १२ ग्रुपों के लिए १२ रास्ते बन गए। पूरी क़ौम शान्ति और सूकून से उससे पार हो गई।

Mohd. Aslam

(S) 268845, 213736
(R) 268177, 254796

Haji Safiullah & Sons

Jwellers

Nagina Market Akbari Gate, Lucknow
Opp. Gadbad Jhala, Aminabad Road, Lucknow.

आओ उर्दू सीखें

उर्दू अक्षरों के लिखने के नियम

इदारा

पिछले अंक में आप उर्दू अक्षरों के रूप, उन के नाम तथा अब्जदी मूल्य से परिचित हुए। आज हम उनके लिखने के कुछ नियमों का वर्णन करेंगे।

अलिफ़ ऊपर से नीचे को बनाया जाता है। बे,पे,ते,टे,से दाहिनी ओर से बाईं और को ले जाते हैं जीम, चे, हे, ख़े के पहले सिर बाईं ओर लाते हुए उसमें उल्टा आधा वृत्त (दाइरा) बाईं ओर से दाहिनी ओर लाएं। दाल, डाल, जाल, का सिर बाईं ओर से दाहिनी ओर लाते हुए नीचे ले जा कर बाईं ओर को तिर्छा नोकदार मोड़ देंगे। रे, ड़े, ज़े ज़े, ऊपर से नीचे लाते हुए बाईं ओर को तिर्छा नोकदर मोड़ देंगे। सीन के तीन शोशे दाहिनी ओर से बनाते हुए आधा वृत्त दाहिनी ओर से बाईं ओर को बनाएंगे। शीन दो प्रकार से बनाते हैं। एक तो सीन पर बस तीन बिन्दियां रख कर दूसरे दाहिनी ओर से एक तिर्छी लकीर ले जाते हुए सीन की भांति आधा दाइरा जोड़ कर। स्वाद ज़्वाद बनाते समय पहले ख़रबूज़े के बीच की भांति बनाएंगे जिसका बीच ख़ाली हो। इसमें पहले ऊपर का भाग बाईं ओर से दाहिनी ओर ले जाएंगे फिर नीचे की ओर घुमा कर जहां से आरम्भ किया था उससे इस प्रकार मिलाएंगे कि ख़रबूज़े का बीज बन जाए फिर उसमें सीन की प्रकार दाहिनी ओर से बाईं ओर को आधा दाइरा बनाएंगे। तोए ज़ोए के लिये पहले अलिफ बनाएंगे फिर नीचे के आधे पर क़लम रख कर दाहिने ओर आंख बनाते हुए नीची की नोक से मिला देंगे। अ़ेन ग़ैन का मुख ऊपर दाहिनी ओर से बाईं ओर ले जाते हुए मोड़ कर दाहिनी ओर लाएंगे फिर नीचे वाले भाग पर क़लम पीछे लाते हुए जीम की भांति आधा वृत्त जोड़ देंगे। फे का मुह बनाकर बे की भांति बाईं ओर खींच कर ऊपर को मोड़ देंगे। क़ाफ का मुंह बनाकर सीन की भांति आधा दाइरा जोड़ देंगे, काफ़ के लिए आधा अलिफ़ बना कर नीचे फ़े की भांति पड़ी लकीर जोड़ कर ऊपर को मोड़ देंगे फिर आप ने जो आधा अलिफ़ बनाया है उस की ऊपरी नोक पर दाहिनी ओर से बाईं ओर लाते हुए, एक तिर्छी लकीर जोड़ देंगे। इस लकीर को मरकज़ का नाम देते हैं। गाफ़ काफ़ ही की तरह बनाते हैं बस उस पर एक मरकज़ और लगाते हैं। लाम में पहले कुछ ऊपर से अलिफ़ बनाकर सीन की भांति सीधी ओर आधा दाइरा जोड़ देंगे। मीम के लिए पहले उसका सिर ज़रा ऊपर बनाते हुए दाहिने से बाएं को उसका सीना उभारते हुए नीचे को अलिफ़ खींच दें। नून दाहिनी ओर से बाईं ओर को आधा दाइरा बनाएं, दाहिनी ओर का भाग कुछ ऊंचा रहे । वाव दाल की भांति बनता है बस दाल का सिर चिपटा होता है और वाव का गोल। हे, दाल की भांति सिर बनाकर नीचे से मोड़ कर नोक ऊपर लाकर पहली जगह पर मिला देते हैं। दो आंखों वाला हे पहले स्वाद की भांति खरबूज़े का बीज बनाते हैं फिर नीचे वाले भाग पर क़लम वापस ले जाते हुए उसके नीचे दूसरा बीज इस प्रकार जोड़ेंगे कि बीच की लकीर दोनों बीजों में सम्मिलित होगी, हमज़ा ऊपर की नोक से आरम्भ कर के बनाएंगे। ये, ऊपर का सिर बना कर सीन की भांति आधा दाइरा जोड़ देंगे। बड़ी ये या मझहूल ये दाहिनी ओर से बाईं ओर को एक तिर्छी लकीर ले जाते हुए नीचे को मोड़ते हुए दाहिने ओर को पड़ी लकीर लाएंगे जो ऊपर वाली तिर्छी लकीर की नोक की सीध से कुछ आगे बढ़ जाएगी। अलिफ़ पर जो मद बनाया जाता है उसे दाहिनी नोक से आरम्भ करते हैं। यह विवरण इस लिये लिखा गया कि बहुत से लोग उल्टी ओर से अक्षर बनाते हैं जबकि उर्दू में अक्षर की शुद्ध आकृति के साथ शुद्ध नियम से लिखना भी अनिवार्य है।

बिन्दियां : बे के नीचे एक बिन्दी, पे के नीचे तीन बिन्दियां इस प्रकार कि दो बिन्दियों की जोड़ी के नीचे एक बिन्दी ते और क़ाफ़ के ऊपर दो बिन्दियां, से, जे और शीन के ऊपर और चे के पेट में तीन बिन्दियां इस प्रकार कि बिन्दियों की जोड़ी पर एक बिन्दी, जीम और नून के पेट में एक बिन्दी ख़े, ज़ाल, ज़े ज़्वाद, ज़ो, ग़ैन, फ़े पर एक बिन्दी।

जो नियम बताए गये हैं उनको अपनाने पर आप का लिखा हुआ पढ़ने योग्य हो जाएगा परन्तु शुद्ध तथा सुन्दर लिखने के लिए उस्ताद के सामने उसके

(शेष पृष्ठ ३६ के कालम ३ पर)

निर्देशानुसार अभ्यास आवश्यक हैं।

उर्दू अक्षरों के शोशे :– उर्दू लिखने के नियमों के अनुसार कुछ अक्षर हर स्थान पर पूरे नहीं लिखे जाते बल्कि अक्षर का आरम्भिक अंश जोड़ा जाता है जो उस अक्षर का शोशा कहलाता है। यह शोशे हिन्दी का आधे अक्षर की भांति नहीं है, हिन्दी के आधा अक्षर तो सदैव साकिन (गतिहीन) आता है जब कि शोशा साकिन व मुतहर्रिक (गतिहीन तथा गतिशील) दोनों दशाओं में लिखा जाता है। यह स्वरों की मात्राओं की भांति भी नहीं है कि उसके स्थान पर ज़बर, ज़ेर और पेश प्रयोग होते हैं, इस का नियम अलग है जो इस प्रकार है।

उर्दू के दो शब्द एक साथ नहीं लिखे जाते, उर्दू के एक शब्द में जो अक्षर शोशों द्वारा मिल सकते हैं वह अवश्य मिलाए जाएंगे।

अक्षरों के मिलाने के नियम :– अलिफ़ दाल, डाल, रे, ड़े, ज़े, ज़े अगर शब्द के आरम्भ में हैं तो लिखने में किसी अक्षर से मिल नहीं सकते, इन की आवाज़ अगर किसी अक्षर के पश्चात आती है तो यह अक्षर मिल जाते हैं लेकिन इनके पश्चात इन से कोई अक्षर नहीं मिल सकता। शब्द के अन्त का अक्षर सदैव पूरा लिखा जाता है अलबत्ता ऐन, ग़ैन जब अंत में मिल कर आएं तो उन का मुंह चम्टी की भांति न बनाकर बीच के ऐन के शोशे की भांति बनाते हैं फिर दाइरा जोड़त देते हैं। तोए, ज़ोए के शोशे नहीं यह पूरा पूरा किसी अक्षर से पहले भी मिलाया जाता है और पीछे भी। बे, पे, ते, टे, से, नून, ये के शोशे एक दांत बनाकर दूसरा अक्षर जोड़ देते हैं और बिन्दी आदि से अंतर करते हैं जैसे पा, नल लेकिन यही शोशे जब जीम, चे, हे, खे, आ जाने से

स्वास्थ्य सलाह

डा० एस०एम० आरिफीन

प्रश्न — *मेरा सर दबाने से स्पंज की तरह दबता है। पीछे की और पूरे मस्तिष्क के हिस्से में बहुत अधिक दबता है तथा दर्द करता है। बाल भी बहुत झड़ते हैं। कृपया उपचार बतायें।*

नासिर अली कालकोता

उत्तर : आप निम्नलिखित दवाइयों का सेवन करें:–

१. एसिड फॉस २०० की २ बूंद प्रति मात्रा, प्रति दिन दो बार।

२. अर्निका २०० की २ बूंद प्रति मात्र, प्रतिदिन दो बार

प्रश्न : *एक व्यक्ति की उम्र २५–२६ है। उसकी नाभि, नाभि के अन्दर से अपने स्थान से बीच–बीच में हट जाती है और उस समय पेट में दर्द होता है, और पतला दस्त होता है। इसकी कौन–कौन सी दवा है, जिसके सेवन करने से रोग सदा के लिए पूर्ण रूप से नष्ट हो जाए।*

तारिक़ रायबरेली।

उत्तर : आप उस व्यक्ति को क़ॉकुलस इण्डिका २०० की २ बूंद प्रति मात्रा, प्रतिदिन दो बार दें।

प्रश्न : *मेरे पिता जी की उम्र ५५ वर्ष है। गांव के रहने वाले हैं, रंग गेहुंआ है। चाय पीने का शौक है। बीड़ी सिगरेट, तम्बाकू, शराब, मांस, मछली, अंडा कुछ नहीं खाते खेती करते हैं। पिछले तीन साल से घुटनों में दर्द रहता है। दर्द असहनीय है। एलोपैथिक व देशी इलाज करा चुके हैं लेकिन फायदा एक–दो दिन रहकर पुनः वही स्थिति हो जाती है। तीन साल से तेल, दही, खटाई कुछ नहीं खाते हैं। केवल दाल– रोटी, चाय,घी, ही खने में लेते हैं। कृपया मेरे पिता जी के घुटनों के दर्द को उचित निावरण बतायें।*

भगदान दास, कोरिया छत्तीसगढ़

प्रश्न– मेरी मां, उम्र ४० वर्ष की शिकायत यह है कि उसे बराबर ठंडा पसीना आता है जो कि चलने से, आराम करने से भी बढ़ता है। पसीने में बदबू भी रहती है। थोड़ी बी.पी. की भी शिकायत है। कृपया समाधान बतायें।

छोटे खां, नवाद

उत्तर : आप अपनी मां को निम्नलिखित दवाइयों को सेवन कररायें :

१. वेरेट्रम विर २०० की २ बूंद प्रतिमात्रा १ दिन छोड़ छोड़ कर

२. साइलेसिया १एम की २ बूंद केवल एक बार पहले दिन लें।

(पृष्ठ ३६ का शेष)

पहले आते हैं तो यह तिर्छी लकीर के रूप में आते हैं जैसे तज (تج) बम (بم) यही शोशे जब सीन, शीन, स्वाद, ज़्वाद, तो, ज़ो, ऐन, ग़ैन से पहले आते हैं तो इन शोशों का आकार इस प्रकार होगा जैसे बस (بس) बत (بت) बाक़ी अक्षरों के शोशे बस उनके सिर होते हैं चाहे आरम्भ में हों चाहे बीच में जैसे जड़ (جڑ) सर (سر) गुस्ल (غسل) शलजम (شلجم) दाल, डाल, ज़ाल जब किसी अक्षर के पश्चात मिलाते हैं तो उसका टेढ़ा सिर सीधा कर देते हैं जैसे बद (بد) बड (بڈ) ऐन जब बीच में आता है तो उसका शोशा इस प्रकार बनाते हैं जै जअ़ल (جعل) लअ़ल (لعل)।

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

मुईद अशरफ़ नदवी

● न्यूयार्क टाईम्स में प्रकाशित रिपोर्ट में जिसको स्वयं अमरीका के श्रम व गणना विभाग ने तैयार किया है, कहा गया है कि अमरीका में शीघ्र ही मानव श्रम शक्ति की कमी अति अधिक गम्भीर हो जायेगी। और आने वाले कुछ वर्षों में अमरीकी कम्पनियों को साठ लाख श्रमिकों की आवश्यकता होगी।

रिपोर्ट में कहा गया है कि अमरीका में जारी छटनियों की वर्तमान प्रवृत्ति से स्थिति और भयंकर हो रही है क्योंकि वर्तमान बाजार मंदी कुछ दिनों बाद समाप्त हो जाएगी और आर्थिक सुधार के प्रारम्भ होने पर अमरीका और उसकी कंपनियों को प्रशिक्षित श्रमिकों की अतिअधिक आवश्यकता होगी, मुख्यतः निर्माण, कम्प्यूटर शिक्षा और इंजीनियरिंग के सेक्टर में दशा बहुत ख़राब हो सकती है। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि इन सेक्टरों में वस्तुस्थिति की ख़राबी का एक और कारण यह भी होगा कि निर्माण, शिक्षा, और स्वास्थ्य आदि विभागों में काम करने वाले लोगों की बहुत बड़ी संख्या आने वाले कुछ वर्षों में ऐसे भी अवकाश प्राप्ति की सीमा को पहुंच रही है। जबकि अमरीका के मेकनिक इन विभागों में काम करने से बचना चाहेंगें। इसलिए अमरीका को मजबूरन बाहर के देशों से श्रमिकों को आयत करना अनिवार्य हो जाएगा। रिपोर्ट में कहा गया है कि स्थिति की ख़राबी का प्रारम्भ हो रहा है और सन् २००८ तक यह भयानक रूप धारण कर सकती है। इंजीनियरिंग का विभाग भी निपुण श्रमिकों की कमी का शिकार होकर रह जाएगा। क्योंकि वैसे भी टेकनॉलोजी के वर्तमान बदलती हुई रूचि के कारण अमरीका की जनता की बड़ी संख्या ने परम्परागत पुरानी टेकनॉलोजी के विभागों को छोड़ दिया है जबकि टेकनॉलोजी के प्रयोग और मांग में वृद्धि के कारण इस में इंजीनियरों और टेक्नीशियनों की आवश्यकता बढ़ जाएगी। उनमें प्रमुखता से मेकनीकल इलेक्ट्रीकल, सिविल और अन्य विभाग शामिल हैं।

● मलेशिया के प्रधान मंत्री महातीर मुहम्मद ने भी यासिर अरफ़ात को हटाने की अमरीकी योजना को निरस्त कर दिया है। उन्होंने कहा कि यदि हम यह मान लें कि कोई देश या सूपर पावर यह फैसला करे कि किसी देश का लीडर कौन हो, तो उसका अर्थ होगा कि इस दुन्या में स्वतंत्रता नहीं है। यासिर अरफ़ात ने शिक्षा टेलीविज़न को बताया है कि वह फ़िलिस्तीन के जनवरी में होने वाले मतदान में उम्मीदवार होंगे।

● चेचेन्या के लोगों से संबंधित एक वेबसाइट डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डाट आईसीएचई आरआईए डाट ओआरजी के अनुसार चेचेन्या और रूस का संघर्ष लगभग तीन सौ वर्ष पुराना है। वर्ष १८६४ में रूस के तत्कालीन शासक ने चेचेन्या पर कब्जा करने में सफलता पायी थी और तभी से दोनों देशों के बीच लगातार संघर्ष होता रहा है। चेचेन मूलरूप से उत्तरी काकेसस के निवासी हैं। वे काकेसिक भाषा बोलते हैं जो स्लाविक, तुर्की और फारसी भाषा से बिल्कुल अलग हैं। उत्तरी कोकसस में चेचेन्या के लोग हजारों वर्षों से रहते आये हैं।

चेचेन्या के लोग मुख्यरूप से निर्भीक, साहसी और लोकतंत्रवादी होते हैं। रूस के एक कवि लेरमोंटोव ने १८३२ में चेचेन्या के लोगों के सम्बन्ध में लिखा था आजादी उनका ईश्वर है, युद्ध उनका भगवान है।' सतरहवीं सदी से लेकर उन्नीसवीं सदी के मध्य तक चेचेन्या के कबीलाई लोग इस्लाम धर्म के सुन्नी संप्रदाय में परिवर्तित होते गये, लेकिन इसके साथ ही वे अपनी सूफी परंपरा और अपने देश को विदेशी आक्रांताओं से मुक्त कराने में भी जुटे रहे। रूस के शासन से पहले इस क्षेत्र पर ईरानियों तथा अन्य लोगों का आधिपत्य रहा है।

चेचेन समाज में इस्लाम धर्म का महत्वपूर्ण स्थान है हालांकि ये लोग अपनी परंपराओं और सामाजिक राजनीतिक परंपराओं से गहरे जुड़े हैं। चेचेन्या का कुल क्षेत्रफल लगभग छह हजार वर्ग किलोमीटर है। इसकी सीमाएं इंगुश गणतंत्र, जार्जिया, देगास्तान और ओस्सेतिन गणतंत्र से मिलती है। वर्ष १९८९ की जनगणना के अनुसार चेचेन्या की कुल आबादी दस लाख ८४ हजार थी।

● सऊदी अरब ने अपने देश में १५ करोड़ डालर मूल्य का इस्राइली उत्पाद निर्यात करने के आरोप में पिछले दस महीनों के दौरान करीब २०० विदेशी कंपनियों पर प्रतिबंध लगाया है।

सऊदी अरब वाणिज्य चैम्बर के काउंसलर अहमद अल क्यूदा ने बताया कि खनिज तेल सम्पन्न इस देश के बाजार में उत्पादों के निर्यात के लिए कंपनियों ने इस्राइल निर्मित फर्जी प्रमाणपत्र हासिल किया।

इन कंपनियों में ज्यादातर जार्डन और साइप्रस की हैं। अल क्यूदा ने कहा कि ये कंपनियां जिसमें जार्डन की ७२, साइप्रस की ७०, मिस्र की २३, और तुर्की की ११ हैं। अब कभी सऊदी अरब में व्यापार नहीं कर सकेंगी। जिन अन्य कंपनियों पर प्रतिबंध लगाया गया है वे अमरीका, ब्रिटेन, सिंगापुर, थाईलैंड, पुर्तगाल और पोलैंड की हैं।

उन्होंने किसी प्रतिबंधित कंपनी का नाम नहीं बताया और न ही कालीसूची में शामिल कंपनियों की कुल सही संख्या बतायी। अल क्यूदा ने कहा कि सऊदी अधिकारियों ने कंपनियों द्वारा निर्यात किये गये इस्राइली उत्पादों की जांच की जिसमें सब्जियां बीज, मोबाइल फोन और अन्य इलेक्ट्रनिक उपकरण शामिल हैं।

उन्होंने कहा कि पिछले दस मीहनों के दौरान ३० करोड़ डालर मूल्य के इस्राइली सामान खाड़ी के देशों को निर्यात किये गये और इसका करीब आधा सऊदी अरब में आया।

सऊदी अरब, लीग के बहिष्कार के आधार पर इस्राइल कंपनियों का बहिष्कार करता है।